हम और हमारे ग्रह

चन्द्र
शुक्र
सूर्य
मंगल
बुध
गुरु
केतु
राहु
शनि

नित्यकर्म

देवमन्दिर का पुजारी भगवान की पूजा तो पूरे विधि-विधान से करता, किन्तु सुबह-शाम पूजा करने के बाद बचे समय में वह स्वार्थ के वशीभूत हो, ऐसे कुकर्म करता, जिससे भगवान के बनाये अन्य प्राणी दु:ख पाते। उसके अंत:करण से एक दिन भगवान बोले– अरे मूर्ख सेवा कर, मेरी पूजा के बाद सेवा की इच्छा न हो तो पूजा व्यर्थ है। पुजारी ने कहा– भगवान मेरा मन तो आपकी पूजा में लगता है। लोगों की सेवा में नहीं। भीतर से आवाज आयी–तू पागल है। क्या मैं पत्थर की मूर्ति में ही हूँ। इन जीते-जागते प्राणियों में तुझे मेरा रूप नहीं दिखता। पुजारी को सच्चा ज्ञान हुआ कि सेवा ही पूजा की कसौटी है। यदि उपासना करने के पश्चात भी लोक सेवा की भूख न जागे तो समझना चाहिये कि कहीं-न-कहीं भूल है। अपने आप को इस कसौटी पर कसने पर वह खरा न उतरा और उसने आगे से लोक सेवा को अपने नित्यकर्म में सम्मिलित कर लिया।

KEDARMAL JUGALKISHORE CHARITABLE TRUST

29, GANESH CHANDRA AVENUE
4th Floor, Suite No. 402
KOLKATA - 700 013 (INDIA)

Phone : 2236-4604, 40031148
Fax : 2211-9199

कायाकल्प

ठाकुर रामकृष्ण देव के चरितामृतों द्वारा उनकी लीला को घर-घर पहुंचाने वाले मास्टर महाशय (महेन्द्रनाथ) दक्षिणेश्वर के समीपस्थ जंगल मार्ग से गंगा में डूबने पहुँचे। तब तक वे रामकृष्णदेव के सम्पर्क में नहीं आये थे। उन्हें जीवन बोझ लगने लगा था। पत्नी मानसिक रूप से विक्षिप्त थी। नौकरी में भी समस्या थी। सोचा, गंगाजी में डूबकर आत्म हत्या कर लेते हैं। किसी ने पूछा कि रामकृष्ण परमहंस से मिलने जा रहे हैं क्या? उन्होंने उनके बारे में पूछा और सोचा, पहले उनके दर्शन कर लेते हैं। तब दक्षिणेश्वर आज की सघन बस्ती में नहीं, जंगल में था। ठाकुर ने देखा, हँसे और बोले– 'तू मरने जा रहा था। समस्याएं जायेंगी नहीं। अपनी छाती पर हाथ रखकर बोले– 'इसके अन्दर तो परमात्मा है, उसकी तो सोच। चिन्ता मत करो। सब ठीक हो जायेगा।" मास्टर महाशय का मानो कायाकल्प हो गया। परिवर्तन हो गया। परिस्थितियाँ बदलीं। वे गुरु का ही ध्यान करते और वे जो करते, बोलते वह सब लिखते जाते, वही बाद में रामकृष्ण वचनामृत, कथामृत, लीलामृत के रूप में प्रकट हुआ। आधे से अधिक रामकृष्ण परमहंस के शिष्य उनके पढ़ाये छात्र थे, जिन्हें उन्होंने ठाकुर के बारे में बताया था। लोग उन्हें लड़का भगाने वाला मास्टर कहते थे। ब्रह्मानंद, सारदानन्द, रामकृष्णानंद आदि सब उनके ही पढ़ाये बालक थे। एक धारणा हो, सही हो, तो उसी पर ध्यान केन्द्रित कर जीवन बदला जा सकता है। यह जीवन आत्मघात के लिए नहीं है।

हम और हमारे ग्रह

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं नाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभेवसाराः परकथाः
सतां कनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्।।

—भर्तृहरि नीति

दान को गुप्त रखना, घर आये का सत्कार करना, दूसरे का भला करके चुप रहना, दूसरों के लिए किये गये उपकार को सबके सामने न कहना, धनी होकर गर्व न करना, पराई बात निन्दा-रहित कहना— ये उत्तम गुण महान पुरुषों के स्वभाव में ही होते हैं।

मनीषिका

शोध-संस्कृति-संस्कार-सेवा संस्थान

४३, कैलाश बोस स्ट्रीट, कोलकाता - ७०० ००६

दूरभाष : २३६०-५२९१, ९८३१६१२७२३

सुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढ्यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुर-लोकवासी पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी।।

–अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनाढ्य होता है, और धन के प्रभाव से पुण्य करता है, एवं पुण्य के प्रभाव से सुरलोकवासी होता है और उसके बाद फिर से धनाढ्य और फिर सभी गुणों को भोगनेवाला होता है।

हम और हमारे ग्रह

मूल चिन्तन

श्री पुष्करलाल केडिया

सम्पादक

श्री अरुणप्रकाश अवस्थी

स्मारिका – २००७

मनीषिका द्वारा प्रकाशित एवं एम०एम० इन्टरप्राइजेज ८, ब्रजदुलाल स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००६ द्वारा मुद्रित

हम और हमारे ग्रह

भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं आधुनिक विज्ञान के अनुसार ग्रहों की संख्या ९ है। ७ मुख्य ग्रह एवं २ ग्रह राहू-केतु हैं। इन्हीं ७ ग्रहों के नामानुसार सप्ताह के ७ दिनों का नामकरण किया गया है। इसी ७ दिवसीय चक्र में मनुष्य भी चक्कर काटता रहता है।

प्राणीमात्र की उत्पत्ति का आधार हमारे सभी ग्रह हैं। ग्रहों का हमारे जीवन पर विशेष प्रभाव है। हर व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक-आत्मिक-पारिवारिक शान्ति के साथ-साथ समृद्धि एवं निरोगता भी चाहता है। इसीलिये वह हर समय ग्रहों की शान्ति चाहता है। ग्रह शान्त रहने से मनुष्य अपने जीवन में सब कुछ पा सकता है। ग्रह शान्ति के लिये यज्ञ-हवन-पूजा-पाठ तो कराये ही जाते हैं साथ-साथ रत्न एवं जड़ी-बूटी आदि धारण करके भी ग्रह शान्ति का प्रयत्न किया जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी ७ दिनों के ७ ग्रह अपने रंगों के अनुसार मनुष्य पर अपना प्रभाव डालते हैं और उन्हें व्यवस्थित रखने के लिये ही विभिन्न रत्नों एवं जड़ी-बूटियों का सहारा लेना पड़ता है। स्मारिका में इन सब विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मनीषिका द्वारा पूर्व में प्रकाशित स्मारिकाओं यथा 'जीवन दर्पण' में भगवान श्री गणेश, 'आत्म चेतना' में शक्तिदायिनी माँ दुर्गा, 'ॐ शान्ति ग्रन्थ' में कालजयी शिव, 'ऋिद्धि-सिद्धि ग्रन्थ' में महादेवी लक्ष्मी तथा 'जीवन धर्म एवं विज्ञान' में विज्ञान सम्मत धर्म कितना मानव कल्याणकारी है, इन विषयों पर प्रकाश डाला गया था।

इस वर्ष प्रस्तुत यह स्मारिका 'हम और हमारे ग्रह' आपको कैसी लगी, अभिमत जानकर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

आपकी सम्मति एवं सुझाव सहर्ष सादर आमन्त्रित हैं।

हम और हमारे ग्रह

विषय सूची
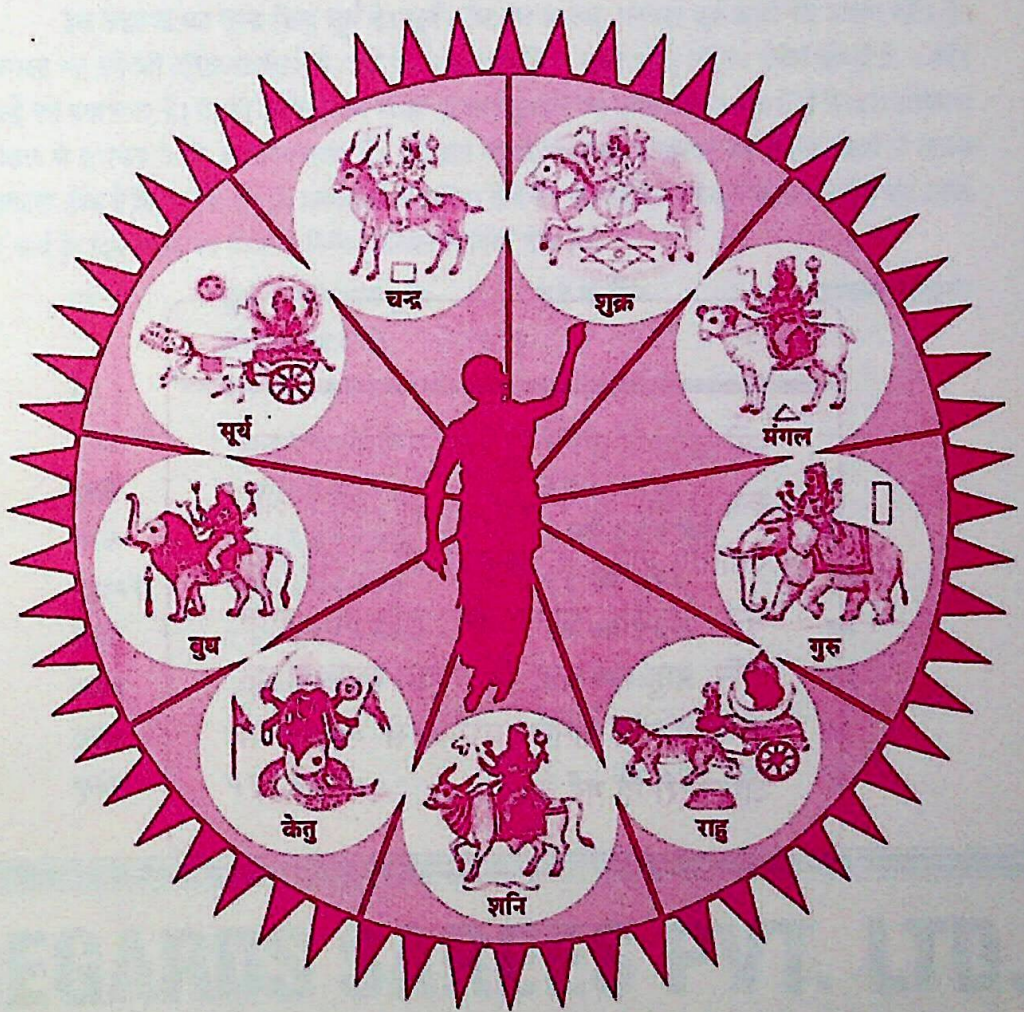
ग्रह

ग्रह

सारे ब्रह्माण्ड का केन्द्र बिन्दु सूर्य है। सामान्य रूप से ग्रहों की संख्या ९ मानी गयी है और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी ९ ग्रह यथा सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि, राहु एवं केतु हैं। प्रस्तुत खण्ड में इन ९ ग्रहों एवं उनके प्रभाव से सम्बन्धित जानकारी दी गई है।

ग्रह

सामान्य जानकारी एवं प्रभाव

इस ब्रह्माण्ड का केन्द्र बिन्दु सूर्य है। सूर्य सृष्टि का आत्मा, प्रकाश एवं ऊर्जा का अक्षय स्रोत है। समस्त ग्रह उसे की परिक्रमा करते हैं। ग्रहों की संख्या यद्यपि ९ मानी गई है लेकिन नवीन खोजों से २ और ग्रहों का पता चला है। यद्यपि उनके विषय में जो भी ज्ञात हुआ है वह अभी प्रथम चरण में ही है। इस आकाश मंडल में लगभग ३ से ४ अरब नक्षत्र हैं। ग्रहों एवं नक्षत्रों में साधारण अन्तर यह है कि नक्षत्रों में अपना प्रकाश होता है किन्तु ग्रह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। नौ ग्रहों के नाम सूर्य से उनकी दूरी एवं उनके १ वर्ष के दिन आदि का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

ग्रह	सूर्य से औसतन दूरी (किलोमीटर में)	वर्ष के दिन	उपग्रह (चन्द्रमा)
बुध	५७९१००००	८८	–
शुक्र	१०८२०००००	२२५	–
पृथ्वी	१४९६०००००	३६५ १/४	१
मंगल	२२७९४००००	१ वर्ष ३२२ दिन	२
बृहस्पति	७७८३३००००	११ वर्ष ३१५	१७
शनि	१४२६९८००००	२९ वर्ष १६७	३०
अरुण	२८७०९९००००	८४ वर्ष ७ दिन	२१
वरुण	४४९७०७००००	१६४ वर्ष २८४ दिन	८
कुबेर	५९१३५२००००	२४८ वर्ष २३० दिन	१

ग्रह

सामान्य जानकारी एवं प्रभाव

ये ग्रह नं० ३ में दिए गये समय में सूर्य का एक चक्कर लगाते हैं अर्थात् पृथ्वी ३६५ दिन में। अत: हमारा १ वर्ष ३६५ दिन का होता है पर शनि का एक वर्ष पृथ्वी के २९ वर्षों एवं १६७ दिनों के बराबर होता है। किन्तु ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ९ ग्रहों के नाम सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु हैं। पृथ्वी पर प्रभाव की दृष्टि से सूर्य एवं चन्द्रमा को भी माना गया है। सूर्य के आधार पर ही मनुष्य का स्वभाव बनता है।

अन्य ग्रहों की उत्पत्ति : सृष्टि के प्रारम्भ में एक विशाल गैस पुंज महाशून्य में वेग से चक्कर काट रहा था। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि उत्पत्ति का अत्यन्त गम्भीर आख्यान है। उसी गैस पुंज से सूर्य परिवार का जन्म हुआ और उन्हीं ९ टुकड़ों से ये ग्रह बने। धीरे-धीरे गैस ठोस रूप धारण करने लगी। पंच तत्व बने। आकर्षण शक्ति के कारण ये ग्रह सूर्य के चतुर्दिक परिभ्रमण करने लगे। इन्हीं ग्रहों से उपग्रह (चन्द्रमा) बने जो अपने जन्मदाता ग्रहों का परिभ्रमण करने लगे।

चन्द्रमा : यह पृथ्वी का उपग्रह है। पृथ्वी से इसकी दूरी लगभग ३ लाख ८४ हजार किलोमीटर है। पृथ्वी के सर्वाधिक निकट होने से यह मनुष्यों को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

मंगल : यह पृथ्वी का निकटतम पड़ोसी है। पृथ्वी से यह ५ करोड़ ४५ लाख कि०मी० दूर है। यह धैर्य, उत्साह एवं साहस का परिचायक है।

ग्रह

सामान्य जानकारी एवं प्रभाव

बुध : यह सूर्य के सबसे अधिक निकट है। यह शुभ ग्रहों के साथ शुभ व अशुभ ग्रहों के साथ अशुभ फल देता है। सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है।

बृहस्पति : यह सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। ज्ञान, विज्ञान, वाहन आदि का स्वामी होने के कारण इसे वृहत्पद (अर्थात् बृहस्पति) के विशेषण से जाना जाता है।

शुक्र : यह सौर मण्डल का सबसे चमकीला ग्रह है। यह पृथ्वी का निकटतम पड़ोसी है। कलाओं, काम शक्ति, काव्य, सौन्दर्य का स्वामी है।

शनि : क्रूर ग्रह होते हुए भी यह सबसे अधिक खूबसूरत ग्रह है। इसके चारों ओर ७ प्रकाशमान छल्ले हैं। आयु, जीवन, मृत्यु, विपत्ति, मोक्ष, उच्च शिक्षा, उदारता, रोग आदि का विचार शनि से किया जाता है।

राहु : यह छाया ग्रह है। यह जन्मपत्री में जिस स्थान पर बैठता है उसी की प्रगति रोकता है। यह मद का अधिष्ठाता है।

केतु : यह दृष्टि विहीन है। हाथ, पैर, पेट व चर्मरोगों का विचार इसी से किया जाता है।

नवीन ग्रह : इन ग्रहों के अतिरिक्त सन् १७०१ में तीन ग्रहों अरुण, वरुण तथा १९३० में यम या कुबेर की खोज की गई है। इसके अलावा भी नवीन ग्रहों की खोज जारी है।

मनीषिका

सात दिनों का रहस्य एवं ब्रह्माण्ड

सात दिनों का रहस्य एवं ब्रह्माण्ड

आधुनिक विज्ञान एवं ज्योतिषशास्त्र के मुताबिक ९ ग्रह माने गए हैं, जिनमें ७ ग्रह मुख्य हैं। इन्हीं ७ मुख्य ग्रहों के नाम पर सप्ताह के ७ दिनों का नामकरण हुआ है। वैज्ञानिकों ने पृथ्वी को भी ग्रह के रूप में मान्यता दी है पर हमारा भारतीय ज्योतिष विज्ञान पृथ्वी को ग्रह नहीं मानता क्योंकि हम उस पर निवास करते हैं। इन्हीं तथ्यों पर इस खण्ड में प्रकाश डाला गया है।

सात दिनों का रहस्य एवं ब्रह्माण्ड

ब्रह्माण्ड रहस्य

भारतीय ज्योतिष एवं आधुनिक विज्ञान के अनुसार ९ ग्रह माने गए हैं। इनमें ७ ग्रह मुख्य हैं। शेष दो राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इन्हीं सात प्रमुख ग्रहों के नाम पर सप्ताह के सातों दिनों का नामकरण किया गया है। रवि के नाम पर रविवार, चन्द्र के नाम पर चन्द्र या सोमवार, मंगल के नाम पर मंगलवार, बुध के नाम पर बुधवार, बृहस्पति के नाम पर बृहस्पतिवार, शुक्र के नाम पर शुक्रवार एवं शनि के नाम पर शनिवार रखे गए हैं।

चन्द्रमा यद्यपि पृथ्वी का ही एक भाग था जो टूटकर अलग हो गया है। उसे पृथ्वी का भाँई माना गया है। पृथ्वी को हम माँ कहते हैं। इसीलिए चन्द्रमा को चन्दामामा कहते हैं। वह पृथ्वी के सर्वाधिक निकट (लगभग २ लाख ३९ हजार मील) है अत: उसका प्रभाव पृथ्वी पर सबसे अधिक पड़ता है। विज्ञानियों ने पृथ्वी को ग्रह माना है पर भारतीय ज्योतिष विज्ञान में उसे ग्रह इसलिए नहीं माना गया है क्योंकि हम उस पर रहते हैं। अन्य ग्रह वालों के लिए वह ग्रह हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि कुछ लोग मंगल ग्रह पर रहने लगे तो उनके लिए मंगल भी ग्रह नहीं रहेगा।

इसका एक और वैज्ञानिक कारण है। इन ग्रहों से जो भी ऊर्जा या शक्ति पृथ्वी पर आती है वह सीधे न आकर पृथ्वी से परावर्तित होकर अपना प्रभाव डालती है। इसे रेडियेशन कहते हैं। उदाहरण के लिए सूर्य की किरणें पहले पृथ्वी के धरातल को तप्त करती है और फिर यही ताप ऊपर की ओर बढ़ता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है उसका प्रभाव कम हो जाता है। इसी कारण मैदानों की अपेक्षा पर्वत शिखर सूर्य से अधिक निकट है पर चोटियों पर बर्फ जमी रहती है।

सात दिनों का रहस्य एवं ब्रह्माण्ड

ब्रह्माण्ड रहस्य : हस्त स्पर्श

प्रत्येक ग्रह से अलग-अलग प्रभाव डालने वाली ऊर्जा पृथ्वी पर आती है। उसका प्रभाव पृथ्वी के जीव धारियों, वनस्पतियों, जल एवं वायु पर पड़ता है। किस ग्रह से किस दिन विशेष प्रकार की ऊर्जा प्राप्त होती है वह मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती है। वही ऊर्जा हमें सफलता-असफलता, स्वास्थ्य-रोग, वैभव-विपन्नता एवं शांति-अशांति देती है। यदि हम विशेष दिन पर दिन के स्वामी उस ग्रह का सम्यक ज्ञान रखते हैं तो हमारा जीवन सफल हो जाता है। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता है। यही वैज्ञानिक, ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक रहस्य यहाँ व्यक्त किया गया है।

हमारे ऋषि मुनियों ने अपने अपूर्व ज्ञान एवं चिन्तन से यह सिद्ध किया है कि सप्ताह के विशेष दिन में विशेष ग्रह का प्रभाव सर्वाधिक होता है। इसी प्रभाव के कारण विशेष दिन का नामकरण विशेष ग्रह के नाम से किया गया है। यह अब विज्ञान सम्मत भी हो चुका है। लेकिन हमारे महान ज्योतिषाचार्यों को यह भी ज्ञात था कि हमारे करतल (हथेली) में सभी ग्रहों का निवास है। करतल पर स्थित ग्रहों की यह विशेषता है कि उनसे नकारात्मक शक्तियां नहीं उत्पन्न होती है। इसीलिए हमारे यहाँ किसी के सिर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद देने का विधान है। हस्त स्पर्श क्रिया से चुम्बकीय शक्ति उत्पन्न होती है। करतलों के परस्पर घर्षण से सूर्य तत्व जाग्रत होकर नेत्र विकार तथा मानसिक शिथिलता दूर करता है। चन्द्र मन की भावनाओं को सुमार्ग की ओर ले जाता है। मंगल हमारे क्रोध को नियंत्रित करता है, बुध हमारी कल्पना शक्ति को प्रखर करता है, बृहस्पति हमारे ज्ञान का वर्धन करता है, शुक्र वैभव प्रदान है और शनि आपदाओं से हमारी रक्षा करता है।

सात दिनों का रहस्य एवं ब्रह्माण्ड

ब्रह्माण्ड रहस्य : हस्त स्पर्श

वेद का आदेश है कि दोनों करतलों को परस्पर रगड़कर चेहरे एवं शरीर के रोगग्रस्त अंगों पर दिन में ३-४ बार फेरना चाहिये। घर्षण करते समय यह मंत्र श्रद्धा पूर्वक जपना चाहिये।

अयं में हस्तो भगवा, नयं में भवतरः।
अयं में विश्व भेषजो, यं शिवाभिमशनिः।।

अर्थात् मेरी हथेली साक्षात् (भगवान) ऐश्वर्यशाली है, अच्छा प्रभाव डालने वाली है, अधिकाधिक ऐश्वर्यशाली और कल्याणकारी है, मेरे हाथ में विश्व के सभी रोगों की औषधियां हैं और हाथ का स्पर्श कल्याणकारी, सर्वरोग निवारक और सौन्दर्य का दाता है।

हमारे कर्म हाथ से ही सम्पादित होते हैं। अत: प्रभात में कर दर्शन का अत्यन्त गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। कर दर्शन के समय निम्नांकित मंत्र पढ़ना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तु गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम्।।

इससे स्वावलम्बन की भावना जाग्रत होती है।
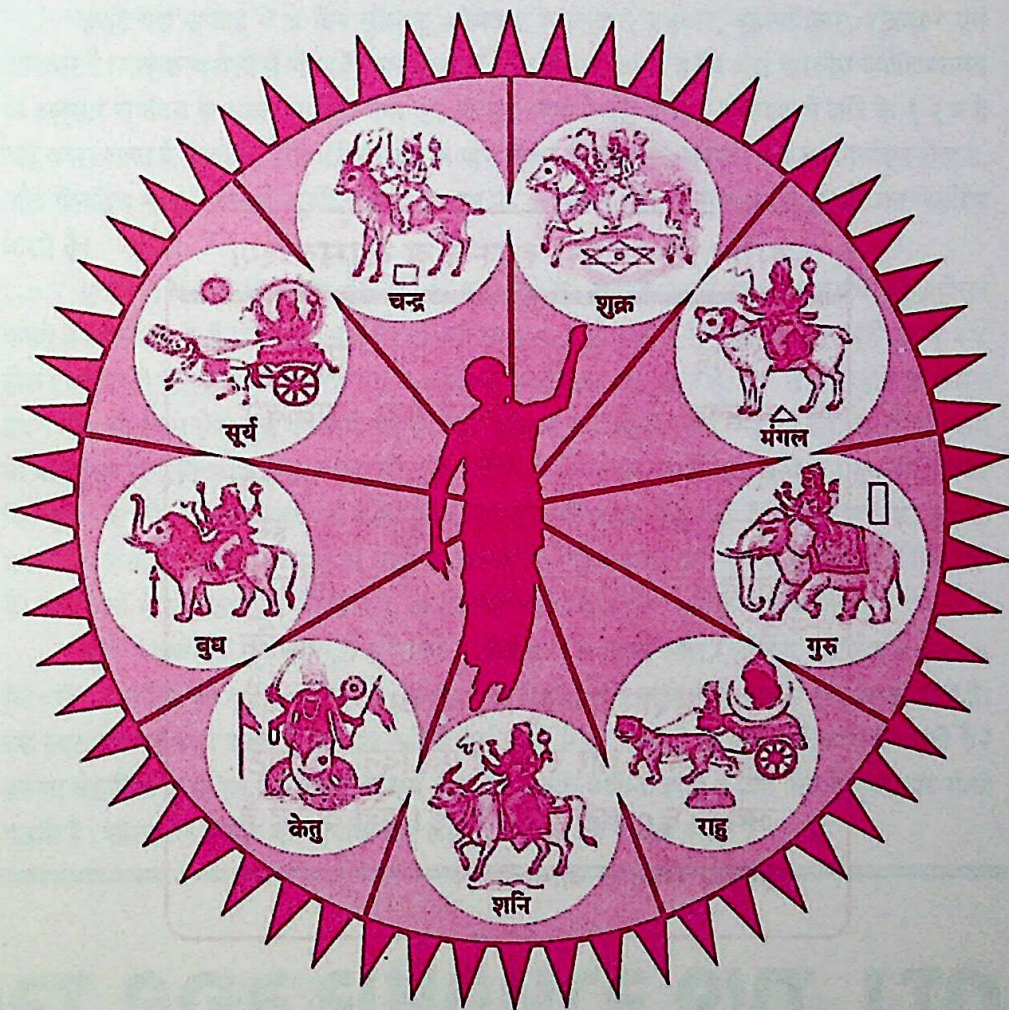
सात दिनों का रहस्य व नामकरण

सात दिनों का रहस्य व नामकरण

सप्ताह के ७ दिनों यथा रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार एवं शनिवार को ७ ग्रहों के आधार पर क्रमबद्ध किया गया है। पाश्चात्य देशों में भी इसी तरह उन्हें क्रम दिया गया है किन्तु वहाँ रात्रि के १२ बजे वार बदल जाता है जबकि भारतीय शास्त्रों में सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक एक ही वार रहता है एवं दिन २४ घंटों अथवा ६० घटी का होता है। यहाँ दी गई है इसकी संक्षिप्त जानकारी।

सात दिनों का रहस्य व नामकरण
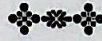
एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

हमारे यहां सप्ताह में ७ दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार एवं शनिवार है। पाश्चात्य देशों में भी यही क्रम हैं। दोनों में केवल यह अंतर है कि जहां भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक एक ही वार रहता है वहीं अंग्रेजी व्यवस्था में रात्रि के १२ बजे वार बदल जाता है, इसका कारण है कि लंदन के पास स्थित ग्रीनह्विच के अनुसार वार का निर्धारण होता है, और ग्रीनह्विच में १२ बजे ही सूर्योदय होता है। इस पर पाश्चात्य देश भी सूर्योदय से ही वार का निर्धारण करते हैं।

एक दिन (वार) की अवधि २४ घंटे या ६० घटी की होती है। हमारे यहां इस अवधि को अहोरात्र कहते हैं। अहोरात्र से ही होरा शब्द बना है। अंग्रेजी का hour भी इसी से निकला है। एक अहोरात्र में २४ होरा (या घण्टे) होते हैं। इसमें प्रत्येक होरा का स्वामी (यही सात ग्रह) होता है। सूर्य से जन्म होने के कारण प्रथम दिन की प्रथम होरा सूर्य की मानी गई है। फिर क्रम से बारी-बारी अन्य ग्रहों की होरा मानी गई। रवि के बाद दूसरे दिन की प्रथम होरा चन्द्रमा की, तीसरे दिन की प्रथम होरा मंगल की, चौथे दिन बुध की, पांचवे दिन बृहस्पति की, छठे दिन शुक्र की और सातवें दिन शनि की प्रथम होरा होती है। जिस दिन जिस ग्रह की प्रथम होरा होती है, उस ग्रह के नाम पर दिनों का नामकरण किया गया। इसी कारण सप्ताह में ७ दिन होते हैं। सात दिनों में यह चक्र पूर्ण हो जाता है, आठवें दिन प्रथम होरा पुनः सूर्य की आ जाती है।

सूर्य : पृथ्वी से सूर्य की दूरी औसतन ९ करोड़ ३० लाख मील (लगभग १४९६००००० कि०मी०) गर्मी में यह दूरी ९ करोड़ ४५ लाख मील होती है तथा जाड़े में ९ करोड़ १५ लाख होती है। इस स्थल पर यह प्रश्न उठता है कि जब गर्मी में सूर्य पृथ्वी से दूर रहता है तो गर्मी अधिक क्यों पड़ती है? इसका वैज्ञानिक उत्तर यह है कि गर्मी में सूर्य-ताप की अवधि अधिक होती है तथा किरणें पृथ्वी पर सीधी पड़ती है। शीतकाल में दिन की अवधि कम होती है तथा किरणें तिरछी पड़ती है।

सात दिनों का रहस्य व नामकरण

पृथ्वी से ग्रहों की दूरी एवं उनका आहार

सूर्य का आकार पृथ्वी से लगभग १३ लाख गुना बड़ा है। सूर्य से जो ऊर्जा पृथ्वी पर आती है उसका एक अरबवां भाग ही पृथ्वी पर पहुँच पाता है। शेष अपार ऊर्जा वायुमंडल, ओजोन पर्त, बादलों व धूलकणों से टकराकर वापस हो जाती है।

चन्द्रमा : चन्द्रमा पृथ्वी का ही एक टुकड़ा है जो अतीत में पृथ्वी से अलग हो गया था। यह पृथ्वी से लगभग २.३९ हजार मील की दूरी पर है और पृथ्वी के सबसे निकट होने के कारण इसका प्रभाव भी पृथ्वी पर सर्वाधिक पड़ता है। ज्वार-भाटा इसी की आकर्षण शक्ति के कारण उत्पन्न होते हैं।

बुध : यह सूर्य के सबसे निकट ५७९१०००० कि०मी० की दूरी पर स्थित हैं। यह अत्यधिक गर्म है। यह ८८ दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है। इसका एक वर्ष पृथ्वी के ८८ दिनों के बराबर होता है।

शुक्र : यह चमकीला ग्रह सूर्य से लगभग १,०८२०००० कि०मी० दूर स्थित है। इस ग्रह को सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने में २२५ दिन लगते हैं।

मंगल : यह सूर्य से लगभग २२७९४०००० किलो मीटर की दूरी पर है। यह एक वर्ष ३२२ दिनों में सूर्य की परिक्रमा पूरी करता है। इसका एक वर्ष पृथ्वी के एक वर्ष ३२२ दिनों के बराबर होता है।

बृहस्पति : यह ग्रह सूर्य की एक परिक्रमा ४२३० दिनों में पूरी करता है। इसका एक वर्ष पृथ्वी के ११ वर्ष ३१५ दिनों का होता है।

शनि : यह सूर्य से १४३६४८०००० कि०मी० की दूरी पर है। इसे सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने में २९ वर्ष १६७ दिन लगते हैं। इसी मंद गति के कारण इसे शनैश्चर (मंद गति से चलने वाला) कहा जाता है।
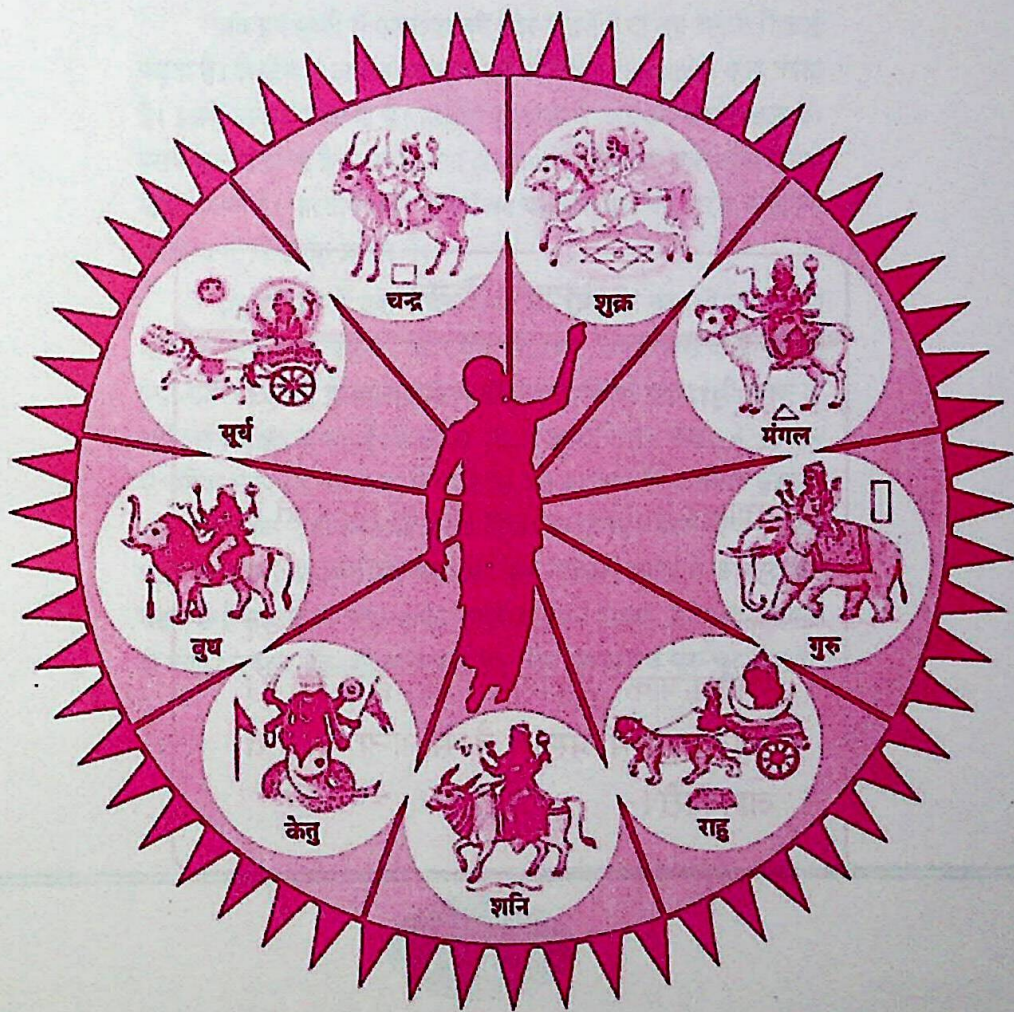
नक्षत्र परिचय

नक्षत्र परिचय

इस असीम आकाश में अनेक ब्रह्माण्ड हैं एवं प्रत्येक ब्रह्माण्ड में अनेक सौर मण्डल हैं। ब्रह्माण्ड के जिस सौर मण्डल में हम रहते हैं उसका केन्द्र बिन्दु सूर्य है। जो स्वप्रकाशमान होते हैं वे नक्षत्र कहलाते हैं और जो सूर्य का प्रकाश पाकर प्रकाशमान होते हैं वे ग्रह हैं। इस खण्ड में प्रस्तुत है सामान्य संक्षिप्त जानकारी।

नक्षत्र परिचय

ब्रह्माण्ड की विशालता

जब हम पृथ्वी से आकाश की ओर देखते हैं तो वह अनन्त दिखाई पड़ता है। असीम व अनन्त आकाश को अन्तरिक्ष (Space) कहा जाता है। इसमें अनेक ब्रह्माण्ड हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्ड में असंख्य सौरमण्डल हैं। इसमें एक ब्रह्माण्ड है आकाश गंगा (Galaxy) जिसका एक अंश हमारा सौर मण्डल है। भारतीय ऋषि मुनियों को यह ज्ञात था। महाभारत, रामायण आदि ग्रन्थों में इसके प्रमाण हैं।

इस सम्बन्ध में एक रोचक कथा है। एक बार ब्रह्माजी को गर्व हो गया कि उन्होंने इस ब्रह्माण्ड की रचना की, अत: उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसी गर्व को लेकर वे द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण से मिलने आए। श्री कृष्ण तो अखिल ब्रह्माण्ड नायक हैं। वे समझ गए। ब्रह्माजी ने एक सेवक के माध्यम से संदेश भेजा कि श्री कृष्ण से कहो कि इस ब्रह्माण्ड के रचयिता ब्रह्माजी आए हैं। सेवक ने श्रीकृष्ण को संदेश दिया। श्री कृष्ण ने उत्तर दिया– उससे पूछो कि किस ब्रह्माण्ड का ब्रह्मा है। इस निखिल सृष्टि मे १४ करोड़ ब्रह्माण्ड हैं वह अपने ब्रह्माण्ड का नम्बर बताए? सेवक ने जाकर ब्रह्माजी से कहा। सुनकर ब्रह्माजी चकित हो गए और उनका गर्व चूर-चूर हो गया।

नक्षत्र परिचय

ब्रह्माण्ड की विशालता

हमारे यहाँ चौदह करोड़ भुवन बताए गए हैं और भुवन में अनगिनत ब्रह्माण्ड हैं। यह वैज्ञानिक भी स्वीकार कर चुके हैं। जिस ब्रह्माण्ड में हम रहते हैं उसमें १० करोड़ सौर मण्डल है। इसमें हमारा सौर मण्डल भी एक है जिसका केन्द्र सूर्य है। जिनमें अपना प्रकाश होता है वे नक्षत्र कहलाते हैं और जो सूर्य के प्रकाश से बिम्बित होते हैं, वे ग्रह हैं। ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं और उपग्रह ग्रहों की परिक्रमा करते हैं। हमारे सौर मण्डल में बुध एवं शुक्र को छोड़कर सभी के उपग्रह हैं। गुरु में १४, शनि के १७, मंगल के २ एवं पृथ्वी का केवल एक उपग्रह (चन्द्रमा) है।

मनुष्य पृथ्वी पर निवास करता है। उस पर सूर्य एवं चन्द्रमा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है इसीलिए ज्योतिष में इन्हें ग्रह माना गया है। ये ग्रह एवं नक्षत्र हमसे इतनी दूर हैं कि इनकी दूरी किलोमीटर में नापना सम्भव नहीं है। अत: अंतरिक्ष दूरियां प्रकाश वर्ष में नापी जाती हैं। प्रकाश की गति एक सेकेण्ड में तीन लाख कि०मी० होती है। इस प्रकार इतनी तीव्रगति से प्रकाश एक वर्ष में जितनी दूरी नापता है उसे प्रकाश वर्ष कहा जाता है। सूर्य हमारा निकटतम नक्षत्र या तारा हैं। उसका प्रकाश पृथ्वी पर ८ मिनट १६.६ सेकेण्ड में आता है।
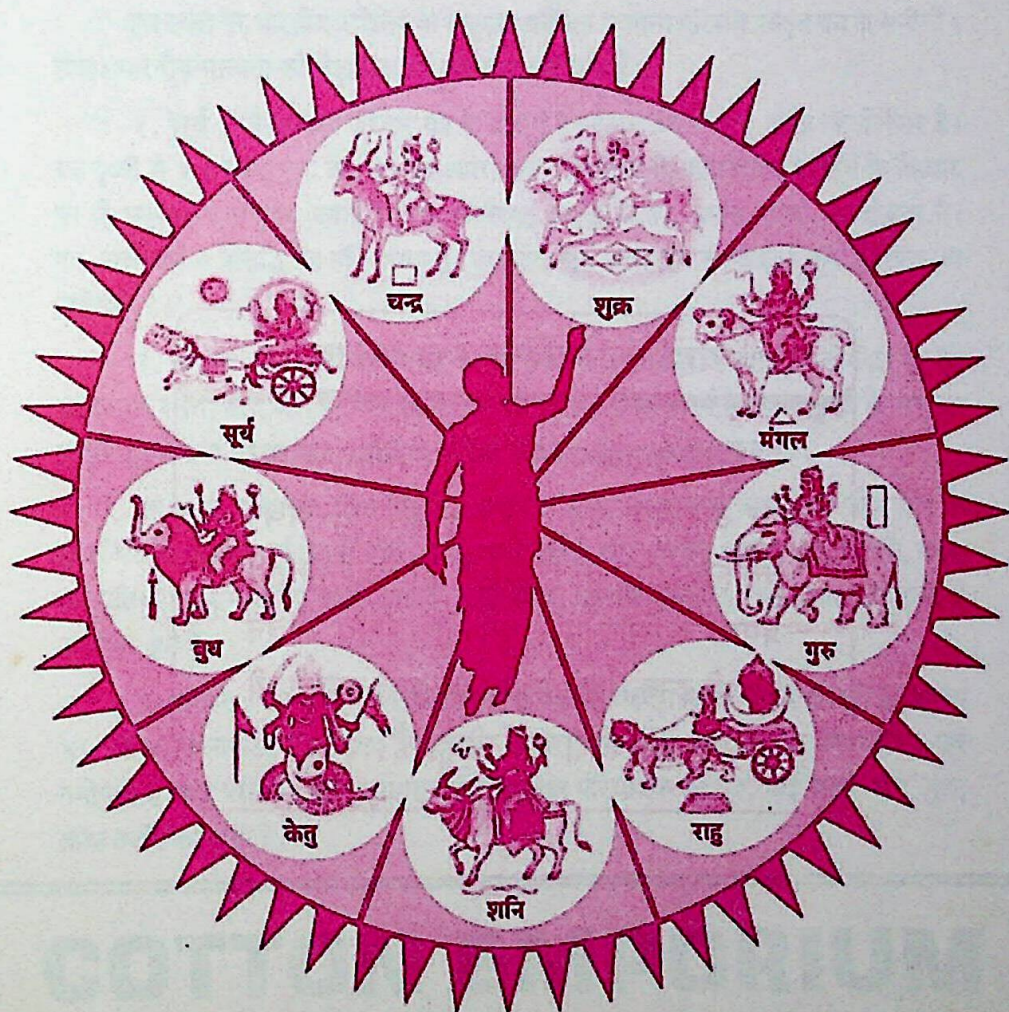
ग्रहों का परिचय व प्रभाव

ग्रहों का परिचय व प्रभाव

प्रस्तुत है इस खण्ड में भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार ग्रहों का सामान्य परिचय। ज्योतिषशास्त्र के इस तथ्य को वैज्ञानिक भी प्रमाण के साथ मान चुके हैं। मानव जीवन पर भी इनका क्या प्रभाव पड़ता है इसकी भी संक्षिप्त जानकारी यहाँ दी हुई है।

ग्रहों का परिचय व प्रभाव

ग्रह परिचय

इस स्थल पर भारतीय ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का सामान्य परिचय प्रस्तुत करना समीचीन होगा। भारतीय मान्यता को वैज्ञानिक भी स्वीकार कर चुके हैं।

१. सूर्य : सौरमण्डल परिवार का केन्द्र सूर्य है। इसका व्यास १४ लाख किलोमीटर है। यह पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है। यह आत्मा का अधिष्ठाता है, जीवनदाता है। सूर्य के आधार पर ही मनुष्य का स्वभाव बनता है। यह स्वास्थ्य, क्षमता, प्रताप, प्रगति, ऊर्जा का द्योतक है। पद, राजकार्य व प्रसिद्धि का परिचायक है। ताम्रवर्णी सूर्य ऊष्ण एवं स्वभाव से क्रूर है। पित्त का अधिपति है।

२. चन्द्रमा : यह पृथ्वी का उपग्रह है। यह पृथ्वी से ३ लाख ८४ हजार किलोमीटर दूर है। इसका रंग श्वेत, तत्व जल है, तथा प्रकृति नम शीतल एवं कफ प्रधान है। यह मनुष्यों के मन का स्वामी है। चन्द्रमा मनसो जात:। इसी से अंग्रेजी में Monday Moon बना है।

यह हमारे मस्तिष्क, चित्त प्रकृत्ति, मानसिक रोगों, कफ जन्य बीमारियों, उदर रोग से सम्बन्धित है। इसके कार्य क्षेत्र में चाँदी, गन्ध, तरल पदार्थ, क्षार, कपास, कपूर, दूध, मछली, जल, वनस्पतियां एवं समस्त पेय पदार्थ आते हैं। माता-पिता, सम्पत्ति-प्रसन्नता, राज-कृपा आदि इसी से प्रभावित होते हैं।

३. मंगल : यह पृथ्वी का निकटतम बाह्य पड़ोसी ग्रह है। पृथ्वी से इसकी दूरी ५ करोड़ ४५ लाख किलोमीटर है। इसका रंग अंगारे या रक्त की तरह लाल है। यह पित्त प्रधान एवं तमोगुणी है। यह पराक्रम, धैर्य, उत्साह एवं साहस का परिचायक है। पुत्र, भाई-बहन, रोग, गुण, क्रोध आदि का दाता है।

ग्रहों का परिचय व प्रभाव

ग्रह परिचय

४. बुध : यह सौर मण्डल का सबसे छोटा एवं सूर्य का निकटतम पड़ोसी ग्रह है। सूर्य से इसकी दूरी ५ करोड़ ७९ लाख कि०मी० है। इसका रंग हरा तथा स्वभाव रजोगुणी है। यह नाभि प्रदेश, वात पित्त एवं कफ का स्वामी है। गणित, ज्योतिष शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, शिल्प, कानून वाणिज्य का दाता है तथा गुप्तरोग, संग्रहणी, मूकता इसी से प्रभावित है।

५. गुरु (वृहस्पति) : यह सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। सूर्य से इसकी दूरी ७८ करोड़ किलोमीटर है। इसका रंग चमकदार पीला है। यह कफ चरबी का अधिपति तथा ज्ञान विज्ञान, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा, संतान, पौत्र, यज्ञ, देवता, सवारी, धर्म, विद्या, सोना एवं बुद्धि इसके क्षेत्र में आते हैं। यह मनुष्य को परोपकारी बनाता है।

६. शुक्र : यह सौरमण्डल का सबसे चमकीला ग्रह तथा वात कफ तथा काम का स्वामी है। पैर तथा वीर्य इसके अधिकार क्षेत्र में आते हैं। विवाह, गान, विद्या, कामेच्छा, पुष्प-नेत्र, वाहन, स्त्री, बुद्धि, काव्य, शारीरिक सुख, मामा, भाई, मित्र आदि इसी से प्रभावित होते हैं।

७. शनि : इसका वर्ण काला, प्रकृति तमोगुणी एवं वायु प्रधान है। इसे हानि, दुर्भाग्य एवं संकट का दाता माना जाता है। प्राचीन काल में Satan (शैतान) Satar (शातिर) के नाम से ही इसका नाम Saturn (शनि) पड़ा है। कान, दांत, अस्थियों, वातरोग आदि का दाता है। अंग्रेजी शिक्षा, आयु-जीवन-मृत्यु, शारीरिक बल उदारता सेवाभाव, विपत्ति, ऐश्वर्य, मोक्ष आदि का कारक है।
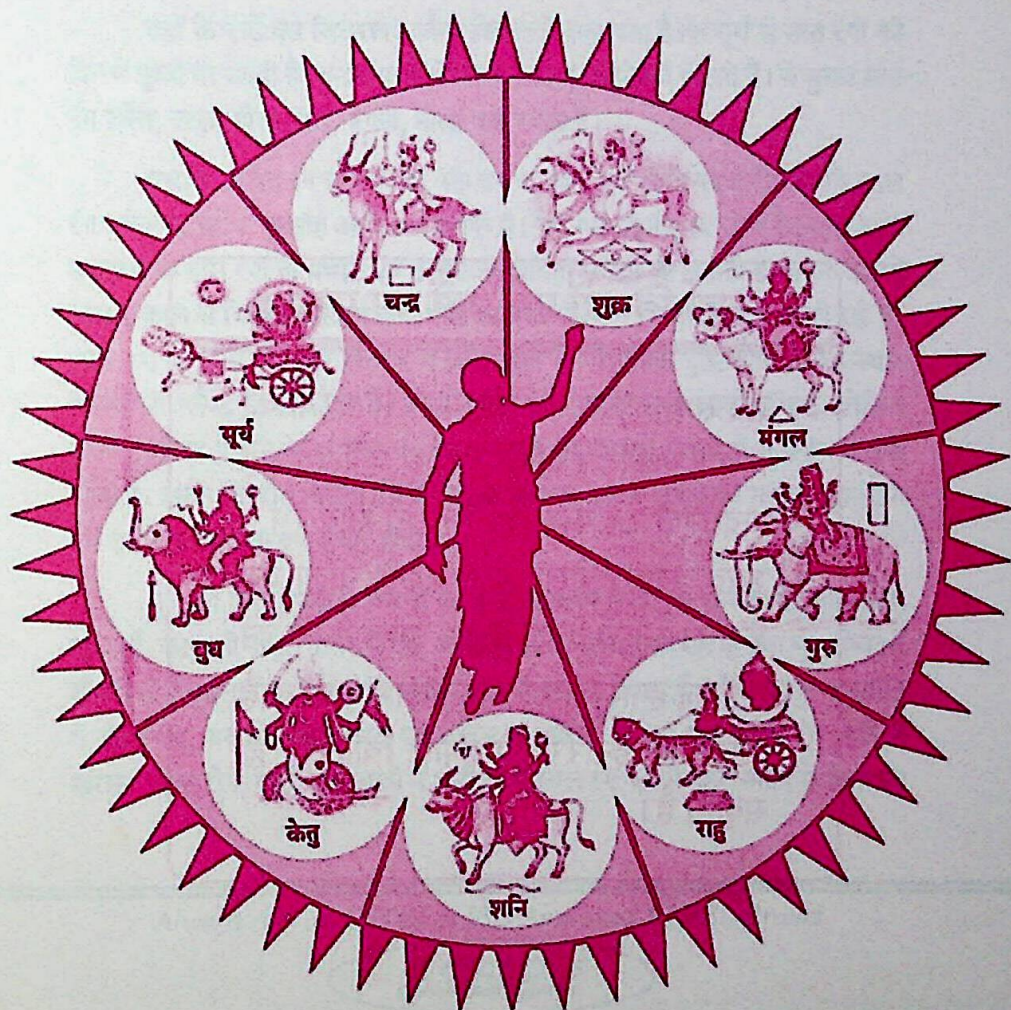
सूर्य किरणें एवं ग्रहों का प्रभाव

सूर्य किरणें एवं ग्रहों का प्रभाव

हम सभी जानते हैं कि सूर्य से सात रंगों की किरणें पृथ्वी पर आती हैं और इसीलिये इन्हें इन्द्रधनुषी रंग कहा जाता है। ये सात रंग हैं श्वेत, लाल, पीला, हरा, बैंगनी, नीला एवं श्याम। आइये देखते हैं इस खण्ड में कि इन रंगों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और कैसे इन रंगों से हमारी चिकित्सा हो सकती है।

सूर्य किरणें एवं ग्रहों का प्रभाव

रंगों का प्रभाव

ग्रहों के रंगों का विवरण : जैसा कि पहले कहा गया है कि सूर्य से सात रंगों की किरणें पृथ्वी पर आती है। इन्द्रधनुष में ये सातों रंग हमें देखने को मिलते हैं। ये मुख्य सात रंग श्वेत, लाल, पीला, हरा, बैगनी, नीला एवं श्याम है।

प्रभाव : श्वेत रंग सात्विकता, सौम्यभाव, ज्ञान, एवं शांति का प्रतीक है वही लाल रंग उत्तेजना, क्रोध, उत्साह आदि का प्रतीक है। यह गर्म प्रकृति का होता है। एक अन्य उदाहरण के द्वारा रंगों के प्रभाव एवं उनकी उपयोगिता समझी जा सकती है। हमारे देश में अनादि काल से विवाहित स्त्रियां दोनों भौंहों के मध्य में लाल रंग की बिन्दी लगाती रही हैं। लाल रंग से शरीर में रक्त संचरण में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्थान पिच्यौरिटी ग्लैण्ड से सम्बंधित है। इससे शरीर की समस्त अन्तःस्त्रावी ग्रंथियां उत्तेजित होकर विभिन्न प्रकार के हार्मोन्स का स्त्राव करती है। जिससे स्त्रियों में कमनीयता बनी रहती है। इसके विपरीत विधवा स्त्रियों के उस भाग पर चन्दन लगाने का महत्व दिया गया एवं इससे सात्विकता का संचार होता है।

सूर्य की सप्त रंगवाली किरणों का हमारे स्वास्थ्य से घनिष्ट सम्बन्ध है। साइटिका, हाथ दर्द, कान की पीड़ा, कमर में दर्द, आंतों में कीड़े, उच्च रक्तचाप में तथा मूत्र सम्बन्धी बीमारियों में काला रंग, नेत्र ज्योति, कब्ज आदि में हरा रंग, सिर दर्द एवं मानसिक अशान्ति में नीला रंग, चक्कर, खूनी दस्त एवं अपच व अजीर्ण में भूरा एवं नारंगी रंग, गले में खरास, त्वचा रोग, सर्दी, तथा छाती में भारीपन में लाल रंग, उल्टी-दस्त आदि में पीला रंग

सूर्य किरणें एवं ग्रहों का प्रभाव

रंगों का प्रभाव

अतिशय उपयोगी है। सूर्य के यही सात रंग ग्रहों को एक आभा प्रदान करते हैं और वे तथा उनसे सम्बन्धित रत्न या धातु धारण करने से हम तमाम आपदाओं से बच जाते हैं।

सूर्य तापित जल बनाने के लिए उस रंग की बोतल में तीन चौथाई भाग जल से भरकर किसी लकड़ी के ऊपर धूप में रख देनी चाहिये। गर्मी में ५-६ घण्टों एवं जाड़े में ८ घण्टों में जल तैयार हो जाता है। ध्यान रहे कि बोतल पर किसी वस्तु की छाया न पड़े। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्य अनन्त ऊर्जा का स्रोत है। वह तीनों अग्नियों यथा दावानल (जंगलों में लगने वाली आग) बड़वानल (समुद्र में लगने वाली आग) एवं जठराग्नि (पेट की आग) का जन्मदाता एवं सभी ग्रहों के प्रकाश का स्रोत है। हम आतसी शीशे से जब कागज पर सूर्य किरणों को प्रत्यावर्तित करते हैं तो वह जल उठता है।

यही सिद्धान्त रत्नों पर भी लागू होता है। विशेष ग्रह की सकारात्मक ऊर्जा वह रत्न आकृष्ट करता है और हमारे जीवन पर शुभ प्रभाव डालता है।

इसी प्रकार अष्ट धातुओं का भी अपरिहार्य महत्त्व है। हर धातु का अपना-अपना प्रभाव होता है। और वे इन ग्रहों का प्रतिनिधित्व करती है। इन धातुओं में सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, लोहा प्रमुख हैं। इनके संयोग से २ अन्य धातुएँ बनाई जाती है। इसीलिए छोटे बालकों को नकारात्मक प्रभाव से बचाने के लिए कठुला पहनाया जाता है।

सूर्य किरणें एवं ग्रहों का प्रभाव

रंगों का प्रभाव

ऐसे ही हर वनस्पति एवं रंग अपना प्रभाव रखते हैं। हर ग्रह की पूजा अलग-अलग रंग के पुष्पों से होती है। सूर्य की पूजा श्वेत कमल से, चन्द्रमा की पूजा चमेली या चांदनी के पुष्पों से, बुध की पूजा हरे रंग के फल फूलों से, शुक्र की पूजा श्वेत पुष्पों से, बृहस्पति की पूजा पीले पुष्पों से, मंगल की पूजा लाल पुष्पों से तथा शनि की पूजा नीले या काले पुष्पों से करने का विधान है।

इसी प्रकार रोग से प्रभावित स्थान को पहले रोग से सम्बन्धित रंग से चिह्नित किया जाता है। उस पर रोग के अनुसार रंग से बिन्दु बना दिये जाते हैं। यह कार्य अक्सर स्केच पेन से किया जाता है। पर अधिक प्रभावी प्राकृतिक रंगों से बिन्दु बनाना होता है। इसके लिए टेसू, गुलाब, हरी पत्तियों, मेंहदी आदि से बिन्दु बनाना चाहिये। फिर उन स्थानों पर रोग के अनुसार सम्बन्धित रंग के शीशे से सूर्य का प्रकाश डाला जाता है। यह रंग चिकित्सा अत्यन्त प्रभावशाली होती है। हमारे यहां प्राचीनकाल में यह चिकित्सा अत्यधिक प्रचलित थी। लेकिन कालान्तर में हम इसे विस्मृत कर बैठे। अब विदेशों में यह लोकप्रिय हो रही है। जहां बिन्दु बनाए जाते हैं वहीं दबाव देकर या सुई चुभोकर भी चिकित्सा की जाती है। एक्युप्रेशर एवं एक्युप्रंक्चर का मूल यही है।

मनीषिका

मनीषिका

हस्त रेखा विज्ञान

हस्त रेखा विज्ञान

'अपना हाथ जगन्नाथ' यह लोकोक्ति है अपने हाथों द्वारा किये जाने वाले कर्म के सम्बन्ध में। हमारा हाथ ही हमारे कर्म का आधार है और हमारा भाग्य, हमारा भविष्य, हमारा भूत एवं वर्तमान सभी इस हाथ में है। विश्व का सृजन एवं ध्वंस इन्हीं हाथों में है। सकारात्मक चिन्तन विश्व में सुख-शान्ति लाता है वहीं नकारात्मक चिन्तन से हम विनाश की ओर अग्रसर होते हैं। हमारी हस्त रेखाओं में हमारे सम्पूर्ण कार्य-कलाप को रेखांकित कर दिया है विधाता ने। हस्त रेखा विज्ञान के सम्बन्ध में प्रस्तुत है संक्षिप्त जानकारी।

हस्त रेखा विज्ञान

हस्त चिकित्सा : हमारी एक शाश्वत मान्यता है कि हमारा भाग्य, हमारा भविष्य आदि हमारे हाथ में है। हम सम्पूर्ण कर्मों को अपने हाथ की सहायता से करते हैं। हाथ ही कर्म का आधार
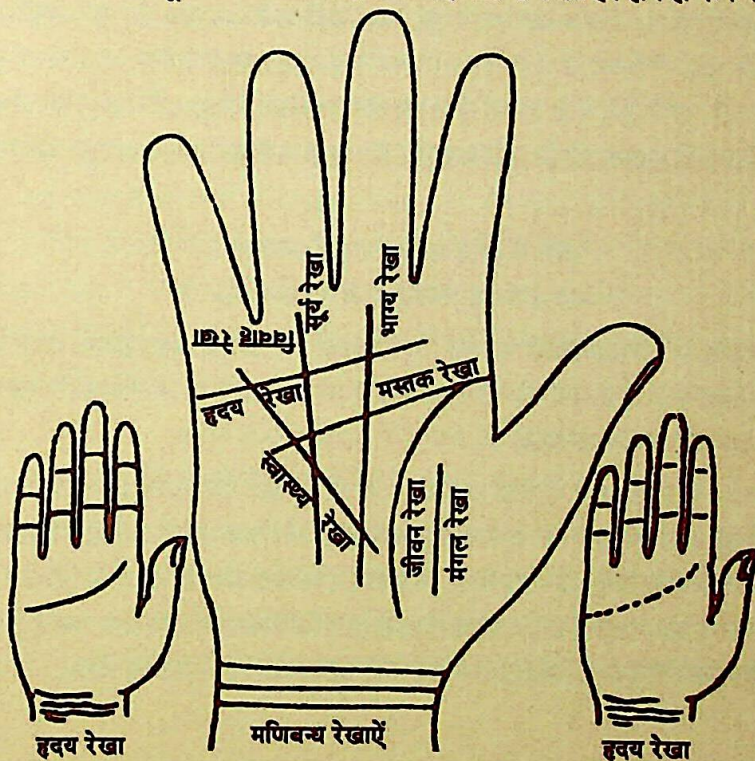
हस्त रेखा विज्ञान

एक मौलिक किन्तु सूक्ष्म दिग्दर्शन

है। कहा भी गया है कि यह विश्व कर्म प्रधान है। "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।" अर्थात् इस हाथ के द्वारा किए गए कर्मों से हम अपना निर्माण करते हैं। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि हमारा ही नहीं अपितु समस्त विश्व का सृजन एवं ध्वंस इन्हीं हाथों का हाथ है। यदि हमारा चिन्तन सकारात्मक हुआ तो विश्व में सुख शान्ति सम्भव है और यदि हमारा चिन्तन नकारात्मक हुआ तो फिर विनाश है। हमारे हाथ में ही समस्त सृष्टि की दोनों शक्तियां विद्यमान है। किन्तु भारतीय मनीषा ने हमेशा शिवं की साधना की है। इसीलिए हाथ की अपार शक्तियों को देखते हुए प्रार्थना की गई है–

अयं में हस्तो भगवा, नयं में भगवत्तर :।
अयं में विश्व भेषजो, यं शिवाभिमदर्शन :।।

अर्थात् मेरी प्रत्येक हथेली भगवान (ऐश्वर्यशाली) है, अच्छा प्रभाव उत्पन्न करने वाली है, मेरे हाथों में विश्व के सभी रोगों की औषधियां है और मेरे हाथ का स्पर्श कल्याणकारी एवं सर्व रोग निवारक एवं सर्व सौन्दर्य सम्पादक है।

शरीर के किसी अंग में पीड़ा या विकास हो तो पवित्रता एवं एकाग्रता से उपर्युक्त मंत्र का पाठ करते हुए दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़ कर उनसे और जब गर्म हो जाए तो पीड़ित स्थान को पांच मिनट तक सेक कर दस पन्द्रह मिनट के लिए आंखें बन्द कर सो जाइए तो पीड़ित स्थान पर आश्चर्य जनक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसे हस्त चिकित्सा का नाम दिया गया है। मानसिक पवित्रता व एकाग्रता जितनी अधिक होगी उतना ही अधिक एवं त्वरित लाभ होगा।

हस्त रेखा विज्ञान

एक मौलिक किन्तु सूक्ष्म दिग्दर्शन

सौन्दर्य वृद्धि : रात्रि में बिस्तर पर लेट कर और प्रात: बिस्तर से उठने के पूर्व इसी मंत्र का मानसिक जाप करके दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़कर गर्म करके शरीर के सभी अंगों सिर मस्तक से लेकर नेत्र, हाथ, छाती, दोनों तलुओं तक स्पर्श करे। साथ ही यह अनुभूति करें कि हमारा शरीर, मुख, नेत्र वर्ण आदि सुन्दर हो रहे हैं, कुछ दिनों में आप देखेंगे कि आपका शरीर सुन्दर एवं मुख गुलाब की भांति खिला हुआ हो गया है। आप मनचाही आवृत्ति पा सकते हैं।

महान साधक स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने तो यहां तक कहा कि इसी प्रकार यदि आप किसी वस्तु का स्पर्श करते हैं तो उसमें भी निखार आ जाता है। मनुष्य की दोनों हथेलियों में सर्वरोग निवारक औषधियां है। हथेलियों के रगड़ने से इन औषधियों का प्रभाव त्वचा पर आ जाता है। प्राचीन काल में हाथों के स्पर्श से ही हमारे ऋषि मुनि लोगों के कष्टों का निवारण कर देते थे। इसे स्पर्श चिकित्सा भी कहते हैं। तभी तो कहा गया है कि देवताओं एवं ग्रहों का निवास हथेलियों में है। प्रात: कर दर्शन का यही रहस्य है।

कराग्रे वसति लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती।
करमूले वसति ब्रह्मा (गोविन्दे), प्रभाते कर दर्शनम्।।

ईश्वर ने मानव जीवन की विशेषकर शरीर की संरचना इस प्रकार की है कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक इसका रहस्य सुलझा नहीं सके हैं। मनुष्य आदिकाल से अपने जीवन भावी गोपन रहस्यों को जानने के लिए व्यग्र रहा है। 'भविष्य' एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में अत्यन्त रहस्यमय एवं दुर्बोध है। इस रहस्य को जो प्रकाशित कर रुकने की क्षमता रखता है वह केवल सामुद्रिक

हस्त रेखा विज्ञान

एक मौलिक किन्तु सूक्ष्म दिग्दर्शन

शास्त्र (हस्त रेखा विज्ञान) ही है। ईश्वर ने हाथ की टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं के माध्यम से भविष्यादि का ज्ञान हमारी हस्त रेखाओं में अंकित कर दिया है।

इन रेखाओं के द्वारा किसी का भविष्य बताने के लिए केवल हाथ की एक रेखा को देखकर ही नहीं कहा जा सकता है। उस रेखा की अनेक सहायता रेखाएँ सत्य को उद्‌घाटित करने में सहायक होती हैं। इन सभी रेखाओं का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध रहता है।

दाहिने हाथ की रेखाओं का विशेष महत्व होता है। क्योंकि हमारी सक्रियता इसी हाथ से आंकी जा सकती है। इसी प्रकार स्वावलम्बी महिलाओं का भी दाहिना हाथ देखना चाहिये। जिनका बायां हाथ विशेष सक्रिय है और उसी से लिखते हैं उनका बायां हाथ देखना चाहिये। निकम्मे और बेरोजगारों का भी बायां हाथ देखना चाहिये। यदि दाहिने हाथ में रेखाएं न दिखाई दे या अस्पष्ट हो तब बायां हाथ लेना चाहिये। यदि कोई तथ्य दोनों हाथों में दिखाई दे तो उससे सम्बन्धित घटना को प्रमाणिक मानना चाहिये। एक सत्य यह है कि मूल रेखाएं बदलती नहीं है। इन रेखाओं के साथ-साथ कुछ विशेष चिह्न भी महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे हत्या करने वाले का अंगूठा छोटा तथा ऊपरी भाग चपटा होता है। साथ ही अंगूठे का नाखून छोटा हो तो ऐसा व्यक्ति किसी की हत्या करता है। कड़ा अंगूठा हठी व्यक्ति का तथा लचीला अंगूठा सामंजस्य करनेवाले तथा धन संग्रह में रुचि रखने वाले का सूचक है।

हस्त रेखा विज्ञान

रेखाएं

हथेली की रेखाएँ हमारे जीवन की गति प्रगति सौभाग्य, आयु आदि को व्यक्त करती है। ये रेखाएं जितनी गहरी व स्पष्ट होती है वे सफलता की सूचक होती है। मुख्य रेखाएं ७ होती है। वे १. जीवन रेखा, २. मस्तिष्क रेखा, ३. हृदय रेखा, ४. सूर्य रेखा, ५. भाग्य रेखा, ६. स्वास्थ्य रेखा और ७. विवाह रेखा। इसके अतिरिक्त १ २ गौड़ रेखाएँ होती है।

इन रेखाओं की सामान्य जानकारी इस प्रकार है:

१. जीवन रेखा के अलावा यदि कोई रेखा अपने अंतिम सिरे पर दो भागों में बंट जाती है तो वह श्रेष्ठ मानी जाती है।

२. नीचे की ओर झुकी रेखाओं का फल विपरीत होता है।

३. यदि मस्तिष्क रेखा में से कोई रेखा ऊपर की ओर बढ़ती है तो विशेष यश देती है।

४. जंजीरदार एवं टूटी रेखा अशुभ होती है।

५. यदि विवाह रेखा जंजीरदार हो तो प्रेम असफल होता है।

जीवन रेखा : यह सबसे महत्वपूर्ण रेखा मानी गई है। इससे आयु का पता चलता है। जीवन में होने वाली घटनाएं भी इसी से ज्ञात होती है। यह जितनी गहरी, स्पष्ट एवं बिना टूटी हुई होती है उतनी ही वह शुभ मानी जाती है। यदि इस पर आड़ी तिरछी रेखाएँ हो तो स्वास्थ्य कमजोर होता है। यदि जीवन रेखा एवं हृदय के बीच में त्रिभुज हो तो व्यक्ति दमें का मरीज होगा। यदि यह टूटी फूटी हो तो व्यक्ति दुर्घटना ग्रस्त होता है। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार है–

छोटी रेखा कम आयु। पीली चौड़ी रेखा बीमारी एवं विवादास्पद होना। लाल रेखा हिंसा की भावना अत्यधिक पतली रेखा आकस्मिक मृत्यु। जंजीरदार रेखा कोमलता। टूटी रेखा बीमारी। सीढ़ीदार जीवन

रेखाएं

भर रोगी। वृहस्पति पर्वत से नीचे प्रारम्भ होना उच्च सफलता। मस्तिष्क रेखा से मिली हुई विवेकी। अंतिम शिरे पर रेखाएं दुखदायी। अंत में दो भागों में विभक्त होना गरीबीपूर्ण मृत्यु। प्रारम्भ में क्रास-दुर्घटना में अंग भंग। सूर्य रेखा की ओर जाती हुई रेखाएं– कदम कदम पर सफलता। मंगल पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं– प्रेम के कारण युवावस्था में बदनामी। शुक्र पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं–प्रेम भंग। जीवन रेखा को काटकर मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हुई रेखा–पागलपन।

मस्तिष्क रेखा : इस रेखा का अत्यधिक महत्व है। इसका पुष्ट एवं स्पष्ट होना आवश्यक है। यदि इस रेखा से कोई पतली रेखा गुरु पर्वत की ओर जाती है तो विवेक। यदि यह स्पष्ट एवं निर्दोष हो तो व्यक्ति क्रियाशील होता है। यदि इस रेखा से कोई रेखा निकल कर गुरु पर्वत के अंत तक पहुँच जाती है तो व्यक्ति श्रेष्ठ साहित्यकार। यदि यह हथेली के मध्य में नीचे की ओर झुक जाती है तो व्यक्ति धन को महत्व देता है। यदि यह रेखा बढ़कर हृदय रेखा को छूले तो वह व्यक्ति बहुस्त्रीगामी होगा। यदि यह रेखा हृदय रेखा से लिपटती हुई आगे बढ़ती है तो वह स्त्री की हत्या कर देता है। इसका झुकाव सूर्य रेखा की ओर उच्च पद दिलाता है। बुध पर्वत की ओर झुकाव सफल व्यापारी बनाता है। यदि इसके अंत में क्रास हो तो वह वृद्धावस्था में पागल हो जाता है। यदि वह मणिबंध तक पहुंच कर रुक जाती है और वहां क्रास का चिह्न हो तो वह व्यक्ति आत्म हत्या अवश्य करेगा। यदि यह मंगल क्षेत्र पर समाप्त होती है तो वह व्यक्ति जीवन में सफल नहीं होता है। यदि यह दोहरी और सपाट हो तो व्यक्ति सफल कूटनीतिक होता है। यदि यह जंजीर के समान हो तो मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारी होती है। यदि इस पर क्रास का चिह्न हो तो दुर्घटना में मृत्यु होती है। यदि सभी पर्वत पुष्ट हो और यह रेखा सीधी व स्पष्ट हो तो व्यक्ति जीवन में सफल होता है। अगर यह टेढ़ी मेढ़ी हो तो व्यक्ति संकीर्ण विचारों का होता है। यदि इसके अंत में चतुर्भुज हो तो वह व्यक्ति विदेश में सफल होता है। यदि यह जालीदार हो व्यक्ति सफल वक्ता होता है। यदि यह रेखा मध्यमा अंगुली पर चढ़

हस्त रेखा विज्ञान

रेखाएं

जाए तो जल में डूबने का खतरा होता है। यदि यह अनामिका के मूल तक पहुँच जाए तो व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

हृदय रेखा : जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा शुद्ध, स्पष्ट तथा लालिमा लिए हो तो व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफल एवं सम्माननीय होता है। यह जिस पर्वत के नीचे पहुंच जाती है तो उसके स्वाभाविक गुण उस व्यक्ति में आ जाते हैं। यदि यह रेखा मस्तिष्क रेखा के जिस भाग पर मुड़ती है तो मस्तिष्क रेखा के समान आयु में बुद्धि का विकास होता है। यदि यह रेखा मस्तिष्क रेखा से पूरी तरह मिल जाती है तो वह व्यक्ति अपनी बुद्धि से नहीं दूसरों की बुद्धि से चलता है। यह मस्तिष्क रेखा को काट दे तो व्यक्ति अस्त-व्यस्त हो जाता है। यदि यह रेखा कई जगह टूट सी जाती है तो हृदय रोग उत्पन्न करती है। यह जितनी लम्बी एवं वृहस्पति पर्वत से दूर होती है उतना ही शुभ है। इसका लम्बी व स्पष्ट होना सर्वप्रिय बनाता है।

इस पर तारे का चिह्न होना आजीवन रोगी बनाता है। यदि अंतिम सिरे पर दो भागों में बंट जाती है तो वह व्यक्ति सामाजिक जीवन में सफल होता है। दोहरी हृदय रेखा उच्च पद दिलाती है। अत्यधिक लाल होने से व्यक्ति को हिंसक बनाती है। जंजीर की भांति यह रेखा अविश्वसनीय बनाती है। बुध पर्वत के नीचे टूटने से वैवाहिक जीवन असफल बनाती है। इस पर त्रिकोण होने से विश्व व्यापी कीर्ति दिलाती है। यदि इस पर कई चतुर्भुज बनते हो तो असाधारण प्रतिभा मिलती है पर स्वयं के लिए वह व्यक्ति असफल होता है। गुरु पर्वत के नीचे कई भागों में बंटने वाली यह रेखा सौभाग्य की वृद्धि करती है। जिसके हाथ में यह नहीं होती है वह निर्दयी होता है। यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा नहीं निकलती है तो संतान सुख नहीं मिलता है।

सूर्य रेखा : बहुत कम हाथों में यह रेखा देखने को मिलती है। यह रेखा सफलता, कीर्ति और धन की प्रदायिनी है। यदि यह रेखा स्पष्ट एवं पूरी लम्बी हो तो जीवन में कोई अभाव नहीं होता है। यदि यह रेखा हल्की हो तो व्यक्ति की क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं होता है। यदि इस रेखा पर वर्ग का चिह्न हो तो अपमान

हस्त रेखा विज्ञान

रेखाएं

मिलता है। यदि यह रेखा मस्तिष्क की ओर जाती है तो पूर्णधन लाभ मिलता है। इसका गहरा व स्पष्ट होना शुभ है। यदि इसके अंत में तीन रेखाएं दिखाई दें तो धन की कमी नहीं होती है।

भाग्य रेखा : इसे शनि रेखा भी कहते हैं। यदि यह रेखा कमजोर हो तो व्यक्ति उन्नति तो करता है पर किसी का भी सहयोग नहीं मिलता है। यदि यह रेखा स्पष्ट एवं गहरी हो तो परम श्रेष्ठ है। इसके अंतिम छोर पर यदि तारे का चिह्न हो तो अकाल मृत्यु प्राप्त होती है। यदि यह मध्य में हल्की हो तो यौवन काल सुखदायक नहीं होता है। यह प्रारम्भ और अंत में गहरी एवं स्पष्ट हो तो बचपन व वृद्धावस्था ठीक रहता है। यदि इसके साथ सहायक रेखाएं हो तो जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है। इस पर धन का चिह्न शुभ होता है। यदि इसके उद्‌गम स्थान पर तीन-चार रेखाएँ निकली हो तो विदेश में उन्नति का योग होता है। विवाह रेखा से इसका मिलन अशुभ होता है। इसके आंत में यदि क्रास या जाली हो तो उस व्यक्ति का अंत क्रूरतापूर्ण होता है।

स्वास्थ्य रेखा : यदि यह रेखा जीवन रेखा से मिली न हो तो दीघार्यु प्राप्त होती है। यह जितनी लम्बी व पुष्ट होती है उतना ही उत्तम स्वास्थ्य रहता है। यदि यह प्रारम्भ में लाल हो तो हृदय रोग की आशंका रहती है, यदि अंतिम सिरे पर लाल हो तो सिर दर्द होता है। यदि इसका रंग पीला हो तो गुप्त रोग होते हैं। यदि यह चन्द्र पर्वत से होती हुई बुध पर्वत तक जाती है तो जीवन में कई बार विदेश जाने का सुयोग मिलता है। यदि इस पर तथा मस्तिष्क रेखा पर धब्बे हो तो व्यक्ति जीवन भर बीमार रहता है। यदि यह कमजोर व लहरदार हो तो उदर रोग होते हैं। यदि बुध पर्वत पर रेखा कट जाती है तो पित्त प्रकोप होता है। यदि इसके आस-पास क्रास का चिह्न हो तो जीवन में कई बार दुर्घटनाएं आती हैं। इसके पीली व कमजोर होने से चेहरे पर सुस्ती बनी रहती है। यदि इस पर तथा मस्तिष्क रेखा पर क्रास हो तो व्यक्ति अंधा बन जाता है। यदि जीवन रेखा कमजोर तथा बुध रेखा लहरदार हो तो गठिया रोग होता है।

हस्त रेखा विज्ञान

रेखाएं

यदि इसके साथ कोई सहायक रेखा चल रही हो तो स्वास्थ्य अत्यन्त उत्तम रहता है। यदि इस रेखा का हृदय रेखा से मिलन बुध पर्वत के नीचे हो तो हार्ट अटैक से मृत्यु होती है। यदि यह रेखा ठीक हो पर नाखूनों में पीली धारियां हो तो उस व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होती है। यदि यह रेखा नीचे से पुष्ट होकर ऊपर चलते चलते क्षीण हो जाए तो यौवन काल में मृत्यु होती है। यदि इस रेखा का जीवन रेखा से सम्बन्ध हो जाए और ऊपर तारे का चिह्न हो तो यात्रा में मृत्यु योग है।

विवाह रेखा : यह रेखा जितनी छोटी होती है उतना ही महत्वपूर्ण होती है। हृदय रेखा के ऊपर वाली रेखाएं हृदय रेखा कहलाती है। पर यदि ये नीचे हो तो विवाह कभी नहीं होता है। यदि यह रेखा स्पष्ट एवं लालिमा लिए हुए हो तो वैवाहिक जीवन सुखी होता है। यदि यह कनिष्ठिका के दूसरे पोर तक बढ़ जाए तो व्यक्ति का विवाह नहीं होगा। यदि यह रेखा टूटी फूटी हो तो जीवन के मध्यकाल में पत्नी की मृत्यु हो जाती है या तलाक हो जाता है। यदि यह रेखा आगे चलकर दो मुंही बन जाती है तो दाम्पत्य जीवन दुखमय होता है, यदि इस रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर हृदय रेखा की और जाती है तो पत्नी से अनुकूलता रहती है। यदि यह रेखा चौड़ी होती है तो विवाह के प्रति कोई उत्साह नहीं रहता है। यदि इस पर काला धब्बा हो तो उसे पत्नी सुख नहीं मिलता है। यदि मणिब्ध कमजोर हो और शुक्र पर्वत अविकसित हो तो संतान सुख नहीं मिलता है। यदि बुध क्षेत्र में दो समानान्तर रेखाएं हो तो दो विवाह होते हैं। यदि यह रेखा आगे चलकर सूर्य रेखा से मिलती है तो पत्नी उच्च पद पर नौकरी करती है। सन्तान रेखाएं अत्यन्त महीन होती हैं, उन्हें नंगी आंखों से देखना सम्भव नहीं है। यदि इस रेखा पर कई द्वीप हो तो जीवन में विवाह नहीं होगा।

हस्त रेखा विज्ञान अत्यन्त गूढ़ एवं विस्तृत है। शरीर के विभिन्न चिह्न, मस्से, तिल आदि तथा अंगों की बनावट से भी किसी का चरित्र व स्थिति जानी जा सकती है।

हस्त रेखा विज्ञान

पर्वत

हस्त रेखा विज्ञान में पर्वतों का विशेष महत्व है। क्योंकि पर्वतों के माध्यम से ही रेखाएँ बनती और विकसित होती है। पर्वतों का नाम ग्रहों के नामों पर किया गया है और हर पर्वत में सम्बन्धित ग्रहों के गुण स्वभावत: आ जाते हैं।

मुख्य पर्वत है जैसे- १. वृहस्पति पर्वत, २. शनि पर्वत, ३. सूर्य पर्वत, ४. शुक्र पर्वत, ५. बुध पर्वत और ६. मंगल पर्वत

हथेली पर पर्वतों के स्थान

वृहस्पति पर्वत : इसका स्थान तर्जनी के मूल तथा मंगल के ऊपर रहता है। यह लेखन, नेतृत्व एवं संचालन का स्वामी है। जिसके हाथ में यह अधिक उभरा और स्पष्ट होता है वह व्यक्ति दैवी गुणों से सम्पन्न रहता है। ऐसे व्यक्ति स्वाभिमान की रक्षा करते हैं। ये धार्मिक होते हैं। यदि यह अल्प विकसित एवं नहीं होता है तो उपर्युक्त गुण कम हो जाते हैं। यदि इसका झुकाव शनि पर्वत की ओर होता है तो व्यक्ति चिन्तनशील एवं सफलता न प्राप्त करने वाला होता है। यदि यह नीचे की ओर खिसका हुआ हो तो अपयश मिलता है किन्तु व्यक्ति साहित्यिक होता है।

हस्त रेखा विज्ञान

पर्वत

यदि अंगुलियाँ नुकीली हो और यह पर्वत विकसित हो तो व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। यदि स्त्रियों के हाथ में यह पर्वत हो तो उनमें समर्पण की भावना पाई जाती है। विकसित पर्वत विशेष रूप से शुभ माना गया है। यदि यह पर्वत अधिक उभरा हुआ होता है तो वह व्यक्ति देव गुणों से युक्त होता है। ऐसे व्यक्ति न्यायप्रिय, सामाजिक भावना से पूर्ण एवं विद्वान स्वाभावी रहते हैं। यदि उभरा नहीं है तो ये गुण न्यून हो जाते हैं। जरूरत से ज्यादा विकसित होने पर व्यक्ति स्वार्थी होता है।

शनि पर्वत – यह मध्यमा अंगुली के मूल में होता है। जिसके हाथ में इसका अभाव हो तो वह व्यक्ति अधिक सम्मान एवं उन्नति नहीं प्राप्त कर सकता है। यह अंगुली भाग्य की देवी है। भाग्यरेखा की समाप्ति इसी के मूल में होती है। यदि यह पर्वत अधिक विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति आत्म हत्या करता है। डाकुओं, ठगों एवं लुटेरों के हाथ में यह अत्यधिक विकसित होता है।

सूर्य पर्वत – अनामिका के मूल में एवं हृदय रेखा के ऊपर इसका स्थान होता है। यह सफलता का सूचक है। जिसके हाथ में यह नहीं होता है वह अकीर्तिवान होता है। यदि अनपढ़ के हाथ में भी यह होता है तो वह धनी होता है। यदि यह अधिक विकसित होता है तो व्यक्ति अधिक घमण्डी होता है। यदि यह पर्वत बुध पर्वत की ओर झुका हो तो सफल व्यवसायी बनाता है। जिनके हाथ में यह नहीं होता है वे मन्द बुद्धि के होते हैं।

बुध पर्वत – कनिष्ठा अंगुली के मूल में यह होता है।

यह भौतिक सम्पदा एवं सुख का सूचक है। ऐसा व्यक्ति हर कार्य में सफल होता है। इसके जरूरत से अधिक विकसित होने से व्यक्ति धूर्त बनता है। यदि यह सामान्य विकसित हो और उस पर वर्ग के आकार का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति शातिर अपराधी होता है। यदि हथेली में इस पर्वत

पर्वत

का अभाव हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है। सूर्य पर्वत की और इसका झुकना शुभ फलदायक होता है। यदि इस अंगुली का शिरा वर्गाकार हो तो श्रेष्ठ भाषण कला सम्पन्न बनता है। यदि यह अंगुली गांठदार हो तो व्यक्ति दृढ़ संकल्प वाला होता है।

शुक्र पर्वत – यह अंगूठे के दूसरे पोर के नीचे तथा आयु रेखा से घिरा हुआ जो स्थान होता है वही इसका क्षेत्र है। जिसके हाथ में यह पर्वत श्रेष्ठ स्तर का होता है वह सुन्दर एवं सभ्य होता है। स्वास्थ्य ठीक रहता है। जिनके हाथ में यह जरूरत से ज्यादा विकसित होता है वे भोगी होते हैं। यदि किसी के हाथ में इसका अभाव होता है तो वह वीतरागी होता है। इसका उभार व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है। शुक्र प्रधान व्यक्तियों को गले की बीमारी हो जाती है। ऐसे लोग लगभग नास्तिक होते हैं।

मंगल पर्वत – जीवन रेखा के प्रारम्भिक स्थान के नीचे तथा शुक्र पर्वत के ऊपर फैला हुआ भाग इसका क्षेत्र है। मूल रूप से यह पर्वत युद्ध का प्रतीक माना जाता है। मंगल प्रधान व्यक्ति निर्भीक एवं शक्तिशाली होता है। इसके अभाव से व्यक्ति कायर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति लम्बा एवं स्वस्थ होता है। यदि यह अधिक विकसित होता है तो व्यक्ति दुराचारी एवं अन्यायी होता है। यदि इसका झुकाव शुक्र पर्वत की ओर होता है तो व्यक्ति दुर्गुणी होता है। यदि इसमें रेखाएं विशेष रूप से हो तो व्यक्ति युद्ध प्रिय एवं सेना का अधिकारी होता है। यदि यह पर्वत ठीक से विकसित हो ओर हथेली का रंग लाल हो तो वह व्यक्ति उच्च अधिकारी होता है। यदि यह विकसित हो और अंगुलियाँ कोणदार हो तो व्यक्ति आदर्श प्रिय होता है।

हस्त रेखा विज्ञान

पर्वत सम्बन्धी उल्लेखनीय तथ्य

कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि अधिकतर हाथों में एक से अधिक पर्वत विकसित होते हैं। उनका फल मिश्रित होता है। उनका फल इस प्रकार होता है।

१.	गुरु-शनि	:	उत्तम भाग्य
	गुरु-सूर्य	:	श्रेष्ठ धन एवं सम्मान
	गुरु-बुध	:	काव्य कला एवं ज्योतिष में प्रवीण
	गुरु-मंगल	:	पराक्रम, साहस
२	शनि-सूर्य	:	तार्किक, चिन्तन
	शनि-बुध	:	निर्णय लेने की क्षमता, परोपकार
	शनि-शुक्र	:	स्वार्थी-रसिक
	शनि-मंगल	:	लड़ाकू
३.	सूर्य-बुध	:	विद्वान, व्यापारी
	सूर्य-शुक्र	:	योजनाबद्ध कार्य
	सूर्य-मंगल	:	आत्मोत्सर्ग की भावना
४.	बुध-गुरु	:	संगीतज्ञ, समलैंगिकता
	बुध-मंगल	:	निर्णय लेने की क्षमता
५.	शुक्र-मंगल	:	संगीतज्ञ
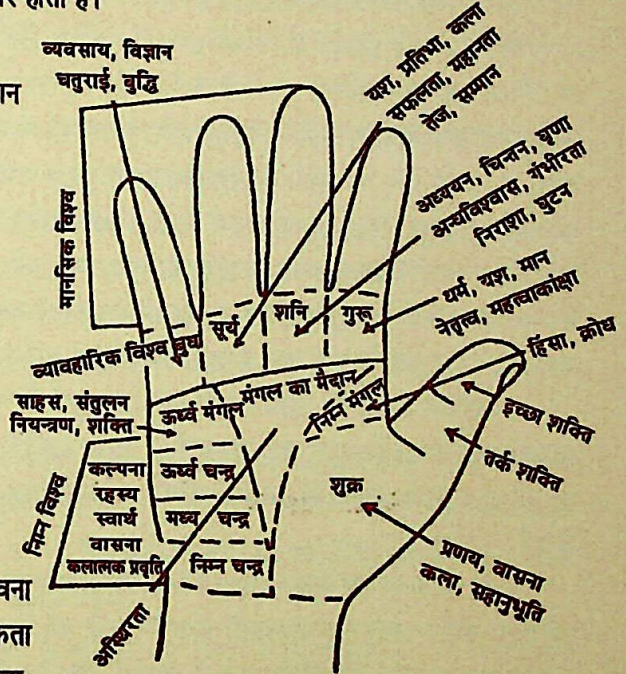
रत्न चिकित्सा

रत्नों का प्रभाव

ज्योतिष शास्त्र एवं आयुर्वेद के अनुसार रत्नों में दैवी शक्ति होती है। ये हमारे भाग्य एवं स्वास्थ्य पर अत्यन्त सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इन रत्नों का हम पर जो प्रभाव पड़ता है वह ग्रहों के रंगों और उनसे निकलने वाले प्रकाश की कम्पन क्षमता के कारण होता है। हमारे महर्षियों ने अपने अनुभव प्रयोग और दिव्य दृष्टि से जानकारी प्राप्त की थी कि कौन ग्रह किस रंग की किरणें प्रस्फुटित करता है और उसी के अनुसार उन्होंने विशेष ग्रह के लिए विशेष रत्न निर्धारित किए। किसी ग्रह से निकलने वाली किरणें मानव शरीर में प्रवेश कर के अपने कम्पन प्रभाव को सुदृढ़ बनाती है। रत्न एक प्रकार से उन किरणों से आवश्यकतानुसार (Filter) का कार्य करते हैं और मानव शरीर में आवश्यकतानुसार हानि या लाभ पहुंचाते हैं। निर्धारित रत्न उन किरणों के हानिप्रद प्रभाव को अपने में समेट लेता है। कौन सा रत्न कब उपयोगी या हानिप्रद होगा यह जन्म कुण्डली को देखकर ही बताया जाता है। जन्म कुण्डली में जो ग्रह पीड़ा कारक हो। उस ग्रह का रत्न ग्रह शान्ति के लिए धारण करना चाहिये।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रहों के दो समुदाय हैं। एक का नेता सूर्य है, उसके सहयोगी चन्द्र वृहस्पति एवं मंगल है। दूसरे का नेता शनि है, उसके सहयोगी बुध, शुक्र, राहु एवं केतु है। जिस समुदाय का जो ग्रह लग्न का स्वामी हो उससे सम्बन्धित रत्न धारण करने से तत्सम्बन्धी रोग शांत एवं दुष्प्रभाव शांत होते हैं।

इस स्थल पर हम केवल रत्न चिकित्सा को ही सप्रमाण प्रस्तुत करेंगे। आयुर्वेद के अनुसार रत्नों का औषधीय प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली होता है। रत्नों की केवल भस्म ही नहीं बनाई जाती, उनकी पिष्टी (पिसा हुआ पाउडर) भी औषधि रूप में उपयोगी होता है। रत्नों की भस्में साधारण एवं कठिन रोगों के निवारण के लिए सेवन की जाती है। इन भस्मों में हीरा, पन्ना, मोती, मूंगा, माणिक्य, पुखराज एवं नीलम आदि है।

रत्न चिकित्सा

रत्न धारण से रोग निवारण

माणिक्य : इसकी पिष्टी एवं भस्म दोनों ही औषधिरूप में काम आती है। ये रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोगों में लाभकारी है। उसके सेवन से आत्मबल एवं आयु में वृद्धि होती है। इसमें वात पित्त एवं कफजनित रोगों को दूर करने की अपूर्वशक्ति है। क्षय रोग, उदरशूल एवं कब्ज दूर होते हैं। चक्षु रोग एवं शरीर की उष्णता में लाभकारी है।

भाव प्रकाश एवं रस रत्न समुच्चय के अनुसार यह शीतलता प्रदान करने के साथ-साथ नेत्र ज्योति वर्द्धक, वीर्यवर्धक, पित्त, कफ, वायु का शमन कर नपुंसकता नाशक है।

मोती : इसको खाया भी जाता है। कैल्शियम की कमी के कारण उत्पन्न रोगों में अत्यन्त लाभकारी होता है। खाने के लिए पहले महीन पीस कर कपड़ छान करले फिर ११ दिन तक केवड़ा या गुलाब जल में घोटना चाहिये। तब छाया में सुखाकर प्रयोग करना चाहिये। यह नेत्र ज्योति वर्धक, शक्ति दायक एवं आयुवर्धक है। इस मुक्ता भस्म से क्षय रोग, दुबलापन, पुराना ज्वर, खांसी, श्वास, कष्ट, दिल धड़कना, रक्तचाप एवं हृदयरोग दूर होते है।

मूंगा (प्रवाल) : इसकी शाखा को केवड़ा या गुलाब जल में पीस करं यदि गर्भवती स्त्री के पेट में लेपन किया जाए तो गर्भपात नहीं होता है। इसे गुलाबजल के साथ महीन पीस कर छाया में सुखाकर शहद के साथ खाया जाए तो शरीर पुष्ट होता है। पान के साथ खाने से कफ एवं खांसी दूर होते हैं। कुष्ठ खांसी मंदाग्नि, ज्वर एवं पाण्डुरोग में यह अत्यन्त उपयोगी है।

पन्ना : यह गुलाब जल या केवड़ा जल के साथ घोटकर उपयोग में लाया जाता है। रक्त व्याधि, मूत्र एवं हृदय रोग में विशेष लाभकारी है। यह शीतल एवं मेदवर्धक होती है, इससे भूख बढ़ती है, अम्ल पित्त (Acidity) निचली, दमा, अजीर्ण, बवासीर एवं पीलिया में उपयोगी है।

रत्न चिकित्सा

रत्न धारण से रोग निवारण

श्वेत पुखराज : इसे २५ दिन तक गुलाब जल या केवड़ाजल में घोटकर छाया में सुखाना चाहिये। यह पीलिया, आमवात, खांसी, श्वास कष्ट एवं बवासीर में उपयोगी है। श्वेत पुखराज की भस्म विषाक्त कीटाणुओं के प्रभाव को नष्ट करती है। कुष्ठ में अत्यन्त उपयोगी है।

हीरा : इसकी पिष्टी कभी भी नहीं खानी चाहिये। शुद्ध रीति से बनाई भस्म उपयोगी होती है। इसकी भस्म से क्षयरोग, भ्रान्ति, जलोदर, मधुमेह, भगन्दर, रक्त की कमी, सूजन आदि रोग दूर होते हैं। यदि हीरे का कण पेट में चला जाए तो दूध में घी मिलाकर पिलाना चाहिये। इससे वमन के द्वारा वह निकल जाता है। अन्यथा आतों में घाव होकर प्राणान्त भी हो जाता है।

रस रत्न समुच्चय के अनुसार इसकी भस्म का एक अलौकिक गुण यह है कि यदि रोगी अन्तिम सांसें ले रहा हो तो इसके अन्यान्य योग या इसकी एक खुराक भस्म देने से चेतना वापस आ जाती है। यह त्रिदोष नाशक एवं हृदय रोगों से सर्वोत्कृष्ट रसायन है। पाण्डु रोग, जलोदर एवं नपुंसकता को जड़ से नष्ट करता है।

नीलम : इसे पीसकर कपड़े से छान ले और गुलाबजल या केवड़ा जल से घोट कर उपयोग में लाना चाहिये। इसे शहद, मलाई, पान और अदरख रस में ही किसी एक के साथ सेवन करना होता है। यह विषम ज्वर, मिरगी, मस्तिष्क की कमजोरी, उन्माद, हिचकी आदि में विशेष गुणकारी है।

शनि के कोप से उत्पन्न गठिया, संधिवात, गुल्म मूर्छा, वायु, शूल एवं चर्म रोगों में अत्यन्त प्रभावशाली है।

गोमेद : गुलाब जल या केवड़ा जल में पीस घोट कर वायु शूल, चर्म रोग, कृमिरोग, बवासीर में अत्यन्त प्रभावशाली है।

रत्न चिकित्सा

रत्न धारण से रोग निवारण

वैदूर्य लहसुनिया : इसमें शीत वीर्य गुण अधिक है। यह दीपन कार्य करते हुए बुद्धि एवं आयुवर्धक है। कफ, खांसी, बवासीर आदि को दूर करता है। इसे केवड़ा जल में घोट कर पिस्टी के रूप में प्रयोग करना चाहिये। यह पित्त रोगों को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है।

अन्य कुछ अल्पमोली रत्न है जिनका प्रभाव इस प्रकार है।

लाजवर्त (राजावर्त) : रस रत्न समुच्चय के अनुसार इसकी भस्म २० प्रकार के प्रमेह, क्षय, वायु तथा कफ विकारों को दूर कर वीर्य बढ़ाती है।

तुर्मली (वैक्रान्त) : यह हीरा भस्म के समान उपयोगी है। यह त्रिदोष नाशक, वीर्य का पतलापन, वात, उदर रोग, क्षय, श्वास आदि को नष्ट कर बुद्धि को बढ़ाती है।

तामड़ा (गार्नेट) : इसकी भस्म माणिक्य भस्म के समान तैयार करनी चाहिये। इसकी भस्म रक्तस्राव एवं पथरीरोग में अत्यन्त प्रभावशाली है।

अकीक या हकीक : इसको केवड़ा जल में तब तक बुझाते रहे जब तक इसके बारीक टुकड़े न हो जाएं। एक लोहे की बड़ी करछुल में रखकर तपाना चाहिये और १५-२० बार केवड़े के जल में डुबाना चाहिये। यह बेहोशी, यकृत, प्लीहा, रक्तस्राव और पथरी रोगों में उपयोगी तथा कामोत्तेजक है।

उपल (दुग्ध पाषाण) : यह स्वाद बढ़ाने वाला तथा ज्वर नाशक है।

अम्बर : रस रत्न समुच्चय के अनुसार त्रिदोष नाशक, सन्निपात एवं शूल नाशक है।

दाने फिरंग (किडनी स्टोन) : इसके धारण करने से किडनी का दर्द दूर होता है। इसे गुलाबजल में घिस कर गुर्दे पर लेप करने या पिलाने से तत्काल लाभ होता है।

पितौनिया (ब्लड स्टोन) : दवा के रूप में इसकी पिष्टी पित्त को शान्त करती है। शरीर पर मलने से पित्ती शान्त हो जाती है।
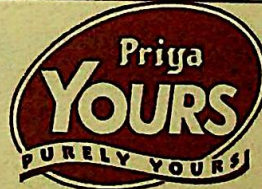
रत्न चिकित्सा

रत्न धारण से रोग निवारण

रत्नों के रंगों का अधिक प्रभाव इसलिए होता है कि उनसे निकलने वाला रंग अधिक घनीभूत (Concentrated) होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य हृदय का प्रतिनिधि है और उसका रत्न माणिक्य है। माणिक्य को रविवार के दिन सोने की अंगूठी में धारण करने से सभी प्रकार के हृदय रोग दूर होते हैं।

हृदय का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध होता है। किसी आकस्मिक घटना, भय या अति हर्ष का समाचार सुनकर व्यक्ति को मानसिक आघात पहुँचाता है। हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। रक्त चाप की वृद्धि का यह कारण होता है। ऐसी दशा में सर्पगंधा, जटामासी और त्रिफला का चूर्ण लाभदायक होता है वहीं माणिक्य धारण करना भी अत्यन्त प्रभावशाली होता है।

बुद्धिभ्रम, आशंका, क्रोध, ईर्ष्या आदि मनोविकारों में पन्ना धारण करना चाहिये। यह स्नायुमंडल की दुर्बलता को दूर करता है।

अतृप्त कामवासना, मन की अशांति में हीरा धारण करना उपयोगी है। यदि सूर्य पंचम में हो और उदर विकार उत्पन्न होते हैं, तो माणिक्य धारण करना चाहिये।

मोती हृदय को बल देता है। नाड़ी संस्थान पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है।

रत्न चिकित्सा

अल्पमोती रत्नों का आश्चर्यजनक प्रभाव

गार्नेट (याकूत या रक्त मणि) : प्राचीनकाल में योद्धा आत्मरक्षा के लिए इसे धारण करते थे। इसके धारण करने से सौभाग्य, सुन्दर स्वास्थ्य, मन-सम्मान, आनन्द में वृद्धि, यात्रा में सफलता, व्यापार में लाभ होता है। लाल रंग का गार्नेट बुखार में लाभ-पीले रंग का गार्नेट धारण करने से पीलिया से मुक्ति एवं सफेद रंग वाला धारण करने से बिजली या तूफान से जीवन हानि नहीं होती है। खतरा आने पर यह अपना रंग बदल देता है और खतरे का आभास करा देता है।

पितौनिया (Blood Stone) : हरे रंग का सूर्यकान्त मणि जिसमें लाल रंग की चित्तियां होती है अपार दर्शी होता है। इसे अगर पानी में डुबो कर धूप में रख दिया जाए तो पानी रक्तवर्ण का हो जाता है। यूनानी मान्यता के अनुसार यह मान मर्यादा रक्षक एवं दृढ़ता प्रदान करता है। साहस एवं बुद्धि बढ़ती है तथा शत्रुओं का षडयन्त्र विफल होता है। इस रत्न का पाउडर शहद तथा अण्डे की सफेदी में मिलाकर खाने से गिल्टी ट्युमर तथा सर्पविष से रक्षा होती है। जिस समय वृश्चिक राशि में हो तो इस पर विच्छू की नक्कासी कर के चांदी की अंगूठी में दाएं हाथ के अंगूठे में धारण करने से मूत्राशय की पथरी दूर हो जाती है। स्त्रियों को इसके स्थान पर एक्वामेरीन धारण करना चाहिये।

फीरोजा या हरिताश्म मौसम के अनुसार रंग बदलता है। प्रात: यदि इसका रंग नीला होगा तो उस दिन का मौसम साफ रहेगा। योद्धा और शिकारी सफलता के लिए इसे अपने अस्त्र शस्त्रों पर धारण करते हैं। इसे अश्व रत्न भी कहा जाता है। इसे धारण करने

रत्न चिकित्सा

अल्पमोती रत्नों का आश्चर्यजनक प्रभाव

या घोड़े के गले में बांधने से सवार एवं घोड़े को कोई हानि नहीं होती है। यह नफरत एवं सिर दर्द को दूर करता है कोई कष्ट या रोग होने से यह अपना रंग बदल देता है। और उनके दूर होने पर फिर असली रंग में आ जाता है। रोग होने पर पीला रंग मृत्यु आने पर यह रंग हीन हो जाता है। यह शरीर की विष से रक्षा करता है। इसका प्रभाव तभी होता है जब कोई इसे उपहार में देता है। आंख पर रखने या मलने से आंख की सूजन दूर होती है। पानी बहना बन्द होता है तथा नेत्र ज्योति भी वापस लौट जाती है।

हकीक : इसके धारण करने से भयानक स्वप्न नहीं आते। इसे पीस कर शराब के साथ सेवन करने से सर्प विष नहीं चढ़ता है। पाउडर के रूप में पीसकर सेवन करने से पागलपन दूर होता है। बिच्छू के काटे स्थान पर बांधने से उसका असर समाप्त हो जाता है। गर्मी के मौसम में इसे मुंह में रखने से लू नहीं लगती। यदि इसे सिंहनी के बाल में बांधकर गले में धारण किया जाए तो राज दरबार में सम्मान मिलता है, कोई मित्र धोखा नहीं देता है।

चन्द्रकांत मणि (Moon stone) यात्रा में दुर्घटना से बचाता है। अगर किसी का जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ हो तो वह इसे धारण कर भविष्य द्रष्टा हो जाता है। टुर्मेलीन (Jourmalim) अभिताओं, लेखकों एवं विद्यार्थियों का रत्न है। हरे रंग का विशेष प्रभावी होता है।

अम्बर यदि बच्चों के गले में बांध दिया जाये तो नजर या जादू टोने का असर नहीं होता है। यह पीलिया दांत गिरने, बहरेपन से रक्षा करता है।

अपने दायें हाथ का नाम रखिये "शुभ लाभ"
और बायें हाथ का नाम रखिये "शुभ खर्च"
फिर दोनों का उपयोग करते रहिये
आपको आत्मिक सुख-शान्ति अवश्य मिलेगी।

रत्न चिकित्सा

नवरत्न अंगूठी एवं जड़ी-बूटियों का प्रभाव

नवरत्न अंगूठी : इसमें नवों ग्रहों से सम्बन्धित असली रत्न जड़े रहते हैं। जब किसी की कुण्डली में ग्रहों की स्थिति ऐसी हो कि उपर्युक्त रत्न का निर्णय करना कठिन हो जाता है। तब यह धारण की जाती है। इससे सभी ग्रह शुभ फलदायक बन जाते है तथा ग्रह प्रकोप एवं ग्रहों से सम्बन्धित रोगों का शमन होता है। यह अंगूठी हर प्रकार से सौभाग्य दायक होती है। रोगों से मुक्ति मिलती है। तथा अकाल मृत्यु का भय नहीं होता है। इसमें रत्नों का वजन निर्णीत नहीं किया जाता है। अत्यन्त छोटे रत्न भी अंगूठी में जड़े जाते है। हां रत्न एकदम निर्दोष होने चाहिये। किसी योग्य पंडित से शुभ मुहूर्त में नवग्रह शांति पूजन हवन और यथा शक्ति दान देकर इसे धारण करना चाहिये। रत्न ठीक से जड़े होने चाहिये।

जड़ी-बूटियों का प्रभाव : ग्रह जनित पीड़ा एवं रोग शांति के लिए जड़ी बूटियाँ भी अत्यन्त प्रभावशाली होती है। पीड़ा या रोग जिस प्रकार से सम्बन्धित हो उसी के दिन उन्हें धारण करना चाहिये। सूर्य जनित पीड़ा व रोगों के लिए बेल की जड़ गुलाबी डोर में, चन्द्र सम्बन्धी रोगों में खिरनी की जड़ सफेद डोरे में, मंगल जनित पीड़ा व रोगों में अनन्त मूल की जड़ लाल डोरे में, बुध सम्बन्धी रोगों में विधारा की जड़ हरे डोरे में, वृहस्पति जनित पीड़ा व रोगों में नारंगी व केले की जड़ पीले डोरे में, शुक्र जनित रोगों में सरफोखा की जड़ सफेद डोरे में, शनि जनित रोगों व पीड़ा बिच्छू की जड़ काले डोरे में, राहु सम्बन्धी पीड़ा व रोगों में सफेद चंदन नीले डोरे में बुधवार को केतु सम्बन्धी रोगों व पीड़ा में अश्वगंधा की जड़ आसमानी डोरे में, गुरुवार को गले या भुजा में धारण करे। चार मुखी रूद्राक्ष ताम्रपात्र में पानीभर कर सायंकाल डाल दे। प्रात: रूद्राक्ष निकलकर खाली पेट पानी पीकर बर्तन को उल्टा रख दे। यह क्रिया लगातार करे। शुभ परिणाम होगा।

पीड़ित से यह मत पूछिए कि तुम्हारा दर्द कैसा है?
उसकी पीड़ा को स्वयं में देखिए
और वह सब कीजिए जिससे
आप अपनी ओर से
उसकी पीड़ा कम कर सकते हों?

रत्नों की धारण विधि

रत्नों की धारण विधि

'रत्न' हमारे दैनन्दिन जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं। भारतीय ज्योषिशास्त्र के अनुसार ग्रहों को शान्त रखने के लिये रत्नों को धारण कर उनके विशेष प्रभाव से हम लाभान्वित हो सकते हैं। सभी रत्नों को शास्त्र सम्मत विधि अनुसार धारण करना ही लाभकारी होता है। जो लोग रत्न नहीं धारण कर सकते वे जड़ी-बूटी धारण करके भी ग्रहों को अपने अनुकूल कर सकते हैं। संक्षिप्त जानकारी दी गई है इस खण्ड में।

रत्नों की धारण विधि

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

माणिक्य : यह एक कीमती रत्न है। जो व्यक्ति इसे खरीदने में असमर्थ हो उन्हें लालड़ी (Spinel) लाल तामड़ा (Garnet) या सूर्यकांत मणि (Sunstone) धारण करना चाहिये। माणिक्यकम से कम ढाई रत्ती का होना चाहिये। इसे रविवार, सोमवार तथा बृहस्पतिवार को खरीद कर सोने की अंगूठी में जड़ाना चाहिये। अंगूठी दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में रविवार को धारण करना चाहिये। धारण करने के पूर्व अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल में डुबोकर रखना चाहिए। उसके बाद शुद्ध जल से धोकर पुष्प चंदन और धूपबत्ती से उसकी पूजा कर सूर्य के मंत्र का ७००० बार जाप करना चाहिये। ऊपर लिखी विधि से हर ग्रह की अंगूठी की धारण विधि यही है।

मोती : मोती २, ४, ६ अथवा ग्यारह रत्ती का होना चाहिये तथा चांदी की अंगूठी में जड़ाना होता है। मोती सोमवार या बृहस्पतिवार को खरीदें फिर शुक्ल पक्ष के सोमवार को ऊपर लिखित विधि से पूजन कर अंगूठी धारण करे। इस अंगूठी को दाहिने या बाएं हाथ की अनामिका (Ring Finger) में पहनना होता है।

मूंगा : मूंगा कम से कम ६ रत्ती का हो और इसे सोने की अंगूठी में जड़ाना चाहिये। इसे मंगलवार को खरीद कर उसी दिन उपर्युक्त विधि से पूजन कर सूर्योदय के एक घण्टे पश्चात मंगल के १०००० मंत्रों का जापकर दाहिने हाथ की अनामिका में धारण करें।

रत्नों की धारण विधि

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

पन्ना : इसे बुधवार को खरीदकर उसी बुधवार को चांदी की अंगूठी में जड़वाना चाहिये। विधिपूर्वक पूजन करके बुध के मंत्र का ९००० जाप करे तथा वजन तीन रत्ती से कम न हो। इसे दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में धारण करना चाहिये।

पुखराज : इसे खरीदने तथा धारण करने का दिन बृहस्पतिवार है। उपर्युक्त विधि से पूजन कर १९००० बृहस्पति के मंत्रों के जाप के बाद सूर्यास्त के एक घंटा पूर्व तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिये।

हीरा : शुक्रवार के दिन हीरा खरीदकर उसी दिन उपर्युक्त विधि से पूजन तथा १६०० बार शुक्र के मंत्र का जापकर धारण करना चाहिये। इसे प्लेटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ाना चाहिये। यह अंगूठी कनिष्ठिका अंगुली में शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को प्रात:काल पहनी जाती है। यह कीमती रत्न है। अत: यह डेढ़ रत्ती का अवश्य हो।

नीलम : शनिवार के दिन पंचधातु या स्टील की अंगूठी में जड़ाकर उपर्युक्त विधि से पूजन कर मध्यमा अंगुली में इसे धारण करे। मंत्र की जप संख्या २३००० है।

रत्नों की धारण विधि

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

नीलम को धारण करने में अत्यधिक सावधान रहना पड़ता है। इसका फल दो तीन या कभी-कभी कुछ घण्टों में ही प्राप्त हो जाता हे। इसे विधिपूज कर नीले कपड़े में बांधकर ऐसे ढंग से रखें कि यह शरीर का स्पर्श कर सके। किसी प्रकार की अशान्ति या अप्रिय स्वप्न आने से इसे वापस कर देना चाहिये।

इसी प्रकार राहु की शांति के लिए गोमेद अष्ट धातु या चांदी की अंगूठी में जड़ाकर पूजनोपरान्त सायंकाल के दो घंटे बाद धारण करें, इसका वजन कम से कम ६ रत्ती होना चाहिये।

'ॐ रां राहवे नमः' मंत्र का जाप १८००० करना होता है।

केतु का रत्न वैदूर्य या लहसुनिया है। शनिवार को चांदी की अंगूठी में जड़ाकर विधिपूर्वक पूजन करे तथा उसी दिन १७००० मंत्रो का जाप कर कनिष्ठिका अंगुली में अर्द्धरात्रि के समय धारण करे। मंत्र इस प्रकार है :

"ॐ कें केतवे नमः"

स्मरण रहे कि रत्नों के रंग सूर्य के सातों रंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, अंगूठी में जो भी रत्न जड़े जाएं वे शरीर का स्पर्श कर सके इसका ध्यान रखना चाहिये।

रत्नों की धारण विधि

ग्रह शान्ति हेतु जड़ी बूटियां

ग्रह शांति के लिए हमारे ऋषियों ने जड़ी बूटियों को धारण करने का निर्देश दिया है। ये जड़ी बूटियाँ भी रत्नों का प्रभाव रखती हैं।

सूर्य के लिए : इसकी शांति के लिए गुलाबी डोरे में बेल की जड़ बांधकर रविवार को धारण करें।

चन्द्र के लिए : खिरनी की जड़ सफेद डोरे में बांधकर सोमवार को धारण करें।

मंगल के लिए : अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में बांध कर मंगलवार को धारण करें।

बुध के लिए : विधारा की जड़ हरे डोरे में बांधकर बुधवार को धारण करें।

बृहस्पति के लिए : भारंगी या केले की जड़ पीले डोरे में बांध कर बृहस्पतिवार को धारण करें।

शुक्र के लिए : सरपोंखा की जड़ सफेद डोरे में बांधकर शुक्रवार को धारण करें।

शनि के लिए : बिच्छू की जड़ काले डोरे में बांधकर शनिवार को धारण करें।

राहु के लिए : सफेद चंदन नीले डोरे में बांध कर बुधवार को धारण करें।

केतु के लिए : असगंध की जड़ आसमानी डोरे में बांध कर गुरुवार को धारण करें।

इस स्थल पर यह प्रश्न स्वाभाविक है कि ये रत्न हम पर प्रभाव कैसे डालते हैं? इसका वैज्ञानिक उत्तर यही है कि जब रत्न पर उससे सम्बन्धित ग्रह की रश्मियां या ऊर्जा आती है तो वे उस रत्न की बनावट के कारण समेकित (Concentrated) हो जाती है और वे हमें प्रभावित करती है। जिस प्रकार षटकोणीय शीशा सूर्य के सामने करने से कागज आदि पर आग लग जाती है।
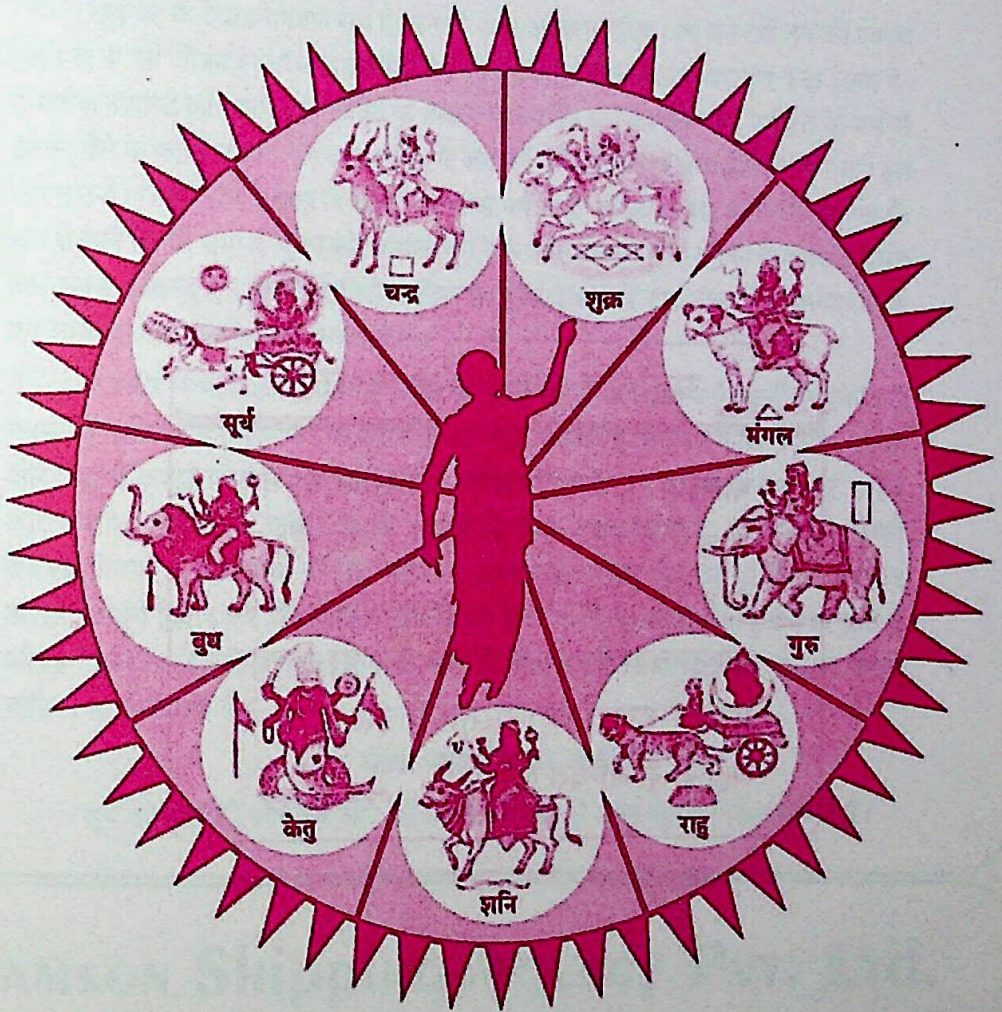
ग्रहों पर आधारित कथाऐं

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

भारतीय शास्त्रों में सभी ग्रहों से सम्बन्धित प्रेरक एवं लोककल्याणकारी कथाऐं हैं। ये प्रेरक कथाऐं हमें ग्रहों से सम्बन्धित क्या कार्य करना चाहिये एवं क्या नहीं, इन पर विशेष प्रकाश डालती हैं। प्रस्तुत है इस खण्ड में ग्रहों से सम्बन्धित कथाऐं।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

सूर्य ग्रह की कथा

सूर्य ग्रह के देवता भगवान सूर्य हैं। उनकी कथा अत्यन्त पवित्र तथा मन एवं तन को स्वस्थ रखने वाली एवं जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष को देने वाली है। उन्हें साक्षात नारायण कहा जाता है। वे सकल ब्रह्माण्ड की आत्मा एवं शक्ति के अक्षय भण्डार हैं। कश्यप की पत्नी अदिति के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण उनका नाम आदित्य है। वे जब गर्भ में थे तो उनका तेज आदिति हो गया। इस कारण उन्हें कश्यप ऋषि ने शाप दिया कि यह अण्ड गर्भ में ही मर जाए। इस कारण वे मार्तण्ड के नाम से जाने गए हैं। समस्त भुवन को भास्वित करने के कारण भास्कर भी उनका नाम पड़ा। उनके नाम अनेक हैं किन्तु १२ नामों की विशेष महिमा है। हमारे शास्त्रों में उनसे सम्बन्धित अनेक प्रेरक एवं लोक कल्याण करने वाली कथाएं हैं।

वे शरीर स्थित पित्त के स्वामी हैं। सृष्टि के सातों रंगों के वही उद्भव है। उन्हीं के प्रकोप से मनुष्य को अनेक रोग विशेष कर त्वचारोग कुष्ठादि तक हो जाते हैं। वे परम पवित्र हैं अत: उनकी ओर कोई भी अशुद्ध पदार्थ फेंकना नहीं चाहिये। विशेषकर उनकी ओर मुंह करके न थूकना चाहिये और न शौच आदि करनी चाहिये, इसका बड़ा ही वैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। कारण कि सूर्य की तेजस्वी किरणों से इन पदार्थों के दोष परावर्तित होकर हमारे शरीर एवं मन पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। सूर्य विशेष कर प्रात:कालीन किरणों का सेवन करने से अनेक रोगाणु नष्ट हो जाते हैं और हमें विटामिन डी की अनायास प्राप्ति हो जाती है। लेकिन सूर्य का सेवन हमेशा पीठ पर करना चाहिए। कहा भी गया है–

सेइअ भानु पीठि उर आगी।

सूर्य को पीठ की ओर एवं आग को सामने की ओर से सेवन करना विज्ञान सम्मत है।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

सूर्य ग्रह की कथा

सृष्टि की समस्त ऊर्जा का स्रोत सूर्य ही है। इनकी उपासना से अनेक विघ्नों एवं शारीरिक व्याधियों "आदित्य हृदयं स्रोत" का पाठ करने को कहा। राम को इससे सफलता मिली जो व्यक्ति इस स्रोत का श्रद्धापूर्वक पाठ करता है वह विजयश्री एवं हर प्रकार की सफलता का वरण करता है। यह स्रोत श्रीमद् बाल्मीकि रामायण के लंका काण्ड में है। इसके पाठ से हर प्रतिकूलता अनुकूल बन जाती है।

इनसे सम्बन्धित दूसरी प्रेरक कथा श्री कृष्ण के पुत्र साम्ब से सम्बन्धित है। साम्ब को अपने शारीरिक सौन्दर्य पर अत्यधिक गर्व था। उन्होंने जानबूझ कर सूर्य का अपमान कर दिया। इसलिए सूर्य की महादशा के कारण अनेक सारे शरीर में कुष्ठ हो गया। कोई भी उपचार काम नहीं आया। तब ऋषियों की सलाह से उन्होंने परम पवित्र प्रभास क्षेत्र में पवित्र भाव से रविवार के दिन से सूर्य की अर्चना प्रारम्भ की। सूर्य की मूर्ति बनाकर लाल गुलाबों से उनका अभिषेक किया और माणिक्य के रंग के कपड़े पहनना प्रारम्भ किया। वे दिन भर उसी आदित्य हृदयं स्रोत का पाठ करते थे और सन्ध्या समय सूर्य को जल देकर केशर युक्त खीर का भोजन करते थे। नमक का सेवन बन्द कर दिया था। चर्म रोगों में केसर का अद्वितीय प्रभाव पड़ता है और कुष्ठ के शमन के लिए नमक का त्याग करना पड़ता है।

उन्होंने सूर्य मंत्र से अभिमंत्रित कर माणिक्य भी धारण किया था। इस प्रकार उनकी साधना एवं पवित्र जीवन यापन से उनका शरीर नीरोग हो गया।

एक अन्य कथा अभी १०० वर्ष पूर्व की है। रीवा नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह सूर्य की महादशा के कारण कुष्ठरोग से ग्रस्त हो गए थे। उनके शरीर से असह्य दुर्गन्ध निकलती थी, इसी

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

सूर्य ग्रह की कथा

कारण उनका सार्वजनिक जीवन समाप्त हो गया था। महान साधक पं० प्रणवनाथ ने विधिवत सूर्य नारायण की साधना उनसे करने को कहा। प्रसाद में नमक रहित भोजन एवं केशर युक्त खीर ग्रहण करने को कहा। महाराज सारे शरीर पर केसर एवं वाकुची का लेप लगाते थे। खिरनी नामक फल सूर्य को अर्पित करके सूर्यास्त के बाद केवल एक बार खीर खाते थे। एक वर्ष के अन्दर उनका शरीर एकदम नीरोग हो गया।

हनुमानजी ने भी सूर्य साधना करके उनके ही समान तेजस्विता प्राप्त की थी। सूर्य को निगलने वाली कथा उनके साथ इसी प्रतीक के रूप में जुड़ गई। इस प्रकार सूर्य की महिमा को जो सुनता है और नियमानुसार सूर्य साधना करता है वह नीरोग परम बलशाली एवं हर प्रकार के वैभव से सम्पन्न हो जाता है।

अभी अभी समाचार पत्रों में गत वर्ष एक समाचार छपा था। गुजरात के एक साधक ने ३५ वर्षों से अन्न जल नहीं ग्रहण किया। वे समस्त ऊर्जा सूर्य साधना के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं। उन्हें किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं है। अनेक डाक्टरों ने उनके स्वास्थ्य की जाँच की पर कोई कमी नहीं पाया।

इस प्रकार सूर्य देव की अपरम्पार महिमा है। सूर्य देव की इस कथा का यही सार है कि हमें जीवन में सूर्य की भाँति निरन्तर गतिशील रहना चाहिये। लोक के कल्याण के लिए सर्वदा तत्पर रहकर हर प्रकार के अंधकार को दूर कर प्रकाश की उपासना करनी चाहिये। सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त तक केवल कर्म करने चाहिये और सोना नहीं चाहिये। वातावरण को दूषित नहीं करना चहिये। तभी हमें सूर्य देवता की कृपा प्राप्त होती है।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

चन्द्रदेव (सोम देवता) की कथा

चन्द्रमा पृथ्वी का निकटतम पड़ोसी है। अत: यह पृथ्वीवासियों को सर्वाधिक प्रभावित करता है। त्रेता युग में एक ऋषि हुए जिनका नाम ही चन्द्रमा था। वे चन्द्रवदेव के उपासक थे। उन्होंने ही बताया कि चन्द्रमा पृथ्वी का भाई है और हम पृथ्वीपुत्र इसीलिये उसे मामा कहते हैं। विज्ञान के अनुसार भी आज प्रशान्त महासागर (Pacific Oceane) है उसी का भाग टूट कर चन्द्रमा बन गया। इसलिए यदि हम शास्त्र के अनुसार आचरण करते हैं तो चन्द्रमा की पूर्ण कृपा हमें प्राप्त होती है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की दशमी तक चन्द्रमा क्षीण रहता है। यह अशुभ फल को देने वाला है। अत: इस अवधि में हमें किसी शुभ कार्य का प्रारम्भ नहीं करना चहिये। इसके विपरीत शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्णपक्ष की पंचमी तक यह पूर्ण रहता है, अत: शुभ माना गया है।

दूसरी जाति वैश्य है अत: वैश्य जाति वाले यदि नियमानुसार चन्द्रमा की उपासना करते हैं तो उन्हें विशेष शुभता प्रदान करता है। यह औषधियों का, रसों का, चांदी, तरल पदार्थों, मोती आदि का स्वामी है, इसकी उपासना हमें माता-पिता का सुख, सम्पत्ति, प्रसन्नता एवं राजा की अनुकूलता प्रदान करती है। लोभ की मात्रा बढ़ने से व्यक्ति चन्द्र के प्रकोप से कफ रोगों से ग्रस्त हो जाता है। वैसे यह बड़ा ही सौम्य ग्रह है।

चन्द्रमा मुनि ने आगे बताया कि प्रति सोमवार को चन्द्रमा की पूजा श्वेत पुष्पों चावल खीर आदि से करनी चाहिये। जो व्यक्ति पूर्ण चन्द्र के प्रकाश में खीर बनाकर रात भर रखता है और प्रात: समय चन्द्रदेव को नमस्कार कर उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करता है वह सर्वदा स्वस्थ रहता है तथा दमारोग से उसे मुक्ति मिलती है। चन्द्रदेव की पूजा भी अत्यन्त सरल है। चांदी की अंगूठी में मोती जड़वाकर शुक्ल पक्ष के सोमवार को चन्द्र दर्शन करके उसे धारण करे तथा निम्नांकित मंत्र का यथा सम्भव जप करे।

ॐ सों सोमाय नम:

यदि मोती सुलभ न हो तो खिरनी की जड़ सफेद धागे में इसी विधि से धारण करे। मन को विकार मुक्त रखे। लेकिन ध्यान रहे कि मोती के साथ पन्ना, नीलम, गोमेद एवं वैदूर्य न धारण करे।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

चन्द्रदेव (सोम देवता) की कथा

चन्द्रमा मुनि ने आगे बताया कि देवदन्त नामक वैश्य की कथा अत्यन्त प्रेरक है, श्रद्धापूर्वक उसको सुनना चाहिये।

उज्जयिनी नगरी में देवदत्त नामक एक धनी नगर श्रेष्ठ था। एक दिन उसने शीघ्रता में चन्द्रदेव की ओर मुंह करके लघुशंका कर दी। संयोग से वह दिन सोमवार का था और पूर्णिमा भी थी। चन्द्रदेव से जो अमृतवार्षिणी किरणें पृथ्वी को संजीवनी सुधा लुटा रही थी वे दूषित पदार्थ के संयोग से विषवर्षिणी हो गई और उन विषाक्त अणुओं के प्रभाव से देवदत्त क्षय रोग से ग्रस्त हो गया। शारीरिक अस्वस्थता के कारण उसका व्यापार भी चौपट हो गया और उसका मन अशांत होकर अनेक मानसिक रोगों से ग्रस्त हो गया।

अंत में वह ब्रहर्षि वशिष्ठ की शरण में आया। त्रिकालदर्शी ब्रह्मर्षि सब कुछ जान गए। उन्होंने कहा- "तुम्हारे ऊपर चन्द्रमा की महादशा आ गई है। इसके परिहार एवं चन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए तुम चन्द्रायण व्रत करो। संयोग से कल ही शरद पूर्णिमा है। इस दिन चन्द्रदेव अपनी पूर्णकला के साथ प्रकट होते हैं। तुम प्रात: ही चन्द्रदेव की पूजा सफेद वस्त्र धारण कर श्वेत पुष्पों, अक्षत एवं श्वेत चन्दन से उनकी पूजा करो। दिन भर व्रत रखो। रात्रि को खीर बना कर चांदनी में रख दो और दूसरे दिन चन्द्रदेव को नमस्कार कर उस खीर को प्रसाद रूप में ग्रहण करो। गरीबों को श्वेत वस्त्र, घृत, दूध, चावल, चीनी आदि का यथा शक्ति दान करो। यह व्रत पूरे एक मास तक करो। चन्द्रदेव की अपार कृपा तुम्हें प्राप्त होगी।

देवदत्त ने विधि पूर्वक वैसा ही किया और वर्ष में ही वह महादारुण क्षय रोग से मुक्त हो गए। उनकी समृद्धि भी लौट आयी। देवदत्त की कथा सुनकर राजा ने भी वैसा ही किया और वह भी पूर्ण स्वस्थ होकर राज्य सम्पदा से युक्त हो गया।

चन्द्रदेव की यह कथा परम पवित्र है। जो मन से ही इस महिमा का स्मरण करता है उसे चन्द्रदेव की अनुकूलता प्राप्त होती है।

इस कथा के बहाने हमें वातावरण एवं मन को शुद्ध रखने की शिक्षा मिलती है।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

मंगल की कथा

मंगल ग्रह का पृथ्वी से विशेष सम्बन्ध है। इसीलिए इसका एक नाम भौम भी है। यह एक उग्र ग्रह है। इसका प्रकोप व्यक्ति को रक्त सम्बन्धी बीमारी, कलह, आघात, निर्धनता एवं कायरता आदि का प्रदाता है। यह युद्ध प्रिय होता है।

मंगल से सम्बन्धित कई कथाएं प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध है। ज्योतिष शास्त्र में इसकी शान्ति के अनेक उपाय कहे गए हैं। एक कथा इस प्रकार है।

प्राचीन समय में विदर्भ देश का एक राजा सुबाहु था। मंगल के प्रकोप से वह राज्यभ्रष्ट हो गया था और उसक सम्पूर्ण शरीर रक्त विकार से ग्रस्त हो गया था। उसमें साहस नहीं था कि वह अपने शत्रुओं का सामना कर सके। वह अत्यन्त दीन अवस्था में जंगल में भटक रहा था। संयोग से उसकी भेंट आत्ममुनि नामक एक तपस्वी से हुई। राजा ने उस तपस्वी के चरण पकड़ कर अपनी दुर्दशा का वर्णन किया। दिव्य दृष्टि सम्पन्न तपस्वी ने जान लिया कि राजा पर मंगल का प्रकोप है। उन्होंने राजा की पूर्व दिनचर्या पूछी। राजा ने कहा कि उसने बड़ा ही असंयमित जीवन व्यतीत किया है। वह प्रतिदिन मांसाहार करता है। मंगलवार को भी पवित्र जीवन नहीं व्यतीत करता है। वह मंगलवार को अपने केश एवं नाखून को काटता था। तामसी आहार के कारण उसे अत्यधिक क्रोध आता था और क्रोध के कारण उसकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो गई। सारा शरीर रक्त विकार सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त हो गया। अवसर देख कर पड़ोस के राजा ने आक्रमण कर उसका राज्य भी छीन लिया। इस विपत्ति में सारे सगे सम्बन्धी सेना यहां तक कि परिवार वाले भी उससे विमुख हो गए।'' इतना कह कर राजा विलाप करने लगा।

राजा की कथा सुनकर वे तपस्वी द्रवित हो गए। उन्होंने कहा– राजन् ! तुम्हारे तामसी जीवन के कारण ही मंगल देवता कुपित हो गए। यह सब उन्हीं का कोप है।''

राजा ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि क्या मंगल देवता की शांति का उपाय है। तपस्वी ने कहा–''जगत नियन्ता ने जितनी आधि-व्याधियां बनाई है उनका उपाय भी बताया है। संसार में रोग है तो

मंगल की कथा

उनकी दवा भी है। ध्यान पूर्वक सुनो। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व एक धनी वैश्य श्रुतिवाहु था। उसके भ्रष्ट आचार व्यवहार के कारण मंगलदेव उस पर कुपित हो गए। वह हर प्रकार से दीन हीन बन गया। फिर एक सिद्ध पुरुष ने उससे नियमपूर्वक मंगल का व्रत एवं पूजन करने को कहा। श्रुतिवाहु बताए गए विधान के अनुसार प्रति मंगलवार को मंगलदेव की उपासना करने के साथ मंगल का निम्नलिखित मंत्र जपने लगा–

ॐ अं अंगाकारय नमः

तपस्वी ने बताया कि अगर मिल सके तो मंगलवार को मूंगा खरीद लो और सोने की अंगूठी मे जड़वा कर उपर्युक्त मंत्र का एक हजार जप करके शुक्ल पक्ष में मंगलवार के दिन सूर्योदय के एक घंटे के बाद अनामिका में धारण करो। यदि मूंगा सुलभ न हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में बांधकर उसी विधि से धारण करो। मंगलवार को व्रत रखो और मंगल देवता की लाल पुष्पों, सिन्दूर आदि से पूजन करो तथा यथा शक्ति लाल रंग के अनाज (मसूर आदि) लालवस्त्र आदि का दान गरीबों को दो, लाल गाय को पुआ खिलाओ। श्रुतिवाहु ने उसी विधि से मंगल की उपासना प्रारम्भ कर दी। कुछ ही दिनों में उसका शरीर नीरोग हो गया और खोई हुई सम्पत्ति भी मिल गई।

राजन! तुम भी यही करो। तुम्हारा कल्याण होगा। राजा ने भी श्रुतिवाहु के अनुसार मंगल की उपासना प्रारम्भ कर दी। एक वर्ष में ही राजा नीरोग हो गया और उसके सेनापति ढूंढ़ते हुए आए और कहा– महाराज! आपकी सेना ने संगठित होकर शत्रुओं को भगा दिया है। महारानी भी आपके वियोग में दुखी है, चलिए और अपना राज्य संभालिए। राजा ने मंगलदेव को प्रणाम किया और पुनः पूर्व की भाँति प्रतिष्ठित हो गया। सचमुच मंगल देवता यदि अनुकूल होते हैं तो न केवल सम्पत्तिवान बनाते हैं बल्कि व्यक्ति में साहस वीरता आदि के भाव भर देते हैं। हां इनकी कृपा पाने का उपाय है सात्विक जीवन, घृणा, क्रोध एवं पापाचार से दूर रहना।

ग्रहों पर आधारित कथाएं

बुध ग्रह की कथा

बुध ग्रह सौरमण्डल का सबसे छोटा ग्रह एवं सूर्य का निकटतम पड़ोसी है। अत: इस पर सूर्य का अधिक प्रभाव पड़ता है। इसका रंग हरा एवं इसका तत्व पृथ्वी है। पृथ्वी पर होने वाली वनस्पतियों का रंग भी हरा है। अत: पर्यावरण संरक्षण में इस ग्रह की अहम भूमिका होती है। वैसे यह शुभ ग्रह है पर शुभ ग्रहों के साथ शुभ एवं अशुभ ग्रहों के साथ विपरीत फल देता है। इसका प्रभाव क्षेत्र नाभि प्रदेश होता है तथा इसके प्रकोप से वात, पित्त एवं कफ सम्बन्धी रोग होते हैं। यह गुप्त रोग एवं संग्रहणी का भी कारक होता है।

इसके सम्बन्ध में एक कथा है। प्राचीन समय में विदर्भ देश में बभ्रुवह्नि नाम का एक अत्यन्त प्रतिष्ठित नगर श्रेष्ठ था। उसकी सम्पन्नता की कोई सीमा नहीं थी। किन्तु कर्मवश लाभ को और अधिक बढ़ाने की लालसा ने उसे कफ जनित रोगों से ग्रस्त कर दिया। कप के प्रकोप से वह क्षय रोग से ग्रस्त हो गया। वात प्रकोप के कारण वह लकवा एवं अन्य रोगों से अत्यधिक पीड़ित होने लगा। अपनी इस दशा के कारण उसको क्रोध भी अधिक आने लगा। इससे उसके सहायक एवं परिवार वाले भी उससे विमुख हो गए।

धीरे धीरे वह पैरों के रोग से ग्रस्त हो गया। उसका व्यापार भी नष्ट प्राय हो गया। इससे उसकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो गई। संयोग से उसकी भेंट एक सिद्ध पुरुष से हो गई। दोनों ही तीर्थ यात्रा हेतु निकले थे। नैमिषारण्य में दोनों एक ही धर्मशाला में ठहरे। रात को अवसार पाकर बभ्रुवह्नि ने अपनी सारी व्यथा बताई। उस सिद्ध पुरुष ने अन्तर्दृष्टि से विचार कर देखा कि नगर श्रेष्ठ का बुध पाप राशि में आ गया है। बुध मनुष्य की कल्पना एवं भावना का स्वामी होता है, जब वह ग्रह अशुभ राशि में होता है तो मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। उससे लोभ-काम-क्रोध आदि मानसिक विकार बढ़ जाते हैं। इससे क्रमश: कफ, वात, एवं पित्त कुपित हो जाते हैं और व्यक्ति त्रिदोष जनित आधि व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

बुध ग्रह की कथा

प्रात:काल उस साधक पुरुष ने बभ्रुवह्नि को स्नानादि करने के पश्चात बुध देवता की महिमा एवं उनके प्रभाव को बताया और कहा कि प्रत्येक बुधवार को हरे रंग के आसन पर हरा वस्त्र ओढ़ कर बुध देव का पूजन हरे पुष्पों या पुष्प न मिलने से हरे पत्तों आदि से श्रद्धापूर्वक पूजन कर इस मंत्र का ९००० हजार जप करना चाहिये। मंत्र इस प्रकार है–

ॐ बुं बुधाय नम:

सुविधा होने पर पन्ना चांदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के बुधवार को कनिष्ठा अंगुली में धारण करना होता है। हां इसके साथ मोती एवं मूंगा न पहने। यदि पन्ना न मिले तो उसी प्रकार विधारा की जड़ हरे डोरे में पहनने से भी वही लाभ मिलता है। बुध देवता बड़े ही सौम्य स्वभाव के होते हैं। शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं।

बभ्रुवह्नि बुध देव की कथा सुनकर बहुत प्रसन्न हो गए। घर आकर उन्होंने बताए गए नियमों के अनुसार बुधदेव की पूजा अर्चना प्रारम्भ की। धीरे-धीरे उनके शारीरिक विकार भी ठीक हो गए और बुध देव की कृपा से समस्त मानसिक दोषों का शमन हो गया।

उस सिद्ध पुरुष ने बबुबुह्नि को वरदान दिया कि जो भी तुम्हारी यह कथा सुनेगा उस पर बुध देवता की कृपा होगी और बुध सम्बन्धी दोषों का परिहार होगा।

इस कथा का यही सार है कि षट्विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर एवं मिथ्याभिमान से दूर रह कर मन से सात्विकता का वरण करना चाहिये।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

वृहस्पति की कहानी

प्राचीन समय में एक राजा था। वह सात्विक विचारों एवं परोपकार में सदा लीन रहता था। गरीबों को दान देना उसकी दैनिक प्रवृत्ति थी। इसी कारण उसके महल के बाहर याचकों की भीड़ लगी रहती थी। लेकिन उसकी रानी को यह सब अच्छा नहीं लगता था। एक दिन राजा शिकार के लिए वन में गया। नित्य की भाँति याचक गण द्वार पर आ गए। रानी ने उन सबको भगा दिया। थोड़ी देर के बार वृहस्पतिदेव एक साधु का वेश धारण कर आए और कुछ चायना की। रानी क्रोध से निकली और कहा– "देना-लेना मेरा काम नहीं है। मैं तो इन भिखमंगों से त्रस्त हो गई हूँ। साधु ने कहा- रानी ऐसा मत कहो। लोग सम्पत्तिवान से ही मांगते हैं। रानी ने तिरस्कार करते हुए कहा– "अच्छा है कि मेरी सम्पत्ति नष्ट हो जाए। फिर कोई भी पेशाब करने नहीं आएगा।

साधु ने कहा– "रानी पुत्र एवं सम्पत्ति की सभी कामना करते हैं। तू क्रोध में उल्टा बोल रही है। सोच ले।" रानी ने कहा– "मैं तुम सबसे बहुत परेशान हो गई हूँ। इससे बचने का एकमात्र यही उपाय है कि यह सम्पत्ति नष्ट हो जाए।" साधु ने कहा– तेरी इच्छा अगर ऐसी है तो यही होगा।" इतना कहकर साधु चला गया।

बृहस्पति के प्रकोप से राजा वन में भ्रमित हो गया और थोड़े ही दिनों में राज महल की समस्त सम्पत्ति नष्ट हो गई। कुछ दिनों के पश्चात राजा जीण-शीर्ण अवस्था में वापस आया। अब स्थिति यह हो गई कि पूरे राज-परिवार को भूखों मरने की नौबत आ गई। कभी-कभी तो केवल जल पीकर ही रह जाना पड़ता था। परिवार की यह दीन दशा देखकर राजा अपना देश छोड़कर चला गया और रानी की अवस्था दिन प्रतिदिन और दयनीय होती चली गई।

ग्रहों पर आधारित कथाएं

वृहस्पति की कहानी

रानी की एक बहन थी जो अत्यधिक सम्पन्न थी। एक दिन रानी ने अपनी एक दासी को उसके पास भेज कर मात्र थोड़ा बहुत अनाज लाने को कहा। दासी वहां गई और अनाज की याचना की। पर रानी की बहन उस दिन वृहस्पति देव का पूजन कर रही थी। बृहस्पति का पूजन जब तक पूर्ण न हो जाए तब तक न आसन से उठा जाता है और न बोला जाता है। दासी ने समझा कि रानी की बहन ने उसकी याचना पर ध्यान नहीं दिया अत: वह निराश होकर वापस लौट आई और रानी को सब कुछ बता दिया। रानी ने इसे अपना दुर्भाग्य समझ कर कहा– विपत्ति में अपने भी पराए हो जाते हैं।

उधर रानी की बहन जब पूजन कर चुकी तो उस दासी को न देखकर काफी अनाज लेकर अपनी रानी बहन के पास आयी और कहने लगी– मैं बृहस्पति देव का पूजन कर रही थी। पूजन में बोला नहीं जाता है, फिर उसने रानी को बृहस्पति देव की पूजन विधि एवं उसकी महिमा बतलाई। कथा सुनकर रानी का अज्ञान नष्ट हो गया और उसने पूजन की। विधि पूछी। बहन ने कहा– प्रत्येक बृहस्पतिवार को पवित्रता के साथ पीले वस्त्र धारण करके भगवान विष्णु एवं केले का पूजन किया जाता है। भोजन एक बार किया जाता है। उसमें भी पीले रंग का महत्व है। चने की दाल, कढ़ी एवं चने की रोटे खाई जाती है। बृहस्पति देव को पीले फूल एवं हल्दी रंगे पीले चावल चढ़ाए जाते हैं। तथा यथा शक्ति निम्नालिखित मंत्र का जप करते हुए शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार को पुखराज तर्जनी में धारण करें।

ॐ बृं वृहस्पतए नम:।

पुखराज सुलभ न होने पर भारंगी या केले की जड़ पीले धागे में धारण करें।

ग्रहों पर आधारित कथाएें

वृहस्पति की कहानी

रानी ने भी वृहस्पतिदेव का व्रत करने का निश्चय किया, तब उनकी बहन ने कहा कि मैं अनाज ले आई हूँ। लाओ कोई बड़ा बर्तन उसमें रख दे। रानी ने दासी से बर्तन लाने को कहा दासी भीतर गई। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। सभी बर्तन अनाज से भरे हुए थे। उसने आकर बताया तो बहन ने कहा– यह सब वृहस्पति देव की कृपा है।''

रानी भी वृहस्पतिदेव का पूजन करने लगी, उधर पूजा के प्रभाव से राजा की बुद्धि भी शुद्ध हो गई और वह वापस आ गया। दोनों के दिन आनन्द से कटने लगे।

इसी प्रकार एक सात्विक ब्राह्मण था। पर उसकी पत्नी कोई धर्म नहीं मानती थी। अत: उस पर भी अनेक विपत्तियां आ गई। उसके एक सुन्दर कन्या थी जो वृहस्पतिदेव की उपासिका थी। जब वह बड़ी होकर विद्यालय जाती तो मुट्ठी में अनाज लेकर रास्ते में बिखराती जाती थी। लौटने पर वह उन दानों को उठा लेती। वे सभी सोने के हो जाते थे। उन्हें सूप से पछोर कर साफ कर लेती। एक दिन उसकी मां ने का– अरी इन्हें सोने के सूप में साफ करना चाहिये। संयोग से उसे एक दिन वृहस्पतिदेव की कृपा से सोने का सूप भी मिल गया। एक दिन एक राजकुमार ने उसे ऐसा करते देखा तो राजा से उसी के साथ विवाह करने की जिद की। सौभाग्य से विवाह हो गया। एक निर्धन परिवार की लड़की वृहस्पतिदेव की कृपा से रानी बन गई। पर उसने वृहस्पतिदेव का पूजन नहीं छोड़ा।

इन दोनों कथाओं का सार यह है कि कभी भी दान पुण्य से मुंह मोड़ना नहीं चाहिए। किसी का भी निरादर नहीं करना चाहिये तथा शुद्ध सात्विक वृत्ति के साथ स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिये।

ग्रहों पर आधारित कथाएं

शुक्र की कहानी

सौर मण्डल का सबसे चमकीला ग्रह शुक्र है। इसी कारण इसका प्रभाव भी मानव की प्रज्ञा कल्पना शक्ति एवं काम शक्ति पर सर्वाधिक पड़ता है। यह भोग विलास, राज्य सुख, कल्पना व कवित्व शक्ति का दाता है पर अशुभ स्थान होने पर विपरीत फल भी देता है। मनुष्य के मस्तिष्क, उदर तथा वात कफ एवं पित्त का अधिपति है।

इसकी कहानी अत्यन्त रोचक है, दैत्यों के गुरु एवं संजीवनी विद्या के ज्ञाता गुरु शुक्राचार्य पर इस ग्रह का नाम पड़ा है। गुरु शुक्राचार्य उपासना कवि थे। उन्हीं के गुणों को यह ग्रह भी धारण करता है। हाँ, अनुशासन विहीनता, गुरु की अवज्ञा एवं अमर्यादित भोग विलास इन्हें असह्य है। पर पूजा अर्चना से इस ग्रह की प्रतिकूलताएँ लगभग समाप्त हो जाती है। परम तेजस्वी राजा बलि के यज्ञ में यही आचार्य थे। जब भगवन ने वामन अवतार धारण कर राजा बलि से मात्र तीन पग जमीन मांगी तो शुक्राचार्य ने ऐसा न करने को मना किया। राजा बलि ने गुरु की आज्ञा न मानकर तीन पग जमीन दे दिया। बस वामन विराट बन गए और दो ही पगों में सारे लोक नाप लिए। समस्या थी कि तीसरा पग कहां रखा जाए। राजा बलि लेट गए और अपने शरीर पर तीसरा पग रखने को कहा। स्वर्ग चाहने वाले राजा बलि पाताल चले गए। पर श्री हरि को उनका द्वारपाल बनना पड़ा। गुरु की अवज्ञा करने का फल उन्हें मिल गया पर उन्हें वरदान भी मिल गया। इस कथा को श्रद्धापूर्वक श्रवण करने से शुक्रदेव अनुकूल होते हैं।

ग्रहों पर आधारित कथाएं

शुक्र की कहानी

एक दूसरी कथा श्रीमद् बाल्मीकि रामायण में है। राजा दण्डक के अमर्यादित आचरण से उन्हें अपना सर्वस्व खोना पड़ा था। अत: शुक्रदेव को अमर्यादित आचरण बिलकुल पसन्द नहीं है। शुक्र की महादशा होने पर आचार्य पातंजलि ने उपाय सुझाया है। उनके अनुसार शुक्रदेवता की ये कथाएं सुनने व स्मरण करने से उनकी प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा उनका कोप कम हो जाता है। उन्होंने बताया जब भी शुक्र की महादशा हो उनकी महिमा का बखान करने वाली उपर्युक्त कथाएं सुने। शुक्रवार को श्वेत पुष्पों, चावल, दूध, शर्करा से शुक्रदेव का पूजन सफेद वस्त्र धारण करके करें तथा निम्नलिखित मंत्र

ॐ शुं शुक्राय नम:

का १६००० जप कर चांदी की अंगूठी में जड़वाकर अनिष्ठिका अंगुठी में निर्दोष हीरा धारण करें। हीरा न सुलभ होने पर सरपोंखा की जड़ सफेद डोरे में बांधकर धारण करें तथा गरीबों को श्वेत पदार्थ एवं श्वेत वस्त्र यथा शक्ति दान करे। इस प्रकार शुक्रदेव की अनुकूलता प्राप्त होती है।

शुक्रदेव की कथा का यही सार है कि हम जीवन में गुरु का सम्मान करें तथा जीवन में मर्यादा बनाए रखें।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

शनि की कथा

शनिदेव बड़े ही विलक्षण हैं। जिस पर इनकी दृष्टि वक्र होती है वह पूरी तरह बरबाद हो जाता है। किन्तु जिसके अनुकूल हो जाते हैं, उसका बेड़ा पार हो जाता है। सफलता, सम्पन्नता एवं स्वास्थ्य के वरदान उसे अनायास मिल जाते हैं। हां ये अनुकूल तभी होते है जो व्यक्ति सदाचारी, सात्विक एवं परोपकारी होता है।

इनके सम्बन्ध में अनेक कहानियां है। इनके चक्कर में साधारण मनुष्य ही नहीं बड़े-बड़े देवता पड़ गए। विघ्न विनाशक गणेश को देखा तो उनका शीश ही अलग हो गया। राजा दशरथ को देखा तो रानी कौशल्या छिन गई। महान सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को देखा तो बेचारे राजपाट पुत्र परिवार सभी कुछ गवां बैठे। तीनों लोकों को देखने वाले रावण को देखा तो पूरा वंश ही समाप्त हो गया और सोने की लंका खाक हो गई। हां महादरिद्र किन्तु सदाचारी वाराह भूषण पर ऐसी कृपा दृष्टि कि कि वह सर्व रोगों से मुक्त होकर सम्पन्न बन गया।

इन्हें सात्विक विचार एवं आहार ही प्रिय हैं। त्रेतायुग की एक कथा है। कौशल जनपद में वाराह भूषण नामक एक ब्राह्मण था। वह दरिद्र तो था ही साथ-साथ सम्पूर्ण शरीर भयंकर रोगों से ग्रस्त था। हां इतना था कि वह परम सात्विक था। यदा-कदा जो कुछ मिल जाता था उसे गरीबों को दे देता था। अगर खाने को मिल गया तो पहले भिखारियों, कुत्तों एवं कौवों को खिलाता था और स्वयं जल पीकर रह जाता था।

एक दिन भगवान शिव एवं पार्वती उसके पास वेश बदलकर भिखारी के रूप में आए। उनके साथ कई कुत्ते भी थे। वाराह भूषण को कई दिनों के बाद भोजन मिला था। जैसे ही वह खाने बैठा कि सामने से भिखारी के रूप में शिव पार्वती आ गए। उन्होंने भोजन की याचना की। वाराह-भूषण बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपना सम्पूर्ण भोजन उन्हें दे दिया। दोनों भेषधारी देवों ने भोजन ग्रहण किया और जो बचा उसे कुत्तों को दे दिया।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

शनि की कथा

वाराह-भूषण अत्यन्त प्रसन्न था। दोनों भिखारी चले गए। तब तक एक दाता भोजन लेकर आ गया। वाराह भूषण जैसे ही खाने बैठा वे भिखारी फिर आकर भोजन याचना करने लगे। दोनों ने खाया और जो बच गया उसे कुत्तों और कौवे को खिला दिया। वाराह-भूषण को कोई रोष नहीं था।

इस प्रकार ७ बार यह घटना दुहराई गई। पर वाराह-भूषण परम प्रसन्न था। थोड़ी देर बाद शिव पार्वती की प्रेरणा से एक काला कलूटा व्यक्ति आया और वाराह-भूषण से बोला– तुम परीक्षा में पूर्ण सफल हुए। अब जो इच्छा हो वरदान मांग लो।'' वाराह-भूषण ने विनम्रता से परिचय पूछा तो उसने अपना परिचय शनिदेव के नाम से दिया। शनिदेव का नाम सुनते ही वाराह-भूषण अनिष्ट की आशंका से कांप गया। उसे आश्वस्त करते हुए शनिदेव ने कहा विप्रवर मुझसे डरने की कोई बात नहीं है। मै केवल तामसी प्रवृत्ति वालों पर ही अपनी वक्रदृष्टि डालता हूँ। तुम तो आचार-विचार खान-पान आदि से पूर्ण सात्विक हो। संयोग से आज शनिवार भी है। तुम यह नीलम लो और आज के दिन अगले शिनवार से सूर्यास्त के दो घंटे पूर्ण मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी में जड़वाकर यह पहन लेना और यथाशक्ति इस मंत्र का जाप करना

ॐ शं शनिश्चराय नमः

हां इस नीलम के बदले बिच्छू की जड़ काले धागे में बांधकर धारण कर सकते हो। साथ ही हनुमान जी की भी उपासना करना। तुम्हारा शरीर एक दम निरोग हो जाएगा तथा सुख सम्पदा की कमी न होगी।''

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

शनि की कथा

जब तक वाराह भूषण कुछ बोलता शनिदेव अन्तर्धान हो गए थे। उन्हीं के उपदेशानुसार वाराह भूषण ने अपने जीवन का नियम बना लिया।

थोड़े ही दिनों में वह पूर्ण निरोग एवं सम्पन्न हो गया पर अपनी परोपकार की प्रवृत्ति को नहीं छोड़ा। हर शनिवार वह काले पदार्थों का दान करता था और कौवों, कुत्तों व चींटियों को नियमित भोजन देता था। एक कथा हनुमानजी के सम्बन्ध में है। एक बार शनिदेव की दशा हनुमानजी पर आ गई। संकोच करते हुए वे परम राम भक्त के पास आये और बताया कि विधि विधान के अनुसार अब मैं तुम पर आ रहा हूँ। अब आप ही बताएं कि मैं तुम्हारे किस अंग में ढाई वर्षों तक सवार होऊं। हनुमानजी ने कहा– तुम मेरे सिर पर सवार हो जाओ। शनिदेव सिर पर सवार हो गए। बस हनुमान जी का सिर उलट गया। वे बड़े-बड़े पत्थरों को उछाल कर सिर पर रोकने लगे। पत्थरों की चोट से शनिदेव कराह उठे और उतरकर भागने लगे।

हनुमानजी ने दौड़ कर पकड़ा और कहा कि तुम्हें ढ़ाई वर्षों तक मेरे सिर पर रहना है। शनिदेव ने कहा कि मेरा अस्तित्व ही नहीं बचेगा। आप मुझे क्षमा कर दें। हनुमानजी ने कहा– मैं तुम्हें इस शर्त पर जाने दूंगा कि आज से तुम मेरे भक्तों को न सताना। शनिदेव ने हामी भरी और भाग खड़े हुए।

इसीलिए शनि के प्रकोप में हनुमानजी की उपासना का विधान है। दशरथ ने जब रजस्वला कौशल्या से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया तब उन पर शनि का प्रकोप हुआ था।

अत: इन समस्त कथाओं का यही सार है कि तामसी आहार विहार एवं सदाचार ही शनिदेव के प्रकोप से रक्षा करते हैं।

ग्रहों पर आधारित कथाऐं

राहु-केतु की कथा

राहु और केतु दुष्ट एवं पाप ग्रह हैं। इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है। ये ग्रह लगभग प्रतिकूल प्रभाव वाले होते हैं पर अनुकूल होने पर श्रेष्ठ लाभ भी देते हैं। इन दोनों ग्रहों के सम्बन्ध में एक बड़ी ही रोचक कथा है।

देवासुर संग्राम में जब देवताओं की निरंतर पराजय हो रही थी तो भगवान विष्णु ने सागर मंथन का आदेश दिया। सागर मंथन से अमृत भी प्राप्त होगा, जिसका पान कर देवता अमर एवं अजय बन जायेंगे। इस अभूतपूर्व आयोजन के लिए असुरों का सहयोग भी आवश्यक था। दोनों सुर-असुर पक्ष सागर-मंथन के लिए तैयार हो गए। सागर मंथन से १४ रत्नों की प्राप्ति हुई थी, जो इस प्रकार हैं–

श्री, धन, रम्भा, वारुणी, अमिय, शंख, गजराज।
धेनु, धनुष, शशि, कल्पतरु, धनवन्तरि विष बाज।।

जब सागर मंथन से अमृत निकला तो भगवान विष्णु ने चालाकी से देवताओं को पिला दिया। पर देवताओं की पंक्ति में भेष बदलकर राहु भी विराजमान हो गया और उस असुर ने अमृत पान कर लिया। यह भेद सूर्य एवं चन्द्रमा ने बता दिया। भगवान विष्णु इससे बहुत क्रुध हुए और उन्होंने अपने चक्र से राहु को दो खण्ड कर दिये। अमृत पीने से राहु मर तो सकता नहीं था उल्टे उसके दोनों भाग जीवित रहे। ऊपरी शीर्ष भाग राहु (Dragon's head) और अधो भाग केतु (Dragon's Jail) के रूप में लोक विख्यात हुए। तभी से ग्रहण काल में राहु चन्द्रमा को तथा केतु सूर्य को ग्रसता है।

राहु तमोगुणी कृष्ण वर्ण का पाप ग्रह है। यह मद का अधिष्ठाता है तथा उदर विकारों से इसका सम्बन्ध माना गया है। इसीलिए ग्रहण काल में भोजन आदि वर्जित हैं। क्योंकि इस ग्रह की विषैली वायु भोजन को दूषित कर देती है जो अनेक उदर रोगों का कारण बनती है। यह कुण्डली में जिस स्थान पर बैठता

ग्रहों पर आधारित कथाएें

राहु-केतु की कथा

है उसी की प्रगति को रोक देता है। इस ग्रह की शांति के लिए कश्मीर की महान ज्योतिर्विद ललने बताया है कि इसका प्रकोप होने पर निम्नलिखित मंत्र का यशा शक्ति जप नीले वस्त्र धारण कर करे–

ॐ रां राहवे नमः

नीले फूलों को अर्पित करे तथा बुधवार को गोमेद धारण करें। गोमेद सुलभ न होने पर उसी विधि से सफेद चंदन नीले डोरे में बांधकर धारण करें। सात्विक भोजन करें। इससे राहु का प्रकोप कम हो जाता है। इसी प्रकार केतु भी कृष्ण वर्ण का पाप ग्रह है। यही ग्रह हाथ, पैर, पेट, चर्म रोगों का मूल है। यह व्यक्ति को अशुद्ध एवं प्रकृति विरोधी खान-पान की ओर उन्मुख करता है। अतः इसकी अर्चना भी विष्णुकांता के पुष्पों से करनी चाहिये। इसका मंत्र इस प्रकार है। इसे गहरे नीले वस्त्र धारणकर जपना चाहिये।

ॐ कें केतवे नमः

तत्पश्चात चांदी की अंगूठी में शनिवार की आधी रात को लहसुनिया (Casts eye) धारण करें। यदि यह सुलभ न हो तो उसी विधि से असगंध (अश्वगंधा) की जड़ को आसमानी डोरे से बांध कर धारण करें।

ये दोनों क्रूर ग्रह हैं अतः इनके प्रकोप से बचने के लिए जीवन में क्रूरता एवं तामसी वृत्तियों का त्याग तथा दीन जनों को दान देना उचित है। इसके अतिरिक्त हनुमानजी एवं काली की उपासना इनके प्रकोप को शान्त करती है।

इस कथा का यही भाव है कि तामस वृत्ति हर प्रकार से निदंनीय है और दया करुणा एवं अन्य मानवीय भाव हितकर हैं।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

सप्ताह के सात दिन होते हैं एवं सभी दिनों का प्रभाव अलग-अलग होता है। सभी दिनों के स्वामी अलग-अलग ग्रह हैं और ग्रह अपना प्रभाव विभिन्न रूप में डालते हैं। इस खण्ड में प्रस्तुत है सप्ताह के सात दिनों से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी आलेख एवं गीतों के माध्यम से।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

रविवार

सप्ताह का प्रथम दिन रविवार होता है। इस दिन की प्रथम होरा सूर्य की होती है। इस दिन का स्वामी रवि है। प्रथम दिन का नामकरण सूर्य या रवि के नाम से इसलिए रखा गया है कि हम इसी दिन से अपनी सप्ताह व्यापी कर्म-यात्रा प्रारम्भ करते हैं। सूर्य समस्त ब्रह्माण्ड का नायक है। समस्त चराचर जगत का आधार है। वह परम ऊर्जावान है। वह विश्व की आत्मा में शक्ति का संचार करता है। इस दिन हम सप्ताह भर की ऊर्जा सूर्य से संग्रहीत करते हैं। सूर्य से दो प्रकार की किरणें (सृजनात्मक एवं ध्वंसात्मक या पराबैगनी) पृथ्वी पर आती हैं। सृजनात्मक किरणे हमारे जीवन में आत्मबल, आरोग्यता, आंतरिक ऊर्जा, वैभव एवं विकास की शक्ति देती हैं। वही ध्वंसात्मक किरणें जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

सूर्य का रंग लाल माना गया है। सूर्योदय के समय सारा जगत सिंदूरी रंग से रंग जाता है। लाल वर्ण ऊर्जा, उत्साह एवं शारीरिक नीरोगता को देने वाला होता है। रविवार को सूर्य की ये शक्तियां विशेष रूप से सक्रिय होती हैं। हम प्रात: काल सूर्य को जल चढ़ाते हैं, इसका वैज्ञानिक कारण हैं। उस समय सूर्य की सृजनात्मक किरणें जल से परावर्तित होकर हमारे शरीर पर पड़ती है जो हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए वरदान होती है। सूर्य पर लाल पुष्प एवं लाल चंदन चढ़ाना भी विज्ञान सम्मत है। सूर्य की प्रकृति पित्त प्रधान है। ये लाल वस्तुएँ अर्पित करने से पित्त संतुलित होता है। पित्त का असंतुलन क्रोध का कारण है- क्रोध पित्त नित छाती जारा। प्रात:कालीन सूर्य अर्चना से हमें विटामिन डी प्राप्त होता है।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

रविवार

सूर्य के सात अश्व ब्रह्माण्ड की सप्त गतियों के प्रतीक है। स्वर, सागर, महाद्वीप एंव ऊर्ध्व लोक भी सात होते हैं। यह रहस्य आत्मसात करने पर हमें निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा प्राप्त होती है। आलस्य को त्यागते हैं। इन्हीं से हमें सांसारिक वैभव भी प्राप्त होते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य की ध्वंसात्मक शक्तियों से बचने के लिए माणिक्य या उपरत्न सूर्यकांत मणि धारण की जाती है। इन रत्नों से ध्वंसात्मक शक्तियों का प्रभाव समाप्त होता है। इस दिन परोपकार की भावना को जाग्रत करने लिए गरीबों को गेहूँ, गुड़, केसर, खस, लाल गाय और माणिक्य (सामर्थ्यानुसार) दान देने का विधान है। इनसे हमारी भावनाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सूर्य हमें संदेश देता है कि जिस प्रकार उसके उदय होने पर कमल खिल उठते हैं उसी प्रकार मनुष्य को भी उल्लास के साथ खिल जाना चाहिये। इससे हम तनाव मुक्त होकर मधुमेह से बचते हैं। रक्त चाप संतुलित रहता है। इस दिन जल से लालचंदन या लाल पुष्प डालकर स्नान करें और अधिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए हमें प्रात: काल कम से कम १०८ बार इस मंत्र का मानसिक जप करना चाहिये।

ॐ घं घृणि: सूर्याय नम:

यह मंत्र आरोग्य दाता है। सूर्य की ओर उन्मुख होकर कोई अशुद्ध पदार्थ नहीं फेंकना चाहिये। मल मूत्र का त्याग तो सर्वथा वर्जित है। कारण कि इन दूषित पदार्थों से परावर्तित होकर जो किरणें हमारे शरीर पर पड़ती है उससे रक्त विकार, श्वेत कुष्ठ रोग होने की सम्भावना रहती है। इससे पर्यावरण की भी रक्षा होती है। इस दिन जवाकुसुम लाल गुलाब के पौधे लगाने चाहिये। इससे परिवार में प्रेम भाव बढ़ते हैं।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

रविवार के गीत

(१)

जीवन में ज्योति भरो
अंतर का बाहर का सघन तिमिर दूर करो।
जाग्रत हो सुप्त शक्ति, विकसित हो भाव भक्ति
आत्मा हो ऊर्ध्वमयी, सृष्टि करो देव मयी
तन मन हो पुष्ट सदा, जीवन में अमृत भरो।।
सकल सृष्टि नायक हो, विश्व के विधायक हो
हे महान ज्योति पुंज सबके सुख दायक हो
हे जग के पालनहार दया करो मया करो।।

(२)

आओ हम धरती पर सूर्य को उतारे।
तोड़े अंधियारे की फौलादी बाहें
कुंकुम से भरे सदा जीवन की राहे
आओ अब किरणों से रात को संवारे।।
ऊर्जा का अक्षय प्रवाह नित बहता है
शक्तिवान बनो नित्य यही कहता है
आओ हम पूरब के द्वार को पुकारे।।
माणिक सा धरती का जीवन हो जगमग
सोए रुद्ध ज्योति स्रोत जाए अंगड़ा कर जग
चलना ही जीवन है थक कर न हारे।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

सोमवार

सप्ताह का दूसरा दिन सोमवार होता है, जिसका स्वामी चन्द्र है। चन्द्रमा की उत्पति मन से हुई है। इसलिए अंग्रेजी में मनडे कहते हैं। इसदिन हम अपूर्व मनोबल एवं आरोग्यता का वरदान लेकर कर्मक्षेत्र में अग्रसर होते हैं। यह दिन मानसिक शक्तियों यथा, प्रेम-करुणा, लोकमंगल, सौन्दर्य बोध, सौम्य भाव आदि जाग्रत करने वाला होता है। यह पृथ्वी के सबसे अधिक निकट है, अत: इसका विश्व जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। सागर भी चन्द्रमा से प्रभावित होकर ज्वार के रूप में अपना उल्लास प्रकट करते हैं। चन्द्रमा का वाहन मृग है जो मन की चंचलता का प्रतीक है। इस दिन का रहस्य जान लेने पर मन में शुभ भावों का विकास होता है तथा उस पर नियंत्रण भी। हम प्रेम भावनाओं को विश्वप्रेम में बदल सकते हैं। चन्द्रमा की ओर भी कोई अशुद्ध पदार्थ नहीं फेंकना चाहिये। ऐसा करने से चन्द्रमा की किरणे क्षय रोग के कीटाणु उत्पन्न करती है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी इसकी पुष्टि की है।

इस दिन श्वेत मोती या चन्द्रकांत मणि पहननी चाहिये। इसका बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। चन्द्रमा सभी बनस्पतियों का स्वामी है। सोमवार एवं चन्द्र की सम्यक उपासना से हमें वनस्पतियों के संवर्धन एवं उनके संरक्षण का संदेश मिलता है। उस दिन अपने घरों में चमेली, बेला, चांदनी के पौधे लगाने चाहिये। श्वेत रंग हमारे मन में उल्लास, आत्म संतोष एवं सात्विकता का संवार करता है। इस दिन जल में सीपी, श्वेत चंदन, श्वेत कमल या चांदी की कोई वस्तु डालकर स्नान करना चाहिये। इससे नीरोगता की प्राप्ति होती है। अपनी क्षमता के अनुसार गरीबों को चावल, चीनी, श्वेत्त वस्त्र घी आदि दान में देनी चाहिये। इस दिन जितना हो सके इस मंत्र का जप करने से विशेष प्रभाव पड़ता है।

ॐ सों सोमाय नम:

पूर्णिमा की रात विशेष कर शरद पूर्णिमा को चन्द्र किरणों से अमृत झरता है। इस रात खीर बनाकर रात भर चांदनी में रखने का विधान है।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

सोमवार के गीत

(१)

मन बने चांदनी
जीवन की वीणा में गूंजे सृजन रागिनी
प्रेम और करुणा से सकल लोक रंजित हों
मन में सौम्य भावों का गीत सदा गुंजित हो
हर धड़कन बने नित्य प्रेम अनुगामिनी।।
फूल वृक्ष तरु लता सबके अनुकूल हो
जीवेम शरदः शतम् जीवन का मूल हो
हर विषम सम बने मधुमय हो यामिनी।।

(२)

मेरा मन बन जाए पूनम का चंन्द्रमा,
जगमग हो जीवन में नवल ज्योति की शमा
शत शत शरदों तक झर-झर झर अमृत झरे
ज्योत्सना अंतर का सकल तिमिर कलुष हरे
आओ हम प्रेम भरी राहों की ओर चले
हर शुभता की ओर आओ आज हमे चले
बन जाए भीतर बाहर सकल विश्व खुशनुमा।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

सोमवार के गीत

(३)

ओ प्रेम न इतने बनो क्रूर।

सांसों में सांस बने फिरते,
अन्तर से रहते दूर दूर।

मन में प्रेमिल उज्ज्वलता है,
पलकों पर सपना पलता है।
कैसी अद्भुत विह्वलताता है,
चंतन हिम रण सा चूर चूर।।

छू लूं प्रकाश की तरल किरण,
सम्पूर्ण बने स्नेहालिंगन।
छवि की छाया हो निरावरण,
इंगित पर नाचे मन मचूर।।

आत्मिक अतृप्ति संवेदन है,
मन सब कुछ पाकर निर्धन है।
कैसा प्रेमी पर यह व्रण है,
यह चिर अभाव ही शीघ्र पूर।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

मंगलवार

सप्ताह का तीसरा दिन मंगलवार होता है। इसका स्वामी मंगल ग्रह है। यह उग्र ग्रह है। इस दिन मंगल ग्रह से ऐसा शक्तिपात होता है जिससे मन में ओज, उत्साह, निर्भयता, वीरता एवं उग्रता के भाव जाग्रत होते हैं। इसका रंग गहरा लाल है। और लाल रंग उग्रता, त्याग, बलिदान आदि भावों को जगाता है। इस दिन का रहस्य जान लेने पर अमंगल समाप्त होते हैं और जीवन में मंगल ही मंगल होते हैं। इस दिन हमें अपने ओज को सृजनात्मक मोड़ देना चाहिये।

दुष्शक्तियों के निवारण हेतु इस दिन लाल मूंगा या उपरत्न तामड़ा (लाल) या संगमूसी धारण करना चाहिये। इन रत्नों का बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मंगल की उपासना लाल वस्त्र धारण करके करनी चाहिये तथा पूजा में लाल पुष्प, मसूर आदि अर्पित करने चाहिये। इससे धैर्य व पराक्रम की वृद्धि होती है। इस दिन गरीबों को लाल वस्त्र या मसूर दालदान में देना चाहिये।

इससे उग्रता का निवारण होता है। इस दिन जल में बेल की जड़, जटामासी, मूसली या लाल पुष्प डालकर स्नान करें। इसका बड़ा ही मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। यह ग्रह युद्ध का भी प्रतीक है। इस दिन और अधिक लाभ पाने के उद्देश्य से लाल वस्त्र धारण कर यथा सम्भव निम्नांकित मंत्र का जप करना चाहिये।

ॐ अं अंगराय नमः

इससे विश्व शांति को बल मिलता है।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव
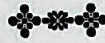
मंगल के गीत

(१)

गर्जना वही है जो कि रक्त को उबाल दे।
वीर है वही कि शीश शत्रु के उछाल दे।
वैसे तो अनेक गीतकार हो चुके यहां
वंदनीय वे हैं जो मशाल तम में बाल दे।।

(२)

बढ़े चलो बढ़े चलो।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमृत्य आर्य वीर हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।।

असंख्य कीर्ति रंश्मियां प्रकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृ भूमि के रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिन्धु में सुवाड़वाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो।।

मंगल के गीत

(३)

उतरता है नहीं चढ़ करके पानी उसको कहते हैं
नहीं व्यवधान से रुकती रवानी उसको कहते हैं
नहीं झुकती नहीं थकती बनाती राह शूलो में
मिला दे भूमि को नभ से जवानी उसको कहते हैं

(४)

वीर तुम बढ़े चलो
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
वज्र के प्रहार हो घोर धुँआ धार हो
शत्रु पर चढ़े चलो वीर तुम बढ़े चलो
अब कदम रुके नहीं राह में थके नहीं
अग्नि का प्रदाह हो शूल भरी राह हो
आन पर अड़े चलो वीर तुम बढ़े चलो

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

बुधवार

बुधवार सप्ताह का चौथा दिन होता है। इस दिन का स्वामी बुध ग्रह है। बुध हमारी कल्पना शक्ति को बढ़ाता है और कल्पना से ही विश्व में नव निर्माण, नव अनुसंधान एवं उसे साकार किया जाता है। विश्व में आज हम जो भी प्रगति देख रहे हैं वह इसी कल्पना शक्ति का परिणाम है। इस दिन का उपयोग नवीन कल्पनाओं और उन्हें साकार करने के लिए होता है। बुध की उपासना करने से हमारी ये शक्तियां जाग्रत होती है। इससे हमारी बुद्धि व विवेक बढ़ता है और अन्तर में समत्व की भावनाएं उत्पन्न होती हैं।

बुध को हरा रंग प्रिय है जो हर्ष उल्लास समृद्धि नेत्रों को सुन्दर दृष्टि देने वाला तथा पेट सम्बन्धी बीमारियों को दूर करने में पूर्ण सक्षम है। इस दिन हरे रंग वाला पन्ना या उपरत्न ओक्स या टोडा धारण करना चाहिये, इसका बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जल में चावल, शहद, गोरोचन, हरड़ या जायफल डालकर स्नान करना चाहिये। इस दिन तुलसी दल के सेवन करने से अनेक रंगों से मुक्ति मिलती है। जीवन में तनाव, रक्त चाप, मधुमेह, हृदय रोग आदि से मुक्ति मिलती है। बुध को हरा रंग प्रिय है। हमें इस दिन शारीरिक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिये। घर में तुलसी के पौधे लगाने चाहिये। जिस घर में तुलसी के पौधे होते हैं, वहां वज्रपात नहीं होता है। इस दिन गरीबों को हरे अमरूद हरी मुसम्मी या हरे बेर दान में देना चाहिये। इस दिन और अधिक लाभ पाने के लिए यथा सम्भव निम्नांकित मंत्र का जाप करना चाहिये।

ॐ बुं बुधाय नमः

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

बुधवार के गीत

(१)

कल्पना करो नवीन कल्पना करो

हो सदा नया सृजन विश्व यह बने सुमन
जिन्दगी समत्व का करे सुगंध मय हवन
बस इसी विवेक की नित्य वंदना करो।
कल्पना करो नवीन कल्पना करो।।

कल्पना ही सार है सृष्टि का सिंगार है।
जिन्दगी की राह में कल्पना अपार है।
नव भविष्य के लिए सदैव कल्पना धरो।
कल्पना करो नवीन कल्पना करो।।

वही मनुष्य शुद्ध है जो धीरवर प्रबुद्ध है।
न ये नक्षत्र और ग्रह हुए कभी विरुद्ध है।
त्याग क्षुद्र भेद भाव लोक अर्चना करो।
कल्पना करो नवीन कल्पना करो।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

बुधवार के गीत

(२)

विवेक दीप जल रहे समत्व भाव पल रहे।
क्षुद्रता के लौह-पाश अब समूल गल रहे।

ये विश्व एक बाग है।
मनुष्य ही सुहाग है
प्रज्ज्वलित हृदय में आज नव सृजन की आग है।
बीन पर यही विहाग राग अब मचल रहे।।
विवेक दीप...

न भेद कोई आज हो
मनुष्यता पे नाज हो
उठो नए विधान का हमारे शीश ताज हो।
नवीन भोर आ रही मानदण्ड बदल रहे।।
विवेक दीप...

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

वृहस्पतिवार

वृहस्पतिवार सप्ताह का पांचवा दिन होता है। इस दिन का स्वामी बृहस्पति ग्रह है। इस ग्रह को ज्ञान एवं निर्मल बुद्धि का प्रदाता माना जाता है। अपने अथाह ज्ञान के कारण वृहस्पति देवताओं के गुरु पद पर आसीन है। इस दिन का रहस्य जान लेने से ज्ञान-विज्ञान एवं आध्यात्मिक वैभव का विकास होता है। विद्यारम्भ के लिए यह दिन उत्तम होता है। वृहस्पति को पीला रंग प्रिय है। पीला रंग आध्यात्मिक एवं सद्बुद्धि तथा मानसिक शांति एवं त्याग का प्रदाता है। वृहस्पति की उपासना पीले वस्त्र धारण करके करनी चाहिये। इस रंग का प्रभाव बड़ा ही प्रशस्त होता है।

इस दिन पुखराज या उपरत्न सुनैला धारण करने से मन पर बड़ा ही अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इस दिन जल में हल्दी, मुलैठी या भांगड़े की जड़ डालकर स्नान करने से शरीर पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। मन सात्विकता की ओर मुड़ जाता है। यद्यपि वृहस्पति बड़ा ही शुभ ग्रह है पर उपयुक्त विधियां अपनाने से सभी प्रतिकूलताएँ अनुकूल बन जाती हैं। इस दिन गरीबों को शुद्ध देशी घी, शक्कर, चने की दाल या हल्दी अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान में देनी चाहिये। नाभि पर पीला चंदन या केसर का लेप लगाने से समस्त ज्ञान इन्द्रियां जाग्रत हो जाती है। कारण कि नाभि ही शरीर का केन्द्र बिन्दु होता है। इस दिन का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए अपनी सुविधानुसार गेंदा आदि के पीले फल लगाने चाहिए तथा निम्नांकित मंत्र का जप करना चाहिये।

ॐ बृं बृहस्पते नमः।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

वृहस्पतिवार के गीत

(१)

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आप की गोविन्द दियो बताय।।
गुरु बिनु होय कि ज्ञान, ज्ञान कि होय विराग बिनु।
गावहि वेद पुरान, भव कि तरिय हरि भजन बिनु।।
गुरु ब्रह्मा है गुरु शंकर है, गुरु है शेषशायी भगवान।
गुरु साक्षात धरा पर मानों, परम ब्रह्म का है उपमान।।

(२)

निर्मल करो हमारा अंतर सकल लोक कहे आधार।
निर्मलता से सराबोर हो भीतर बाहर का संसार।
निर्मल मन जन ही पाता है प्रभु की करुणा का वरदान।
छली और पाखण्डी को कब मिल पाते बोलो भगवान।
कर्म वचन मन में हो केवल सरल भावनाओं का बास।
तजो कुटिलता द्वेष-राग सब पाओगे युग का विश्वास।
मन की सहज भावना पावन होती जैसे गंगाधार।
निर्मल करो हमारा अंतर सकल लोक कहे आधार।।

वृहस्पतिवार के गीत

(३)

ज्ञान बिन जीवन है नि:सार।
ज्ञान ब्रह्म है ज्ञान सूर्य है, ज्ञान अमृत की धार।
गहन अंधेरे में जीवन है केवल दिव्य प्रकाश।
सकल सिद्धियों का दाता यह जीवन का है उल्लास।
ज्ञान सिद्धि से ही होता है ईश्वर का सच्चा आभास।
यही ऋद्धि है यही सिद्धि है पंच तत्व का यही विलास।
लेकिन गुरु बिन ज्ञान कहाँ है कहते सारे वेद पुराण
गुरु की कृपा कोर से करना सम्भव जीवन में उत्थान।
ज्ञान दीप अब करो प्रज्ज्वलित जगमग हो सारा संसार।
ज्ञान बिन जीवन है नि:सार।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव
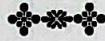
शुक्रवार

सप्ताह का छठा दिन शुक्रवार होता है। इस दिन का स्वामी शुक्र ग्रह है। यह ग्रह सूर्य के बाद सबसे अधिक चमकीला ग्रह होता है। शुक्राचार्य दानवों के गुरु है जो विद्या एवं ज्ञान में बृहस्पति से कम नहीं है, इस दिन का रहस्य जान लेने से काम शक्ति, वैभव एवं तर्क शक्ति का विकास होता है। ज्ञान एवं कर्म इन्द्रियां जागृत हो जाती है।

शुक्र को श्वेत रंग प्रिय है। इस दिन को अपने अनुकूल बनाने के लिए हीरा या उपरत्न फिरोजा धारण करना चाहिये। इससे हर प्रकार की परिपूर्णता प्राप्त होती है और शुक्र ग्रह से आने वाली ऊर्जा हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इस दिन जल में मैनसिल, हरड, इलाइची, बहेड़ा, आंवला या पीपरामूल डालकर स्नान करने से हमारे ऊपर बड़ा ही मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। यह दिन बड़ा ही प्रभावशाली होता है। इस दिन गरीबों को श्वेत वस्त्र, पुष्प आदि दान में देना चाहिये।

वैसे हर दिन का अपना-अपना प्रभाव होता है पर वर्णित विधियां अपनाने से सभी प्रतिकूलताएं अनुकूलताओं में बदल जाती है। शुक्रवार का सही उपयोग करने से भोग विलास के साधनों में वृद्धि तो होती ही है लेकिन मन में सात्विकता बनी रहती है। हम उस ग्रह के दुष्प्रभावों से बच जाते हैं। शुक्र का संदेश है कि किसी पराई स्त्री से एकान्त में देर तक वार्ता न करे और असमय किसी के यहां न जाए। इससे सच्चरित्रता एवं सामान्य शिष्टाचार की वृद्धि होती है। इस दिन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए हमें निम्नांकित मंत्र का जप सुविधानुसार करना चाहिये।

ॐ शुं शुक्राय नमः

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शुक्रवार के गीत

(१)

हे गुरु ! सकल विभव के दाता
ज्ञान कर्म के तुम्हीं समन्वय
सकल सुखों के तुम्हीं प्रदाता
तर्क शक्ति के तुम्हीं विधायक
लोक शिष्टता के हो नायक
जीवन के आदर्शों के हो
हे मानव के भाग्य विधाता।
उज्ज्वल आभा सदा व्योम में
कहती महिमा देव तुम्हारी
तुम्हें जान पाएंगे कैसे
हम सब अज्ञानी संसारी।
जीवन का उल्लास तुम्हीं हो
काम विभव के हे शुभ दाता
हे गुरु ! सकल.............

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शुक्रवार के गीत

(२)

ब्रह्म सर्व व्यापक है सुख दु:ख दोनों में समान रहता है।
फिर क्यों मानव दु:ख सागर में विपदाओं को ले बहता है।
यह सच है दु:ख के आने पर याद राम सबको है आता।
पर यदि सुख में भी सुमिरन हो तो फिर दु:ख मानव ना पाता।
वैभव की गोदी में रहकर जनक विदेह यहां कहलाते।
रहो विभव के बीच कमल बन वेदशास्त्र यह हैं बतलाते।
'नहि दरिद्र सम दुख माही'' तुलसी बाबा बोल गए है।
जीवन के यथार्थ के पन्ने सहज भाव से खोल गए हैं।
धर्म, अर्थ और मोक्ष संग ही काम सिद्धि है जीवन के फल।
अनाशक्त हो करो भोग सब क्यों जीवन को करते निष्फल।
राम सुखों में राम दु:खों में सभी रामजी की है माया।
व्यर्थ तर्क के इन द्वन्द्वों में मानव ने खुद को उलझाया।।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शनिवार

शनिवार सप्ताह का अंतिम दिन होता है। इस दिन का स्वामी शनिश्चर है। शनैः शनै अर्थात धीरे-धीरे चलने के कारण ही इसका नाम शनिश्चर पड़ा है। अक्सर लोग शनिश्चर का नाम लेते ही डर जाते हैं और किसी अनिष्ट की आशंका से ग्रस्त हो जाते हैं। जबकि ऐसा नहीं है। आम आदमी सप्ताह व्यापी कार्यों से थक जाता है और अपनी थकावट को शनि का प्रकोप बतलाता है। जबकि शनिवार के बाद वाला दिन रविवार हमें नवीन ऊर्जा प्रदान करता है। अधिकांश लोग इस ग्रह को दुःख, व्यवधानों एवं अनेक लौकिक अनष्टिों का मूल बतलाते हैं। यह मनुष्य में वैराग्य, घृणा, मतिभ्रम आदि का कारक भी माना जाता है। किन्तु यदि हम दिन का रहस्य जान लें तो शनि हमारे अंदर त्याग-संयम, सेवा भावना, परोपकार एवं अध्यात्म को अपूर्व ढंग से जाग्रत करता है।

इसीलिए परोपकारी एवं सेवाभाव रखने वालों पर इसका दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। शनि सौर मण्डल का सबसे सुन्दर ग्रह है। और सुन्दरता को सहज ही अनुकूल बनाया जा सकता है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए हमें नीलम, उपरत्न काकनीली या कटेला धारण करना चाहिये। नीलम सभी रत्नों से अति शीघ्र फल देने वाला होता है।

शनि हमें सदाचार की ओर ले जाता है। अतः हमें पूर्ण सात्विकता अपनानी चाहिये। मद्यपान, मांसाहार बृद्धों की उपेक्षा, छल कपट, और झूठी गवाही से दूर रहना चाहिये। इस दिन शनि की पूजा नीले वस्त्र धारण कर करनी चाहिये। नीला रंग आत्म शांति का प्रतीक है। हनुमान एवं शंकर की उपासना करनी चाहिये। हनुमान यदि सेवा भावना के प्रतीक है तो भोले बाबा भोले और सबका शिवं (कल्याण) करनेवाले हैं, इस दिन जल में साबूत काले उड़द डालकर स्नान करना चाहिये। इससे वातजनित रोगो का शमन तो होता ही है शनि की नकारात्मक ऊर्जा से भी रक्षा होती है। पीपल पृक्ष के तले जाकर प्रणाम करना चाहिये।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शनि के विषय में रोचक कथ्य

पीपल सबसे अधिक आक्सीजन देनेवाला वृक्ष होता है। कौवों को सूर्योदय के पूर्व पोहे और सरसों तेल लगी रोटी खिलानी चाहिये। पर्यावरण की सुरक्षा में इनका विशेष योगदान होता है। इस दिन अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीबों को काले उड़द, काले वस्त्र, लोहा आदि दान में देना चाहिये, अधिक लाभ पाने के लिए सात मुखी रुद्राक्ष की माला से निम्नांकित मंत्र का जप (सुविधानुसार) करना चाहिये।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

शनि को कोप दृष्टि वाला ग्रह माना जाता है। शनि का नाम सुनते ही साधारणजन में एक अज्ञात भय व्याप्त हो जाता है। कि कुछ अनिष्ट होने वाला है। इसका मनुष्य के जीवन में एक अनिष्टकारी मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। लोग आगत अनिष्ट की आशंका में अपने दैनिक कर्मों में शिथिलता अपनाने लगते हैं। यही शिथिलता कर्महीनता तथा आलस्य में बदल जाती है। कहा भी गया है कि आलस्य से कर्म का नाश होता है और कर्म के नष्ट होने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। बस शनि का यही मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। जैसा कि बताया गया है कि शनैः शनैः पर गति से इसका नाम शनिश्चर पड़ा है। यह एक राशि में अढ़ाई वर्ष रहता है। अतः इतने समय तक लोग शनि-कोप से आतंकित रहते हैं।

पर सत्य तो यह है कि हम शनि की दशा में पूरी क्षमता से श्रमशील बने रहे। आलस्य एवं भय को अपने से दूर रखे। मन में सबके प्रति शिवं भावना हो और हनुमान के समान शुद्ध सेवा भावना होनी चाहिये। शनि को दुर्व्यसन, दुर्भावना एवं दुराचरण से घृणा हैं। ये तामसी भाव स्वयं में मनुष्य मात्र के पतन का कारण है। इनसे दूर रहने एवं श्रमशील रहने से शनि देवता प्रसन्न होते हैं। उनका दुष्प्रभाव स्वयं समाप्त हो जाता है।

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शनिवार के गीत

(१)

सुख दुःख धूप छाँव सी माया।
इसी द्वन्द्व के तर्क जाल में मानव ने खुद को उलझाया।
क्षण भंगुर यदि सुख है जग में दुःख भी क्षण भंगुर होता है।
अज्ञानी मानव ही दुःख के दलदल में फंस कर रोता है।
दुख की ज्वाला में ही तप कर कंचन बन जाती है काया।
सुख दुख धूप छांव...

दोनों ही है कर्मों के फल जिन्हें भोगना ही पड़ता है।
कर्म फलों को नहीं समझना केवल अंतर की जड़ता है।
निर्भय स्वागत करो दुःखों का गीता यही ज्ञान सिखलाती
केवल सिर धुनने से जग में बोलो क्या मानव ने पाया।
सुख दुख धूप छांव...

दुख में भी हम धैर्य न छोड़ें और सुखों में मत इतराएँ।
संयम, नीति, धर्म मत छोड़े, जीवन मूल्यों को अपनाएँ
सेवा, संयम, सदाचार को, जीवन का आदर्श बनाएँ
वह भव सिन्धु पार हो जाता जिसने शिवं भाव अपनाया
सुख दुख धूप छांव...

सप्ताह के दिन एवं उनका प्रभाव

शनिवार के गीत

(२)

माधो! गति तुम्हारि ना जानी
सतयुग में हरिचंद भे राजा सत्यो सत्य बखानी।
नित उठ जायं रोज मरघट पर भरे डोम घरपानी।
त्रेता में रावन भा राजा सोने की लंक बखानी।
एक लख पूत सवा लख नाती लकड़ी को ऊन आनी।
द्वापर में दुर्योधन राजा क्षत्र चलै अगवानी।
उड़ि उड़ि जूझे कुरुक्षेत्र या मिटिंगै वंश निसानी।
कलियुग मा विक्रम भा राजा सम्वत् चलै बखानी।
हाथ कटाय तेलि घर बैठे पेरै तिल की घानी।
कोटि गाय नृग पुण्य करत भे था राजा बड़दानी।
एक गाय के भूल भए से होइगै नरक निशानी।
यह लीला रघुवंश कुँअर की तुलसीदास बखानी।
गावै सुनै अमर पद पावै पावै स्वर्ग निशानी।।
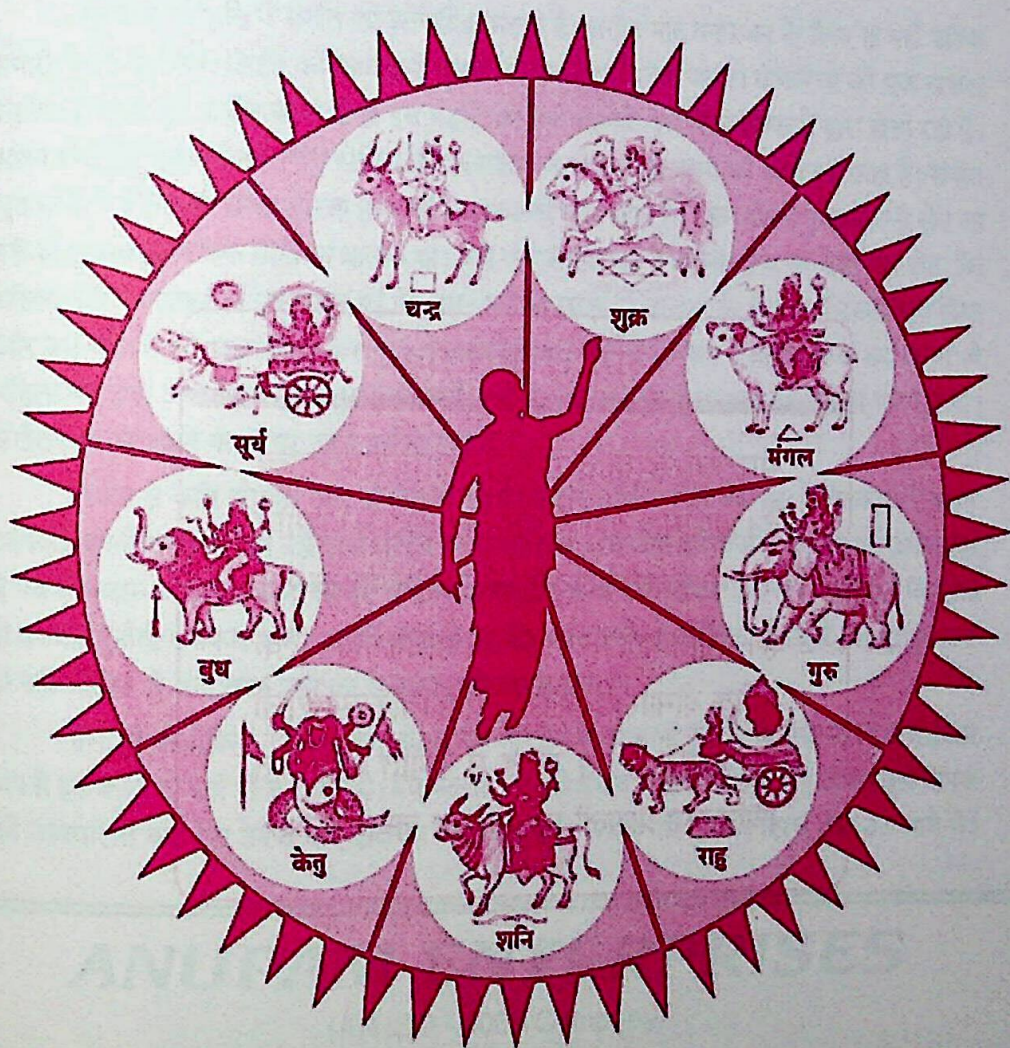
संगीत और ग्रह

संगीत और ग्रह

भारतीय संस्कृति में ग्रहों का विशेष महत्व है। प्राणीमात्र ग्रहों से प्रभावित होता है। संगीत का भी हमारी संस्कृति में विशेष महत्व रहा है। संगीत मात्र मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि अनेक बीमारियों की सफलतम चिकित्सा शैली है। प्रस्तुत है इस खण्ड में संगीत आधारित चिकित्सा प्रणाली पर संक्षिप्त जानकारी।

संगीत और ग्रह

संगीत चिकित्सा

भारतीय संस्कृति में संगीत का अत्यधिक महत्व है। संगीत मात्र मनोरजन के लिए ही नहीं बल्कि हमारी चेतना एवं मन: स्थिति को ऊर्ध्वगामी बनाने के साथ-साथ अनेक जटिल बीमारियों की एक सफल चिकित्सा शैली है। प्राचीन काल से ही इस पद्धति का प्रयोग हमारे देश में संगीतकारों द्वारा होता रहा है। महान गीतकार एवं संगीतज्ञ, गीत गोविन्द के रचनाकार जयदेव ने इसे कला की संजीवनी कहा है। संगीत मृत प्राणी में जीवन का संचार करता है। उन्हीं के समय की एक घटना है। एक महिला कुएं से पानी लेने जा रही थी। उसके साथ एक छोटा सा बालक था। वहीं एक संगीतकार ने अपनी वीणा पर ऐसा राग छेड़ा कि महिला उसी स्वरलहरी में इतना डूब गई कि उसने घड़े के स्थान पर बालक के ही गले में रस्सी बांध दिया और उस बालक को घड़ा समझ कर कुएं में लटका दिया। जब संगीतकार ने अपना गाना बंद किया तो महिला को होश आया तब तक बहुत विलम्ब हो गया था। बालक मर चुका था। वह विलाप करने लगी। संगीतकार को अपने गायन पर बहुत गर्व हो गया।

संयोग से कवि जयदेव उधर से निकल रहे थे। उन्होंने स्थिति समझ कर उस संगीतकार से कहा- आपको अपनी कला पर गर्व नहीं होना चाहिये कला का काम जीवनदान करना होता है। इस पर संगीतकार ने गर्व से कहा– यदि तुम भी अपने को संगीतकार समझते हो तो इसे जीवित कर दो। जयदेव ने विनम्रता से उसकी चुनौती स्वीकार करी, अपनी वीणा लेकर बैठ गए। उनके अलौकिक गायन से वह मृत बालक ही नहीं जीवित हो गया वरन पास का सूखा पेड़ भी हरा हो गया।

ऐसी ही अलौकिक घटनाएं बैजू बावरा एवं तानसेन के साथ भी हुई है। ये दोनों महान संगीतकार अपनी इस कला से वर्षा भी करा देते थे, मेघ मल्हार का यही प्रभाव होता है। दीपक राग गाकर बुझे दीपक को प्रज्ज्वलित कर देना उनके बाएं हाथ का खेल था। उनके गायन को सुनकर हिरण तक आ जाते थे।

संगीत और ग्रह

संगीत चिकित्सा

अतीत में महान संगीतकार रावण ने वीणा के द्वारा ही लोक विख्यात मतवाले हाथी त्रिजग भूषण को वश में कर लिया था। संगीतकला में निष्णात ऋषिमुनि साम गान के द्वारा देवताओं को बुला लेते थे।

संगीत की अपूर्व महिमा है। यह हमारे रक्त संचार ग्रंथियों, स्नायुओं, मांसपेशियों, अस्थियों एवं मन मस्तिष्क पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह मान्यता अब ध्वनि-तरंग विज्ञान के द्वारा भी सत्य सिद्ध हो चुकी है। ये तरंगें हमारी चेतना को सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। जैसे अधिक शोरगुल एक सीमा के बाद हमें बहरा एवं विस्मरण (स्मृति ह्रास) के साथ-साथ मस्तिष्क दोष एवं उच्च रक्तचाप से ग्रस्त कर देता है। लेकिन संगीत हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। विश्व संगीत चिकित्सा संघ की स्पष्ट मान्यता है कि संगीत हमारे भावों को विकसित करने, हमारे अन्दर ऊर्जा का संचार करने एवं उत्साह की वृद्धि करने के साथ ही हमारी कल्पना एवं रचनात्मक शक्ति जाग्रत करता है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इस पद्धति का नाम संगीत चिकित्सा है। वीणा, सितार, तबला आदि से उत्पन्न ध्वनि तरंगों का हम पर अत्यन्त प्रभावशाली असर होता है।

इस पर अनेक शोध हो रहे हैं। संगीत हर प्रकार के ब्लॉकेज, मधुमेह, गठिया, वातरोग, रक्ताल्पता,अस्थमा, अवसाद, रक्त चाप, निशान्धता आदि को सफलतापूर्वक दूर करता है। यह ही लिंग ग्रंथि को सक्रिय बनाता है। संगीत मात्र रोगियों के लिए ही नहीं बल्कि स्वस्थ आदमी के लिए भी अत्याधिक लाभदायक है। हम अपने दैनिक जीवन में इसके द्वारा अनेक चिन्ताओं से दूर होते हैं। इसकी ध्वनि तरंगों का शरीर के प्रत्येक अंग पर प्रभाव पड़ता है। हां, इतना जानना आवश्यक है कि संगीत से मतलब शास्त्रीय संगीत से है। आधुनिक पॉप संगीत निष्प्रभावी होता है। शास्त्रीय संगीत ही मानसिक शांति प्रदान करता है। सुप्रसिद्ध पाश्चात्य चिकित्सक डा० बर्नर के अनुसार शास्त्रीय संगीत से शरीर में अद्भुत स्पन्दन होता है। इससे रक्त संचार अच्छे ढंग से होता है और प्रत्येक अंग को ऊर्जा प्राप्त होती है।

संगीत और ग्रह

संगीत चिकित्सा

महान आयुर्वेदाचार्य चरक ने भी चरक संहिता में इस चिकित्सा का वर्णन किया है। इसी संगीत चिकित्सा के अन्तर्गत मंत्र चिकित्सा भी आती है, जो ध्वनि विज्ञान पर आधृत है। संगीत चिकित्सा को अनेक डाक्टरों एवं चिकित्सकों ने अपना कर सफलता अर्जित की है। अब इस स्थान पर दिया जा रहा है कौन सा राग किस रोग में प्रभावशाली होते हैं।

अवसाद	–	धुत राग
मानसिक	–	ललित केदार
सिजोफनिया	–	भैरवी राग
स्मृति वृद्धि	–	शिव रंजनी
रक्तचाप	–	टोड़ी, भूपति, पूरिया
रक्ताल्पता	–	प्रिय दर्शनी
कैंसर	–	रागश्री, सामदेव
अम्लता	–	दीपक, कलाकती
साईटिक डिस	–	आर्डर
अल्सर	–	मधुवंती, दीपक
अस्थमा	–	पूरिया, मालकोश, यमन
निशान्धता	–	भैरवी

राशि परिचय

राशि परिचय

राशियों का नामकरण आकाश में नक्षत्रों के विशेष समूह एवं उनसे बनने वाली आकृतियों के आधार पर किया गया है। ये कुल १२ राशियाँ हैं। प्रस्तुत है यहाँ राशियों का संक्षिप्त परिचय एवं उनके स्वभाव के सम्बन्ध में जानकारी।

राशि परिचय

प्रभाव एवं स्वभाव

क्षितिज पर नक्षत्रों के विशेष समूह व उनसे बनने वाली आकृति के अनुसार ही राशियों का नाम करण किया गया है। ये बारह होती है। उनका क्रम इस प्रकार है।

आकाशों में पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, एवं मीन है। सूर्य प्रत्येक राशि में एक मास तक रहता है। सूर्य जिस समय जिस राशि में प्रवेश करता है, वह समय उस राशि की सूर्य संक्रांति कहा जाता है। २१ मार्च से २३ सितम्बर तक सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में तथा २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिणी गोलार्द्ध में रहता है। सूर्य २२ दिसम्बर से २१ जून तक उत्तरायण तथा २१ जून से २२ दिसम्बर तक दक्षिणायन रहता है।

राशियों की आकृति :

१. मेष : इसकी आकृति नर मेढ़क के समान होती है।

२. वृषभ : आकृति बैल के समान होती है।

३. मिथुन : पुरुष स्त्री का जोड़ा। पुरुष के हाथ में गदा तथा स्त्री के हाथ में वीणा है।

४. कर्क : आकृति केकड़े के समान है।

५. सिंह : आकृति सिंह के समान है।

६. कन्या : धान तथ अग्नि साथ लेकर नाव पर बैठी कन्या के समान।

राशि परिचय

प्रभाव एवं स्वभाव

७. तुला : हाथ में तराजू लिए मनुष्य के समान।

८. वृश्चिक : बिच्छू के समान।

९. धनु : कमर के ऊपर मनुष्य हाथ में धनुष तथा नीचे घोड़े के समान चार पैर।

१०. मकर : मगर के समान शरीर तथा मुंह एवं सींग बकरे के समान।

११. कुम्भ : कंधे पर घड़ा लिए मनुष्य के समान।

१२. मीन : दो मछलियां एक पूंछ पर दूसरी की मुख जैसी।

स्वभाव

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, व कुम्भ क्रूर तथा वृषभ कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन सौम्य होती है।

इसी पर मनुष्य का स्वभाव उग्र एवं सौम्य बनता है। लिंगानुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला धनु व कुम्भ पुरुष तथा शेष राशियां स्त्री राशियां है।

धातु के समान मेष, सिंह व धनु पित्त प्रधान, वृषभ, कन्या, मकर वायु प्रधान, मिथुन तुला व कुम्भ समधातु प्रधान तथा कर्क वृश्चिक व मीन कफ प्रधान है।
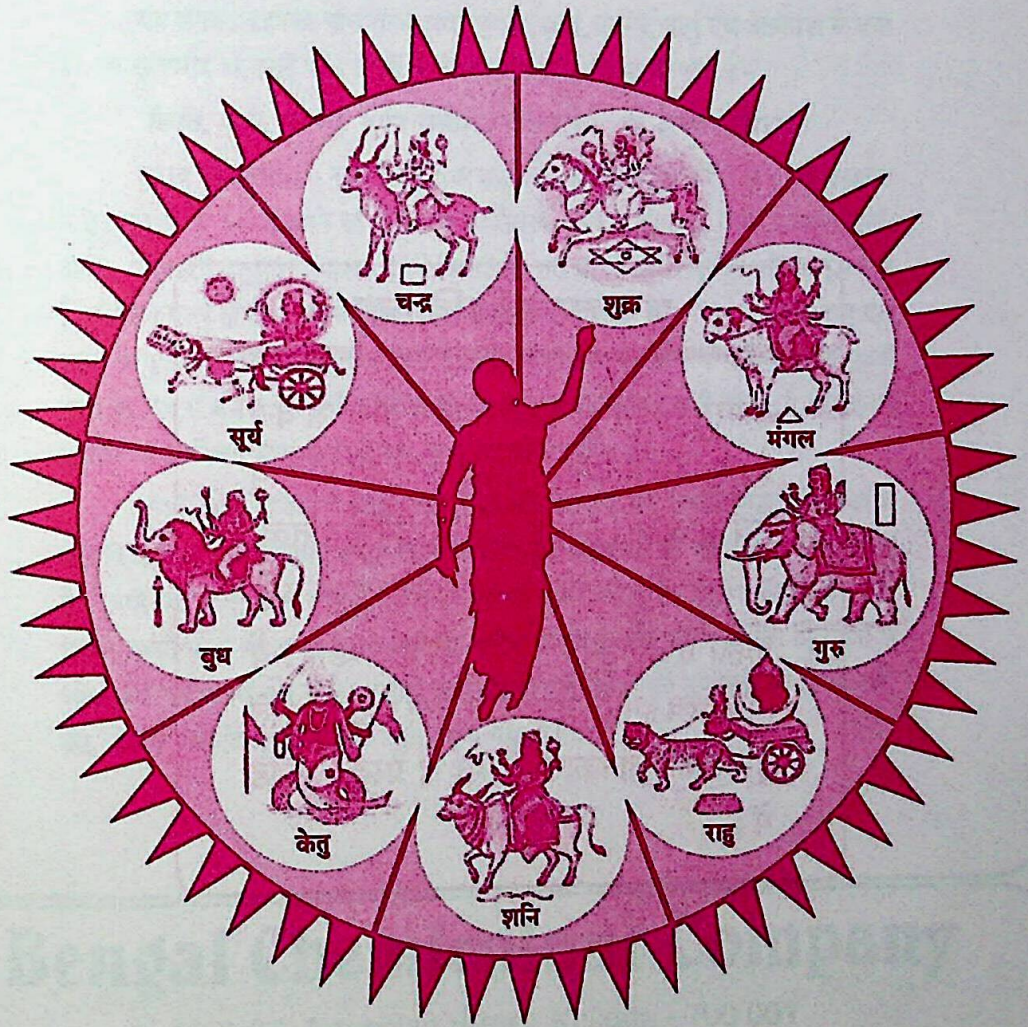
पंच तत्व चिकित्सा

पंच तत्व चिकित्सा

हमारा यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पाँच तत्वों से बना है। ये पाँच तत्व हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश। हमारा शरीर भी इन पाँच तत्वों से बना है। इसीलिये हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं कि हमारा शरीर ही ब्रह्माण्ड है। ये पाँच तत्व हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव डालते हैं इसकी जानकारी दी गई है प्रस्तुत खण्ड में।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

यह समस्त ब्रह्माण्ड पांच तत्वों यथा, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश से बना है। हमारा शरीर भी इन्हीं पाँच तत्वों से मिलकर बना है। कहा भी गया है–

छिति, जल, पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा।।

शास्त्र भी कहते हैं– यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। जो कुछ इस शरीर में है वह ब्रह्माण्ड में है। मनुष्य के गर्भ में आने पर सर्वप्रथम पृथ्वीतत्व आकार लेता है, फिर क्रमशः जल, अग्नि, गगन एवं वायुतत्व आकर उससे मिलते हैं। तब मानव शरीर पूर्णता को प्राप्त करता है। लेकिन मृत्यु होने पर इसका ठीक उल्टा होता है। सर्व प्रथम वायु तत्व जो प्राण वायु एवं अन्य वायुओं के रूप में विद्यमान रहता है। वह चला जाता है। अंत में पार्थिव शरीर पृथ्वी तत्व के रूप में बचता है। इन्हीं पाँचों तत्वों का सानुपातिक समन्वय ही जीवन है और इनमें व्यतिक्रम उपस्थित होना ही रोगों एवं मृत्यु का कारण होता है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने इन्हीं पांचों तत्वों की उपासना एवं उनकी शुद्धता पर विशेष बल दिया है। इनकी पवित्रता बनाए रखने के लिए इन्हें देवताओं की कोटि में स्थापित किया है। पृथ्वी को माता कहा गया है, जिस प्रकार मां अपने शिशु का पालन करती हैं। उसी प्रकार पृथ्वी माता भी अपने ऊपर सभी को धारण करती है और अपने असीम अवदानों से जीव मात्र का पोषण करती है। उसकी वनस्पतियों एवं पर्वतों की उपासना की है। पीपल, बट, पाकर, अशोक, तुलसी को पूज्य माना गया है।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

पर्वतों में देवात्मा हिमालय विन्ध्याचल, साह्याद्रि, ब्रह्मगिर आदि साक्षात देवता माने गए हैं। जल की उपासना वरूण देवता के रूप में अग्नि एवं वायु को देवताओं की कोटि में रखा गया है और आकाश को साक्षात पिता माना गया है। इन्हीं पांच तत्वों की लय जब असंतुलित होती है तो प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जाता है। यही सिद्धान्त हमारे शरीर पर भी लागू होता है। इन पंच तत्वों की शान्ति के लिए वैदिक प्रार्थना का विधान है जो पूर्ण वैज्ञानिक है। तभी तो कहा गया है–

हमारे लिए वनस्पतियाँ शान्त हो।
हमारे लिए ओषधियाँ शांत हो
हमारे लिए जल शांत हो
हमारे लिए अग्नि शांत हो
हमारे लिए यह पृथ्वी शांत हो
हमारे लिए वायु शांत हो
हमारे लिए आकाश शांत हो
चारों दिशाएं और इन सबसे सम्बन्धित देवता शांत हो।

इन पंच तत्वों का हमारे क्रियाकलापों एवं स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। तथा हम इनके द्वारा किस प्रकार चिकित्सकीय लाभ उठा सकते हैं, यह अत्यन्त गहन विषय है। हर तत्व का अपना गुण एवं स्वभाव होता है। उसे जानकर ही हम तदनुकूल आचरण करके आरोग्य हो सकते हैं। इसलिए प्रत्येक तत्व का गुण प्रभाव एवं स्वभाव देना समीचीन होगा।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

१. पृथ्वी तत्व : हमारा यह शरीर मिट्टी का बना होता है। मृत्यु के बाद यह मिट्टी में ही मिल जाता है। मिट्टी स्थूल होती है इसलिए दृश्य है। हम बाह्य शरीर को भी देखते हैं। यह पृथ्वी का बाह्य आवरण मिट्टी का ही होता है। पृथ्वी का गुण सुगंध होता है। हमारी प्राण शक्ति इसी से प्रभावित होती है। पृथ्वी तत्व के असंतुलन में हमें घ्राण सम्बन्धी बीमारियाँ जैसे स्नोफीलिया आदि बीमारी हो जाती है। शरीर स्थूल हो जाता है और मानसिक रूप से व्यक्ति अधैर्यवान या तनाव, अवसाद आदि से ग्रस्त हो जाता है। कारण कि पृथ्वी सर्व सहा है और जब हम प्रतिकूल परिस्थितियों में अधैर्यवान बन जाते हैं तो ये बीमारियाँ हमें ग्रस्त करती हैं। इनसे बचने का उपाय यही है कि हम सब प्रतिकूल या अनुकूल परिस्थितियों में एक रस रहें। कुण्ठा आदि से दूर रहे। जिस प्रकार रसायनिक प्रदूषण से पृथ्वी की ऊर्जा का क्षय होता है, उसी प्रकार ये मानसिक रसायनिक क्रिया हमारे शरीर की रोग प्रतिशोधक क्षमता समाप्त कर देती है। हमने पृथ्वी के सर्वसहा रूप को देखकर उसे माता की संज्ञा दी। अतः हमें भी पृथ्वी के स्वभाव एवं गुणों को धारण कर उसे प्रदूषण से बचाना चाहिये। यही सिद्धानत हमारे शरीर पर लागू होता है। उल्लस, अकुण्ठा से पृथ्वी जाग्रत होती है। इन्हीं भावों से शरीर का पृथ्वी तत्व भी जागृत होता है। जिस प्रकार पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए एक कृषक विभिन्न क्रियाएं अपनाता है। उसी प्रकार हमें भी इस शरीरान्तर्गत तत्व को बलवान बनाने के लिए, जोतना (क्रिया शील होना) उपजाऊ बनाने के लिए प्राकृतिक खाद्य (सात्विक बलवर्धक भोजन) का उपभोग करना होता है।

प्राकृतिक चिकित्सा में मिट्टी का अत्यधिक महत्व है। गीली मिट्टी की पट्टी उदर रोगों से चबाती है और मृतिका स्नान शरीर को पुष्ट एवं निरोग रखता है। समस्त नासिका रोग इस तत्व के दूषित होने से हो जाते हैं क्योंकि नाक ही गंध को ग्रहण करती है। मृतिका के अनेक रोग निरोधक प्रयोग आयुर्वेद में है। मुलतानी मिट्टी के लेपको केशों के रूखापन, रुसी हटाने तथा चेहेरे की कांति बढ़ाने के लिए काली मिट्टी का उपयोग केशो में श्यामलता लाने के लिए किया जाता है।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

जल तत्व : जल ही जीवन है। इस पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से आक्षादित हैं। जल का गुण उसका स्वाद है। उसमें तरलता है। जल का अंग हमारी जिह्वा होती है जो सभी स्वादों का विश्लेषण करती है। हमारे मनीषियों ने जल को देवता (वरुण) की संज्ञा दी है। जल की पवित्रता पर विशेष बल दिया है। इसीलिए हमारी संस्कृति में समुद्र, नदी एवं सरोवरों के प्रति असीम श्रद्धा निवेदित की गई है। जल को प्रदूषण से बचाने के लिए अनेक उपदेश दिए गए हैं। हमारे शरीर में भी जल तत्व का प्रतिशत सर्वाधिक हो कारण कि ठोस पृथ्वी की अपेक्षा जल का प्रतिशत अधिक है।

जल तत्व के दूषित होने से पीलिया, रक्त में थक्के जमना, उदर रोग, मलेरिया, फाइलेरिया अनेक वनस्पतियों का लोप, विषक्ति कीटाणुओं का जन्म, निर्जलीकरण, आदि सैकड़ों रोग हो जाते हैं। इसीलिए आयुर्वेद में कहा गया है कि जल की शुद्धता पर पूरा ध्यान देना चाहिये। पृथ्वी और शरीर की बनावट में एक रूपता है, पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल है। अत: हम जो भी ग्रहण करें उसमें तीन चौथाई भाग जल होना चाहिये। पेय जल की शुद्धता के लिए पात्र में ५ तुलसी दल डालने चाहिये।

जल चिकित्सा : रात्रि को तांबे के पात्र में जल रख दे। सूर्योदय के पूर्व प्रात: उठते ही वह जल पीले। यह अनेक रोगों की दवा है।

जल चिकित्सा पद्धति से सिर दर्द, उक्तरक्त चाप, मधुमेह, मोटापा, कब्ज, जोड़ों का दर्द, रक्त की कमी, आमवात खाँसी, दमा, क्षयरोग, लकवा, पेचिश, कैंसर एवं नेत्र रोग ठीक हो जाते हैं।

पानी पीने की विधि : सूर्योदय के पहले लगभग सवालीटर जल ब्रुश आदि के करने के पूर्व एक साथ पिएँ। जल यदि अशुद्ध हो तो उबाल कर ठण्डा करके ५-७ तुलसी दल डाल दे। उच्च रक्तचाप व मधुमेह ४० दिनों में, उदर रोग व कब्ज १० दिनों में, कैंसर ६ मास में, फेफड़ों के रोग एवं टी०बी० तीन मास में ठीक होते हैं।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

वायु तत्व : वायु तत्व को प्राण कहा गया है। इस तत्व को दूषित करने से फाइलेरिया, समस्त उदर रोग, शरीर में कम्पन, लकवा, साइटिका, हृदय रोग, वात रोग हो जाते हैं। वायु की शुद्धि अशुद्ध पदार्थ न जलाने से हवन आदि से दूर होते हैं। रोगों से बचने के लिए प्राणायाम, कपाल भांति आदि योगों का विधान है। ये यौगिक क्रियाएं न हमें अनेक वात रोगों से मुक्त रखती है बल्कि अनेक जटिल रोग यथा मोटापा, मधुमेह एवं फेफड़ों के रोग से बचाते हैं। वायु को शुद्ध बनाने के लिए वृक्षारेपण विशेष कर पीपल, नीम, तुलसी अशोक आदि आक्सीजन उत्पन्न करने वाले वृक्षों को लगाना चाहिये।

अग्नि तत्व : हमारे उदर में वह तत्व जठराग्नि के रूप में विद्यमान है। इसके मंद होते ही मंदाग्नि, कब्ज, शीत का अत्यधिक लगना, नेत्र विकार आदि रोग हो जाते हैं। अग्नि तत्व का गुण है आकार। हम नेत्रों से ही कोई आकार देखते हैं। इसके दूषित होने से अनेक नेत्र विकार हो जाते हैं। इनसे बचने के लिए साक्षात अग्नि स्वरूप प्रात: कालीन धूप का सेवन एवं इसको तीव्र करने के लिए योग की अग्नि संदीपन क्रिया की जाती है। इससे अग्नि सम रहती है। इसके अधिक प्रबल होने से भस्मक रोग (जिसमें ऐसे व्यक्ति की खूराक कई गुना बढ़ जाती है) एवं दुर्बलता आती है। घी, चीनी, चन्दन, गुग्गल, राल, कपूर, जौ काले तिल के हवन करने से अग्नि तत्व शुद्ध रहता है। आग में कोई दूषित पदार्थ या तीव्र गंध (मिर्चा) आदि को नहीं जलाना चाहिये। हां धूप सेवन सामने से नहीं और आग का सेवन पीठ से नहीं करना चाहिये। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

सेइअ मानु पीठि उर आगी।

आग की ओर पैर करके भी सेकना नहीं चाहिये। इससे नेत्र दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

पंच तत्व चिकित्सा

स्वास्थ्य पर प्रभाव

आकाश तत्व : आकाश तत्व का गुण शब्द ग्रहण करना होता है। हम अपने कानों से शब्द ग्रहण करते हैं। इसलिए इस तत्व का निवास हमारे कानों में है। इसके दूषित होने से कान एवं मस्तिष्क के रोग हो जाते हैं। ध्वनिप्रदूषण से मतिविभ्रम, बहरापन, विस्मरण, पागलपन बढ़ते हैं तथा कल्पना शक्ति का ह्रास होता है।

कल कारखानों, वाहनों, ध्वनि विस्तारक यंत्रों, जुलूसों की नारेबाजी, अशुद्ध शब्दों का उच्चारण आदि इस तत्व को दूषित करते हैं। अक्षरों का कभी क्षरण नहीं होता है। वे शून्य में बने रहते हैं। जहां भगवद्चर्चा, सत्संग एवं अच्छे विचारों से युक्त वातावरण रहता है,वहां मन में सात्विक भावों का स्वत: विकास होता है। हां, एक बात और है जो विज्ञान सम्मत है। शंख ध्वनि एवं मन्दिरों के घड़ियालों की ध्वनि से कीटाणु एवं अशुभ तत्व नष्ट होते हैं। आकाश तत्व के दोषों से बचने के लिए कभी भी कठोर व असांस्कृतिक शब्दों का उच्चारण नहीं करना चाहिये। अधिक शोरगुल को नियंत्रित करने के उपाय अपनाने चाहिये।

इस प्रकार यदि हम पंच तत्वों की शुद्धता का ध्यान रखें तो अनेक बीमारियों से मुक्त रहेंगे।
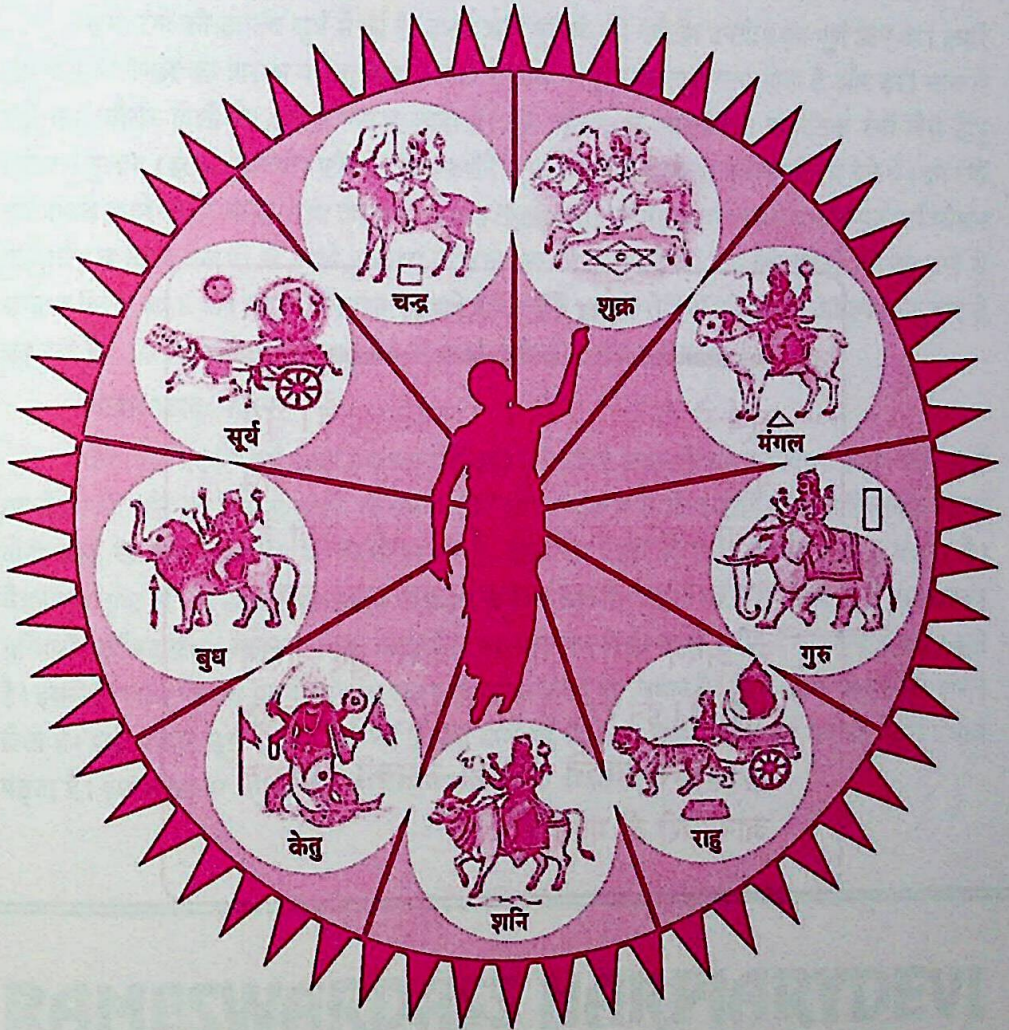
रंग चिकित्सा

रंग चिकित्सा

सूर्य से ही सभी रंगों की उत्पत्ति हुई है। सूर्य के इन्द्रधनुषी सात रंग हैं। इन रंगों का प्रभाव हमारे शरीर के प्रतिरोध तंत्र पर पड़ता है। हम सारे वर्ष मौसम परिवर्तन एवं अन्य कारणों से अपने शरीर की रक्षा करते हुए नीरोग रहते हैं। इन रंगों से किस तरह हम स्वास्थ्य रक्षा कर सकते हैं यहाँ उसकी संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

रंग चिकित्सा

रंगों की उत्पत्ति एवं निर्धारण

सभी रंगों की उत्पत्ति सूर्य से हुई है। हमारे ऋषि मुनियों को रंगों के उपयोग का पूर्ण ज्ञान था। हमारे भारतीय कैलेण्डर का प्रारम्भ बसन्तु ऋतु से होता है। इसी ऋतु में फाल्गुन मास होता है और इसी मास में रंगों का त्यौहार होली के रूप में मनाया जाता है। इस त्यौहार पर भारतवासी प्राकृतिक रंगों जैसे टेशु (पीला) गुलाब (हल्का गुलाबी) पत्तियों (हरा) आदि से परस्पर एक दूसरे के शरीर को रंग देते थे। इन रंगों का प्रभाव हमारे शरीर के प्रतिरोध तंत्र (Immune System) पर पड़ता था। इससे हम सम्पूर्ण वर्ष मौसम परिवर्तन व अन्य कारणों से अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर निरोग रहते थे। रोग कीटाणुओं को इन रंगों से समाप्त किया जाता था। आज चिकित्सा के इतने साधन होते हुए भी रोगियों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही है। उस समय ऐसा नहीं था, तभी तो हमारे ऋषियों ने संदेश दिया था–

जीवेम शरदः शतम्

धीरे-धीरे प्रकृति एवं अपने महान पूर्वजों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की अवहेलना होली आदि पर्वों पर होने लगी और हम रोगों से लड़ने की क्षमता खोने लगे। उदाहरण के लिए आदि काल से विवाहित स्त्रियां दोनो भौहों के बीच लाल रंग की बिन्दी लगती है। लाल रंग शरीर में रक्त संचरण में वृद्धि करता है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थान Pituitary Gland से सम्बन्धित है जिससे शरीर में स्थित सभी अन्तःस्राव ग्रन्थियाँ उत्तेजित होकर विभिन्न प्रकार के हार्मोन्स का स्राव करती हैं। इससे शरीर में कमनीयता बनी रहती है। इससे विपरीत विधवा स्त्रियों को उस स्थान पर चन्दन लेपन का विधान है। इससे काम भावना का शमन होता है। इसी प्रकार सूर्य से जिन रंगों की उत्पत्ति मानी गई है उनका हमारे शरीर एवं मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस स्थल पर प्रमुख रंगों की विशेषता व उनका प्रभाव दिया जा रहा है।

रंग चिकित्सा

रंगों की उत्पत्ति एवं निर्धारण

लाल रंग : लाल रंग उत्तेजक होता है, यह रक्त संचरण एवं रक्त के लाल कोषों की वृद्धि करता है। यह मूलाधार चक्र से सम्बन्धित होता है। यह निम्न रक्त चाप एवं रक्तापता में उपयोगी है।

नारंगी रंग : यह आनन्द उत्सुकता एवं कामवृद्धि में सहायक होता है। यह रचनात्मक एवं कल्पना शक्ति को भी दीप्त करता है। यह काम शक्ति एवं पाचन क्रिया को ठीक करता है। इसका सम्बन्ध स्वाधीष्ठान चक्र से है।

पीला रंग : यह रंग ज्ञान एवं बुद्धिवर्द्धक होता है यह पाचन क्रिया एवं लिम्स को ठीक रखता है। यह माणिपुर चक्र से सम्बन्धित होता है।

हरा रंग : यह सभी रंगों के मध्य में स्थित रहता है। अत: शरीर का संतुलन बनाने में सहायक होता है। यह कब्ज, अल्सर तथा विषाणुओं को नष्ट करता है। यह अनाहत चक्र से सम्बन्धित होता है। मानसिक शांति का भी यह प्रतीक है। आँखों के लिए यह रंग अत्यन्त अनुकूल होता है।

नीला रंग : यह ज्ञान एवं वाक्पटुता में वृद्धि करता है। यह थायरायड ग्रंथि को नियंत्रित कर घेघा रोग का शमन करता है। यह विशुद्धि चक्र से सम्बन्धित होता है।

गहरा नीला रंग : यह मानसिक शांति प्रदान करता हे। इससे आंतरिक चेतना जाग्रत होती है। यह ज्ञान चक्र से सम्बन्धित है।

बैगनी रंग : यह ज्ञान एवं आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाता है। शरीर के विभिन्न अंगों की पीड़ा दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। यह तांत्रिक तंत्र को ठीक रखता है। यह मस्तिष्क से सम्बन्धित होता है। इसका सम्बन्ध सहंस्रार चक्र से होता है।

क्रोध हमारे संबंधों को कमजोर करता है,
चिंता से दिमाग कमजोर होता है,
वहीं ईर्ष्या से व्यक्ति अपना विकास अवरुद्ध करता है,
इन तीनों आत्मघातक शत्रुओं से सदैव बचने का प्रयत्न कीजिए।

रंग चिकित्सा

उपचार की विधि

रंग उपचार की विधि : विभिन्न रोगो में सूर्य का प्रकाश शरीर पर विविध रंग के शीशों से डाला जाता है। रंगीन शीशा (पारदर्शी) सूर्य के सामने करके उसके माध्यम से आया प्रकाश शरीर पर पड़ता है।

दूसरी विधि सूर्य तापित जल है जो विभिन्न रंग की बोतलों में तीन चौथाई तक पानी भर कर धूप में रखा जाता है। बोतल किसी काठ पर रखनी चाहिये। गर्मी में ६ घंटे तथा जाड़े में पूरा दिन धूप दिखानी चाहिये। फिर बोतल उठाकर अंधेरे में किसी काठ पर रख देना चाहिये तथा प्रातः सायं एक-एक कप जल पीना चाहिये।

सूर्य तापित हरा पानी : हरा पानी कब्ज को दूर करने में चमत्कारिक ढंग से कार्य करता है। किसी हरे रंग की बोतल में तीन चौथाई पानी भरकर ६-८ घंटे धूप में रख दे। बोतल में कार्क आवश्य लगा दें। पानी यद्यपि हरा नहीं होता है पर हरे रंग की बोतल होने से सूर्य की किरणों से हरा रंग जल में अपना प्रभाव डाल देता है। यह जल विजातीय तत्वों को बाहर निकाल कर पुरानी से पुरानी कब्ज को दूर कर त्वचा, गुर्दो और आँतों की कार्य प्रणाली सुधार कर रक्त भी साफ करता है। यह पानी प्रातः खाली पेट एवं दिन व रात के भोजन के आधा घण्टे पहले लिया जाता है। प्रातः पूरा कप तथा भोजन के पहले आधा-आधा कप पीना चाहिये। यदि भोजन के १५ मिनट के अंदर नारंगी रंग का सूर्य तापित पानी पिया जाए तो भोजन शीघ्र पच जाता है।

नीले रंग की बोतल में सूर्य तापित तेल : नारियल के तेल को नीले रंग की बोतल में तीन चौथाई भर कर उसी विधि से धूप में कम से कम १५ दिन रखा जाए तो वह तेल केश रोगों के लिए रामबाण होता है। विशेष रंग की बोतल न रहने पर विभिन्न रंगों के सेलोफेन कागज का उपयोग किया जाता है। बोतल का लेबिल हटाकर सेलोफेन लपेट देना चाहिये।

अपने जीवन में ऐसे रचनात्मक काम कीजिये कि
जिनका आपके जाने के बाद भी
उल्लेख किया जा सके और
आप सदैव के लिये याद किये जा सकें।

रंग चिकित्सा

चिकित्सकीय महत्व

रंग चिकित्सा सिद्धान्त के साथ ही एक्यूप्रेसर/एक्यूपंक्चर सहयोगी के रूप में कोरिया एवं चीन में काफी विकास हुआ है। चीन के हमारे मूल पंचतत्व सिद्धान्त में थोड़ा परिवर्तन करके वायु के स्थान पर काष्ठ (Wood) रंग गगन के स्थान पर धातु (Metal) प्रस्थापित किया है। ये पांचो तत्व प्रकृति के नियमों के अनुसार सृजनात्मक एवं विध्वसात्मक क्रम से बंधे है। यह रंग चिकित्सा का ही एक अंग है। चीन में ची, जापान में की, भारत में प्राण तथा पाश्चात्य देशों में वाइटल फोर्स के नाम से जानी जाती है।

प्राय: सभी धर्मों में परस्पर विपरीत बलों घनात्मक एवं ऋणात्मक बलों के समागम से सृष्टि की उत्पत्ति मानी गई है। चीन में इसे विनयांग के नाम से जाना जाता है। चीनियों की भी मान्यता है कि प्रथम तत्व वायु है जिसके बिना जीवन सम्भव नहीं है। वायु से अग्नि प्रदीप्त होती है। अग्नि से राख (पृथ्वी), पृथ्वी से धातु एवं धातु के गलने से जल उत्पन्न होता है। यह सृजनात्मक चक्र है। इसी प्रकार विध्वसं चक्र के अनुसार काष्ठ को धातु (अर्थात् धातु के औजारों से वन काटे जाते हैं), अग्नि का शमन जल और जल के प्रवाह को पृथ्वी एवं उसकी वनस्पतियां रोकती है।

विभिन्न रोगों के शमन के लिए अलग अलग रंगों का प्रयोग शरीर पर होता है। रंग उपचार की मुख्यता तीन विधियां है। १. सूर्य के प्रकाश का पारदर्शी शीशे से प्रभावित अंग पर केन्द्रित करना। २. सूर्य तापित जल तेल एवं चीनी का रंगीन बोतलों के माध्यम से सेवन और ३. प्रभावित बिन्दुओं पर रंगीन स्केच पेन से निशान लगाना। लेकिन सूर्य तापित रंगीन जल का सेवन सहज है। यह इस प्रकार प्रयोग में आता है।

मुश्किलों में भी मुस्कुराना मत भूलिए।
किसी भी कार्य को करने से पहले मुस्कुराना
उस कार्य के श्रीगणेश करने का
सबसे अच्छा तरीका है।

रंग चिकित्सा

चिकित्सकीय महत्व

हरा पानी : पानी का रंग हरा नहीं होता है, केवल हरे रंग की बोतल को तीन चौथाई भरकर ऊपर से कार्क या ढक्कन लगा दिया जाता है। इस पानी को ६ से ८ घण्टे किसी काठ की पटिया पर रखा जाता है। यदि हरे रंग की बोतल न मिले तो हरे रंग के सेलोफिन पेपर को बोतल के चारों ओर लपेट दिया जाता है। सूर्य की किरणों के प्रभाव से हरे रंग के रोग निवारक गुण इसमें आ जाते हैं। हरा पानी प्रतिदिन बनाना चाहिये। ठण्डा होने के बाद भोजन के आधा घण्टा पूर्व एक कप दोनों समय इसे पीना होता है। सबेरे इस पानी से आंखे धोने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं। उदर रोगों यथा कब्ज, बदहजमी, गैस, खट्टी डकारे आदि के लिए यह जल बेजोड़ होता है। बोतल को उठाकर काठ की पटियां और प्रकाश से दूर रखना होता है।

नारंगी पानी : ऊपर लिखित विधि से तैयार यह पानी भोजन करने के पन्द्रह मिनट बाद पीना होता है। इसके सेवन करने से भोजन शीघ्र पचता है। अपच, अफारा आंव आदि की शिकायतें दूर होती है।

काला पानी एवं रंग : हाथ, पैर, कान, अल्प मूत्र, कमर में दर्द, आंतों में कीड़े, उच्च रक्तचाप में लाभकारी होता है।

नीला रंग : यह शीतल रंग होता है। सिर दर्द, गर्मी, लू आदि में अत्यन्त प्रभावशाली है।

पीला रंग : उल्टी, दस्त, बहुमूत्रता में गुणकारी है।

लाल रंग : यह ऊष्ण होता है। गले में खरास, त्वचा रोग, सर्दी, छाती में भारीपन आदि में गुणकारी है।

भूरा रंग : यह अपच, अजीर्ण, चक्कर, खूनीदस्त आदि को ठीक करता है।

जिज्ञासा को जीवित रखिये,
यदा-कदा अपने आपसे यह भी पूछिये कि मैं कौन हूँ?
मेरे जीने का ध्येय क्या हैं?
''आत्म सुख या स्वान्त सुख''

रंग चिकित्सा

चिकित्सकीय महत्व

अन्य उपचार

१. अच्छे परिणाम के लिए टेसू का फूल, हल्दी, मेहंदी, केशर आदि के रंगों का प्रयोग शीघ्र प्रभावी होता है।

२. रोग का सही लक्षण जानकर ही उपचार करें।

३. रंग रोग की तीव्रता एवं आयु के अनुसार प्रयोग करें।

४. स्नान करने के आधा घण्टा पूर्व एवं बाद यह उपचार वर्जित है।

५. घावों एवं आपरेशन के निशानों पर उपचार नहीं करना चाहिये।

६. महिलाओं के मासिक स्राव के समय भी यह वर्जित है।

रंग चिकित्सा शरीर के अवयवों के रंगों के अनुसार की जाती है। प्रत्येक अंग की ऊर्जा का अपना एक रंग होता है। विशेष रंग उस अंग की ऊर्जा में वृद्धि करता है। अवयवों के रंग इस प्रकार है:

फेफड़े एवं बड़ी आंत सफेद, किडनी मूत्राशय काला, लीवर एवं पित्ताशय हरा, हृदय एवं छोटी आंत लाल, तथा तिल्ली व अमाशय पीला।

धन का दान करना अच्छा है
परन्तु पवित्र दानशील आत्मा बनना
और भी अधिक अच्छा है।
अपनी शक्तियों व गुणों का प्रयोग
दूसरों की उन्नति हेतु कीजिये
आपका मन सुख-शान्ति महसूस करेगा।

BHAGWATI®
Butter
Gold
PURE BUTTER BISCUITS
FAMILY PACK